पद भाग क्र.७

१७ :– सत की मेहेमा को अंग
१८ :– माया का बारला पर्चा विषयी अंग
१९ :– महाराज को पराक्रम को अंग
२० :– गुरा का बधावणा करनेको अंग
२१ :– संता की महिमा को अंग
२२ :– संत परीक्षा को अंग
२३ :– नांव की महिमा को अंग
२४ :– भक्ति मे बाधा देनेवाला को अंग
२५ :– जरणा को अंग
२६ :– मन जीता का लक्षण को अंग
२७ :– ब्रम्हज्ञानी की परीक्षा को अंग
२८ :– धिंन धिंनता को अंग

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

१७

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बांदा ओ भेद या नही पायो ५२	१
२	दिया म्हे हेला सुणो सकळ ११३	४
३	ग्यानी सब ही सांभळो रे १३८	५
४	सत्त की बात न मेलो ३८०	८

१८

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बांदा जुक्त मुक्त परचा सो माया ४०	१२
२	बांदा केवल को घर न्यारो ४३	१४
३	भाई भेदी हुवे सोई जाणे ७८	१६
४	सुण ग्यानी बचन हमारा ३८२	१७

१९

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	बांदा मोमे ओ गुण आयो ४७	१९
२	बांदा ओ नर मोहे न जाणे जी ५५	२०
३	बांदा ओर सकळ पिस्तासी ५७	२२
३	पांडे मै च्यार बरण सुं न्यारा २६३	२५

२०

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	गुरू महिमा यूं किजे हो १३३	२६
२	म्हारे पावणा परम गुरु आज २४१	२८

२१

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	धिन्न गुरु ग्यान जो साध ईण जुग मे १०८	२९
२	दोय बिधि संत पिछाणे रे ११४	३०
३	गलथान मता कब आवेगा १२४	३०
४	जन सा ठग न कोई हो १६६	३२
५	समझ समझ हंसा सनमुख रेणा ३२५	३७
६	सुर जाणे लो सुर जाणे लो ३९४	३८
७	उन सुरत की बलिहारी हो ४०९	३९
८	वारी वारी आया हे हंसाँ काज ४१८	४०

२२

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	हरिजन क्हो किम जाणिये हो १५०	४०
२	हरिजन सो इम जाणिये हो १४६	४१
३	समरथ साहेब नित भजो अे हेली ३२८	४२

२३

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अेक घडी आधी घडी ११९	४३
२	कहे गीता हो सुण बेद च्यार १९०	४५
३	मन भजिये हो नित राम नाम २१८	४६
४	तो भी नही हो इण नांव सम ३९९	४७

२४

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	हांती हे झुटो हे झुटो १५२	४८
२	जुग बडाई छाड १८२	४९
३	किस बिध मिलीये हो राम सूं २०३	५०
४	माधोजी भक्त कोण बिध धारुं २११	५१
५	नाव न केवळ कोय २५०	५२

२५

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	साधो भाई मै तो शीश ऊकरडी कीया ३१४	५३

२६

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	अेसे क्हे जुग दाय न आवे २०	५४
२	वे जन जीता तां कूं मारी ४१३	५५
३	या पारख बिन भ्रम न तुटो ४२४	५६

२७

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.

२८

अ.नं.	पदाचे नांव	पान नं.
१	धिन धिन हो धिन राम नाम १०२	५८
२	धिन धिन सो नर नारी जुग मे १०५	५९
३	धिन सोई हो धिन सोई १०६	६०

४	धिन धिन सो नर जाणी ये हो १०७	६१
५	साधो भाई धिन जिण चोळा किया ३१२	६२

५२

|| पदराग आसा ||

बांदा ओ भेद यां नही पायो

बांदा ओ भेद यां नही पायो ||

ब्रम्हा बिस्न महेसर सक्ती || नही अवतारा रे आयो || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते कि,अरे बांदा,आनंदब्रम्ह पहुँचने का भेद ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति तथा अवतारो ने ही पाया नहीं तो इनके मायावी ज्ञान के सत्ता से कहलाये हुए सतगुरु के पास यह भेद कैसा होगा?||टेर||

सतगुरू बिना कळा ज्यां जागी || से जन अेसा भाई ||

अनंत जीव ले उधरे जग मे || आड पटक नही काई || १ ||

ऐसे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति के भेद बतानेवाले सतगुरु के सत्ता बिना जिस सतगुरु में आनंदब्रम्ह की कुद्रतकला जागृत हुई ऐसे सतगुरु अनंत जीवोंका होनकाल के जगत से उध्दार करते। जब की ऐसे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव और शक्ति के सत्ता के अधिकारी सतगुरु एक भी जीव का उध्दार नहीं कर सकते। ऐसे आनंदब्रम्ह के सत्ताधारी पारब्रम्ह,इच्छामाया तथा इन दोनो से उपजे हुए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तथा शक्ति ये कोई भी आडपटक याने रोडे नहीं खडे करते। ||१||

अणंद ब्रम्ह की छायाँ कहिये || ज्यां आ सता कहावे ||

हे अनाद आद सुंई आगे || अटळ कोई जन पावे || २ ||

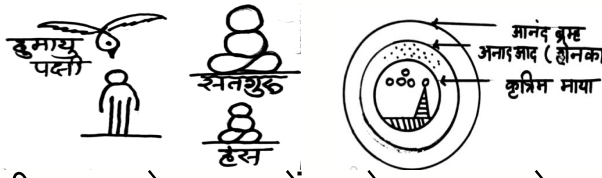

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जैसे हुमायु पक्षी के छाया में जीव आते ही रंक का राजा हो जाता वैसेही आनंदब्रम्ह की सत्ता के छाया में याने सतगुरु के शरण में आते ही हंस का होनकाल से उध्दार हो जाता। यह महासुख का पद अनाद आद याने होनकाल पारब्रम्ह के भी आगे है ऐसा अटलपद कोई बिरला संत ही पाता। ||२||

सुण चोवीस तिथंकर आया || ज्याँ रे गुरू कुण होई ||

ज्यां संग अनंत मिल्या केवळ मे || कसर रही नही कोई || ३ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है की,२४ तिर्थंकरो का ब्रम्हा,विष्णू, महादेव,शक्ति इनके मायावी सत्ता प्रगट किया हुआ ऐसा कोई भी सतगुरु नहीं था। इन तिर्थंकरो में प्रगट हुयेवे सत्ता के आधार से अनंत जीव होनकाल के दु:ख से निकलकर सदा के लिए केवल के महासुख में मिल गए जिनके मिलने में जरासी भी कसर नहीं रही। ||३||

हूणकाळ लग सबे ऊपायाँ || गुरू सिष चलीया आवे ||

करणी करे जिसा फळ जग मे || हंस इधक किम पावे || ४ ||

ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति इनके सत्ता के गुरु करके शिष्य बनना ऐसे गुरु शिष्य बनने के सभी उपाय यह होनकाल तक के पहुँच के ही है। जैसे मायावी सतगुरु के पास करणी रहेगी वैसे हंस होनकाल में माया का फल पाएँगा। ऐसे सतगुरु के शरण में आए हुए हंस को काल के आगे का महासुखोंका फल कभी नहीं मिलेगा। ।।४।।

सब ही ग्यान बिध्या सब साची ।। होणकाळ लग भाई ।।
मोख मिले ज्याँ सता प्रगटी ।। और उपायन काई ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है की,होनकाल तक पहुँचानेवाले सभी ज्ञान तथा विधियाँ असत्य नहीं है,सत्य है परंतु होनकाल के आगे का परममोक्ष पाने के लिए आनंदब्रम्ह के सत्तासिवा सभी मायावी सतगुरु के उपाय झूठे है ।।५।।

ओर बस्ताँ का बीज जक्त मे ।। कर ऊपाय जगावे ।।
मिण के बीज नही पारस के ।। ना कीया बण आवे ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है की,जगत में अनेक वस्तु है तथा वे वस्तुए खतम होने के बाद भी उन वस्तु के बीज जगत में रहते है परंतु जगत में चिंतामणी तथा पारस का बीज,चिंतामणी तथा पारस मिट जाने के बाद रहता नहीं। किसीने कृत्रिम रितसे बनाने की कोशिश की तो भी चिंतामणी या पारस बनता नहीं। इसीप्रकार मायावी गुरु जगत से शरीर छोड्ने के बाद उनकी रिध्दी सिध्दी की विधी प्रगट करने के अनेक उपाय रहते परंतु कुद्रतकला के सतगुरु इस जगत से निर्वाण होने के बाद वह कुद्रतकला प्रगट करने का जगत में कोई उपाय नहीं रहता ।।६।।

म्हेमा करी बतायो सब ने ।। सिंभु बचन मे भाई ।।
आ ज्हाँ ज्हाँ सत्ता प्रगटी ।। ज्हाँ क्रणी रहे न काई ।।७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है कि,शंकर ने आनंदब्रम्ह के सत्ताधारी सतगुरु की भारी महीमा की तथा सत्तज्ञान के न्याय से जगत को समझा के बताया की आनंदब्रम्ह के महासत्ता के परचे संत में प्रगट हो जाने के पश्चात ऐसे संतो में काल के मुख में रहनेवाले माया ब्रम्ह के रिध्दी सिध्दीयों के परचे चमत्कारोको प्रगट होने के लिए कहाँ जगह रहेगी?।७।।

आ पारख कर देखो जग मे ।। जिण आ कुद्रत पाई ।।
आप रहया ज्हाँ लग हंस तीरिया ।। पाछे अेक न भाई ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को तथा जगत के ज्ञानी,ध्यानीयो को कह रहे की,तुम ही यह पारखकर देखो की जबतक कुद्रतकला पाए हुए संत जगत में रहे तबतक ही भवसागर के महादु:खो से हंस तीरे ऐसे संत के मोक्ष जाने के पश्चात एक भी हंस नहीं तीरा। ।।८।।

और ग्यान म्हे लारे सुणियो ।। बीज सकळ मे रेहे ।।

करणी करर फेर जगावे ।। सिध कळा कोई लेहे ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा को कहते है की,त्रिगुणीमाया के सतगुरु धाम पधारने के पश्चात जो सिध्दकला,धाम पधारे हुए सिध्द सतगुरु के पास थी वही सिध्दकला उन संतोने जैसे मायावी करणियोंकी साधना की वही क्रिया करणियोंकी साधना साधनेपर उतने ही कला की सिध्दाई नए सिध्द संत में प्रगट हो जाती याने ही सिध्दधाम जाने के बाद भी सिध्द का बीज जगत में रहता ऐसा मैंने ज्ञानियोंके मुख से ज्ञान में सुना। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते है की,जैसे सिध्द के धाम जाने पश्चात भी साधकोंमें सिध्दकला प्रगट हो जाती वैसे आनंदब्रम्ह के सत्ताधारी संत अमरधाम जाने के पश्चात पिछेवाले हंसो ने कितनी भी कोशिश की तो भी एक भी जीव में कुद्रतकला की सत्ता प्रगट नहीं होती। ।।९।।

इण तो सता माँय गुण ओई ।। ज्यूं पारस मे होई ।।
मिलीया लोहो कनक सब होवे ।। आगे व्हे न कोई ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते है की,जैसे पारस का लोहे को मिलने से लोहे का सोना हो जाता और आगे वह पारस मिट जाने पर लोहे का सोना नहीं हो सकता। इसीप्रकार का जो गुण पारस में रहता वैसा ही गुण कुद्रतकला के सत्ताधारी संत में रहता। ऐसे कुद्रतकला के सतगुरु धाम पधारने पर आगे एक भी आनंदपद का संत नहीं उपजता ।।१०।।

राज जोग कहीये ओ जग मे ।। और केण सब होई ।।
माडाँ उलट चड़े गढ ऊपर ।। अटक्यो रे नही कोई ।।११।।

ऐसे आनंदब्रम्ह में पहुँचानेवाले कुद्रत को राजयोग कहते है। इस कुद्रत को छोड के अन्य सभी योगो को राजयोग कहा तो भी वे कहने के राजयोग है ऐसे कहने के राजयोग से होनकाल से मुक्त करनेवाली आनंदब्रम्ह की सत्ता प्रगट नहीं होती। असली राजयोग प्रगट होने पर हंस का घट ३ लोक १४ भवन बनता और हंस राजयोग के वश में होकर दसवेद्वार में न जाने की मन और ५आत्मा के चाहना को न जुमानते हुए बंकनाल के रास्ते से मन को उसके बिना चाहत से,जबरदस्ती से उलटाकर हंस त्रिगुटी गढ पर चढ जाता। यह हंस आज दिनतक मन और ५ आत्मा के वश रहकर आनंदब्रम्ह जाने में अटक रहा था,वही हंस राजयोग की सत्ता प्रगट होने पर इन्हीं मन और ५ आत्मा से अटकाए नहीं जाता ।।११।।

तत्त चीन कर थिर नर हूवा ।। राज जोग ओ नाई ।।
आंतो नकल असल वो कहीये ।। उलट अगम घर जाई ।।१२।।

कुछ ब्रम्हज्ञानी होनकाल पारब्रम्ह के तत्त की सत्ता प्रगट करके गर्भ में आने के चक्कर से कुछ समय के लिए छुटकर स्थिर हो जाते और ऐसे ब्रम्हज्ञानी खुद में राजयोग प्राप्त हुआ

ऐसा समझते। जैसे आनंदब्रम्ह के राजयोग में हंस सदा के लिए गर्भ में आने से मुक्त होकर स्थिर हो जाता वैसेही पारब्रम्ह तत्त पानेवाले भी कुछ समय के लिए स्थिर होते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा और ज्ञानियों को कहते की,ये पारब्रम्ह के संत पारब्रम्ह के परे उलटकर अगम घर कभी नहीं जाते इसलिये पारब्रम्ह तत्त चिनकर स्थिर होनेवाला योग यह अस्सल राजयोग नहीं है यह योग अस्सल राजयोग की नक्कल है। ।।१२।।

के सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। इण बिध समझो आई ।।
जप तप ग्यान बताई कूंच्याँ ।। ज्याँ हां आ सता न पाई ।।१३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानियों को कहते है कि,सभी ज्ञानी,ध्यानियों अस्सल राजयोग और नक्कल राजयोग का फरक अगमघर जाने के विधी से समजो। जो राजयोग अगम घर पहुँचाता वही अस्सल राजयोग है तथा जो राजयोग अगम घर नहीं पहुँचाता वह नक्कल राजयोग है ऐसा समजना। जिस सतगुरु ने अस्सल राजयोग की तो सत्ता छोड दो नक्कल राजयोग भी नहीं पाया है ऐसे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति के सत्ता के सतगुरु जप,तप,वेद की करणियाँ तथा योगाभ्यास के कुंची का ज्ञान बताते है। अगर इन सतगुरु के पास महासुख के आनंदब्रम्ह की सत्ता रहती थी तो जगत को ये सतगुरु जप, तप,भृगुटी का योग या रिध्दी-सिध्दी प्रगट करनेवाली मायावी विधियाँ क्यों बताते थे? इसका सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा बांदा तू सत्तज्ञान के विधी से निर्णय करके समज।।१३।।

११३

।। पदराग मिश्रित ।।

दिया म्हे हेला सुणो सकळ
दिया म्हे हेला ।।
सुणो सकळ नर नार ।। दिया म्हे हेला ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मैं हाँक लगा रहा हूँ उसे सभी स्त्री-पुरुष सुनो। ।। टेर ।।

सूरा तन जब प्रगटे रे ।। सिंधू दिरावे कोय ।।
युं जन गढ चड बोलीयारे ।। नांव ऊदे घट होय ।। १ ।।

जैसे(सिंधू राग सुनने से)शूरत्व उत्पन्न होता है,वैसे ही जो संत,गढ़पर चढ़कर बोलते है, उनके दिए गये ज्ञान से शिष्य में शुरत्व उत्पन्न होकर शिष्य के घट में नाम का उदय होता है। ।।१।।

पीव आज अब बीछडे रे ।। जा सत्त आवे जाण ।।
जुग आड़ा दिन ब्हो पड़्याँ रे ।। ज्यां मुख सरम न काण ।। २ ।।

जैसे सती स्त्री का पती,जब मरता है तभी उसमें(सती में)सत्त आता है और जिसके पती के मरने के बाद संसार में आडे दिन बहुत हो गये उस स्त्री के मुँख पर शर्म या काण(मान मर्यादा)भी नहीं रहती है(वैसे ही,सतगुरु के मिलते ही शिष्य में नाम प्रगट नहीं हुआ और

बीच में दिन व्यतीत हो गये फिर उस शिष्य में,गुरु की शर्म या गुरु की मर्यादा भी नहीं रहती है।)।।२।।

जिनका सतगुरू सूरवाँ रे ।। ऊलट चड्या असमान ।।
वां सिष के तन जागसी ।। बंदा नांव कळा घट आण ।। ३ ।।

जिसके सतगुरु शूरवीर है और जिसके सतगुरु उलट कर,आसमान(ब्रम्हांड में)चढ़ गये है उनके ही शिष्य के शरीर में,नाम की कला जागृत होगी(जिसके गुरु में नाम कला प्रगट हुई नही,उनके शिष्य में भी नाम की कला कहाँ से जागेगी?जो वस्तु गुरु के पास नहीं है,वह शिष्य को,कहाँ से मिलेगी?)।। ३ ।।

संत गिगन चड़ बोलीया रे ।। वे तो गया हे सीधाय ।।
पीव मुवाँ दिन बोहो हुवा ।। बंदा सत्त आवे किम माय ।। ४ ।।

और जो संत गगन पर,चढ़कर बोले थे,वे संत तो मोक्ष में चले गये,(अब बाद मे,स्त्री के)पती को,मरे हुए बहुत दिन हो गये,(अब बाद में उस स्त्री में),सत्त कैसे आयेगा?(ऐसे ही पहुँचे हुए संत थे वे मोक्ष में चले गये,उनके पीछे बाद में,उनके पंथ के शिष्योंमें, यह नाम जागृत नहीं होगा।)।। ४ ।।

के सुखदेव ओ भेद हे रे ।। जे समझे नर कोय ।।
नांव तबे घट प्रगटे रे ।। वे जन सदेह होय ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी कहते है कि,इसका भेद यह है,जो कोई मनुष्य समझते होंगे,तो शिष्य के घट में नाम तो तभी प्रगट होगा,जब(वे पहुँचे हुए)जन(संत) यहाँ सदेह(देह के साथ)मौजूद है (तभी तक,शिष्य में नाम प्रगट होगा,उस संत के मोक्ष में चले जानेपर यह नाम प्रगट नहीं होगा। जैसे पारस जब तक मौजूद था,तब तक उस पारस से स्पर्श होनेवाले लोहे का,सोना हो गया पारस के नहीं रहने पर उस पारस के स्पर्श से बने हुए सोने से फिर बाद मे लोहे से सोना नहीं होता है। जैसे जिस स्त्री का पती मरा,उसी दिन उसकी पत्नी सती हो गई तो हो गयी बाद में नहीं होती है वैसे ही जो पहुँचे हुए संत है उनके हयात में ही कोई उनका शिष्य बनकर मिला,तो उसका उद्धार होगा बाद में नहीं होता। इसके बारे मे अगाध बोध ग्रन्थ में आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने स्पष्टीकरण किया है। ।। ५ ।।

१३८

।। पदराग धनाश्री ।।

ग्यानी सब ही सांभळो रे
ग्यानी सब ही सांभळो रे ।। दिया म्हे हेला आय ।।
याँकी कळ किमत नही रे काय ।।टेर।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जगत के सभी ज्ञानियों सुनो,मैं तुम्हे जो जोर देके कहना चाहता हुँ वह समझो। शुर पुरुष में शुरवीरता,सती स्त्री में सत तथा जन

में सतशब्द प्रगट होने की कला याने हिकमत माया की क्रिया करणियों में नहीं है। ।।टेर।।

सूराँ के सिर गुरू नही रे ।। नही सतीयाँ के होय ।।
यांका तो सतगुरू सत्त ही रे ।। दूजो गुरू नही कोय ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,शुरवीर के तथा सती के शिर पर जैसे जगत के बेद,भेद,लबेद आदि ज्ञानियों के शिष्य पर क्रिया करणी के गुरु रहते वैसे क्रिया करणी के बाहर के गुरु नहीं रहते। इनके सतगुरु इनके हंस के घट में ही सत के रुप में रहते। ।।१।।

ओर सकळ जहान मेरे ।। कह्याँ करे सब काम ।।
युं क्रणी कर राम ने ।। प्रसे नही निजधाम ।। २ ।।

जैसे संसार के लोग करणी क्रिया सिखाने पर सिख जाते और उन करणियोंके गुण उन साधकों में प्रगट हो जाते वैसे सती स्त्री में और वीर पुरुष में करणियाँ सिखाने पर सत नहीं प्रगट होता। जैसे करणियाँ सिखाने पर सती स्त्री और वीरपुरुष में सत प्रगट नहीं होता ठिक उसीप्रकार संत में सतशब्द याने राम करणियाँ करने से प्रगट नहीं होता। इसकारण संत करणी करने से निजधाम याने महासुख का धाम प्राप्त नहीं कर सकता। ।।२।।

सूर फिरे बाजार मे रे ।। सतीयाँ घराँ मे होय ।।
मोसर बिध बिन बाहेरो रे ।। यां ने सत्त नहि प्रगटे कोय ।।३।।

शुरवीर पुरुष तथा सती स्त्री सत प्रगट होने की विधी पाने के पहले संसार के अन्य पुरुष तथा स्त्री के समान ही जगत में रहते। सत प्रगट होने के पहले शुरवीर पुरुष बाजार में अन्य पुरुषोंके समान ही कामधंदे करता तथा सती स्त्री अन्य स्त्रियों के समान ही घर के कामकाज में रहती। इस शुरवीर पुरुष तथा सती स्त्री में सत प्रगट होने का समय तथा विधि आने पर ही सत प्रगट होता। जबतक सत प्रगट होने का समय नहीं आता तब तक सती स्त्री तथा शुरवीर में सत प्रगट नहीं होता। ।।३।।

सतगुरू राजा सुर्वा रे ।। लेण मुलक चड जाय ।।
सतसब्द जब प्रगटे रे ।। सूरां सिखा मे आय ।।४।।

शुरवीर राजा परमुलक लेने के लिये चढाई करता तब लढाई मैदान में सिंधुराग गाये जाता। यह सिंधुराग सुनके शुरवीर में विरता जागृत होती और वह शुरवीर सत के बल से अपनी खुद की गर्दन कट जाने पर भी शत्रुपक्ष के वीरो को तलवार से मार मारकर नष्ट कर देता और परी के साथ स्वर्ग लोक जाता। ऐसे ही सती स्त्री में उसके पती का वियोग होता तब उस स्त्री में सत प्रगट होता और वह सती स्त्री पती के साथ अग्नीडाग लेती और सतवाड के लोक जाती। इसीप्रकार सतस्वरुप सतगुरु शिष्य को बंकनाल से ब्रम्हंड के गढ पर चढने का ज्ञान सुनाते तब शिष्य के घट में सतशब्द उदय होता और शिष्य २१ स्वर्ग के रास्ते से ब्रम्हंड के गढ पर दसवेद्वार में पहुँचता। ।।४।।

सूरा तन जब प्रगटे रे ।। सिंधु दिरावे कोय ।।
यूं जन गढ चढ बोलसी रे ।। नाँव ऊदे घट होय ।।५।।

शूरवीर में से यदी कोई(सिंधु राग)वीर रस गायेगा,तभी शूरवीर में शूरवीरपन प्रगट हो जाता है। इसी तरह से संत गढ के उपर चढकर बोले तभी उनके शिष्य के ,घट में नाम प्रगट होगा।(जिसके गुरु,गढपर चढे नहीं उस गुरु से,उसके शिष्य में नाम प्रगट होगा नहीं। इधर तो शब्द चढा हुआ पूरा गुरु चाहिए। दोनो का योग मिलेगा,तभी शिष्य में नाम प्रगट होगा।)। ।।५।।

पीव आज अब बीछडे रे ।। जब सत आवे जाण ।।
आडा दिन जुग बोहो पड़े रे ।। ज्यां मुख सरम न काण ।।६।।

सती स्त्री का पती जब बिछड्ता तब उस स्त्री में सती होने का सत प्रगट हो जाता और सती स्त्री पती के साथ जलकर विष्णु के लोक के आगे के सतवाड के लोक जाती। पती का शरीर छुटता तब उस स्त्री को उसका शरीर पती के शरीर के साथ छुटा नहीं इसका उसे धिक्कार लगता और संसार में बिना पती के रहने की शरम लगती। इस शरम विधी से उस स्त्री में पती के साथ जलने का सत प्रगट हो जाता और वह पती के साथ जल जाती। यदी पती बिछड्ने पर सती स्त्री सत आने पर पती के साथ नहीं जलती और पती के मरने को अनेक दिन होने पर फिर सती होना चाहती तो वह स्त्री सती नहीं हो पाती। सती न होते आने का कारण पती का शरीर छुट गया और मेरा शरीर उनके साथ नही छुटा यह जो सत प्रगट करानेवाली मुख की शरम की कला दिन ब दिन,दिन महीनें वर्ष बितने पर खतम हो जाती। इसीप्रकार मुलक पर चढाई करते वक्त शुरवीर सिंधुराग सुनता जिससे उस शुरवीर में शुरवीरता प्रगटती परंतु वह शुरवीर लढता नहीं इसकारण उस शुरवीर में गर्दन काटने के बाद राजा के लिए बैरियों को मारने की शुरवीरता आती नहीं। यह शुरवीर लढाई खतम होने के पश्चात कुछ दिन से या महीनो से वह गर्दन कटने के बाद मारने की शुरविरता लाना चाहेगा तो भी उस शुरवीर में वह शुरवीरता आएगी नहीं। इसीप्रकार सतगुरु शिष्य के निजमन को बंकनाल के रास्ते से ब्रम्हंड के गढ चढने का चटका लगेगा ऐसा तेज ज्ञान सुनाते और ज्ञान सुनने पर इस शिष्य के निजमन को चढने की चाहना भी हो जाती परंतु वह शिष्य चटका लगने पर भी चढने की विधी धारण करता नहीं। कुछ समय से ज्ञान सुनानेवाले सतगुरु चले जाते और सतगुरु जाने के पश्चात कुछ महीनो,वर्षो के समय के बाद वही शिष्य ब्रम्हंड में चढना चाहता परंतु वह शिष्य चढना चाहने पर भी चढ नहीं सकता। उस शिष्य का निजमन रामजी के ओर जानेवाले रास्ते से हट गया रहता और त्रिगुणी माया में लग गया रहता इसकारण ब्रम्हंड में चढ नहीं पाता। ।।६।।

के सुखदेव जब भूपही रे ।। मुलक न लेवे कोय ।।

तो कांहे कूं जूँझसी रे ।। मुंवाँ बिन सत्ति यन होय ।।७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानियोंको कहते है,जब राजा ही परमुलक लेने नहीं जायेगा तो शुरवीर लढेगा ही नहीं और परी के साथ स्वर्ग के लोक जायेगा ही नहीं तथा सती स्त्री का पती मरेगा ही नहीं तो सती स्त्री पती के साथ जलकर सतवाड के लोक जायेगी ही नहीं इसीप्रकार शिष्य को सतगुरु मिले ही नहीं तो शिष्य के घट में सत प्रगट होकर शिष्य रामजी के महासुख के निजधाम जाएगा ही नहीं परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानीयो को जोर दे देके रामजी के निजधाम चलने की विधि बता रहे है,अगर आज आप मेरे बताये हुए विधि के अनुसार नहीं चेतोगे और मेरे पश्चात आगे उस देश में जाना चाहोगे तो उस देश कभी नहीं जा पावोगे इसलिए आज मेरा ज्ञान समझो और विधि धारण करके उस महासुख के धाम चलो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी नर–नारी को कह रहे है। ।।७।।

३८०

।। पदराग केहरा ।।

सत्त की बात न मेलो हो साधो

सत्त की बात न मेलो हो साधो ।।

मेलो हो साधो ।। सत्त सब्द ले खेलो हो ।। टेर ।।

सत्त की बात को मेलो मत त्यागो मत। उस सत शब्द को लेकर खेलो। ।।टेर।।

सत्त सूं धरण आकास ज थंबिया ।। आकास ज थंबिया ।।

चंद सूर रवि तारा हो ।। साधा चदं सूर रवि तारा हो ।।

सत्त सूं देवळ चड गयो इंडो ।। चड गयो इंडो ।।

सत्त सूं दुस्मण मार्‍या हो ।। १ ।।

इस सतशब्द के आधार से धरती स्थिर हुई आकाश स्थिर हुआ,चाँद स्थिर हुआ,स्वर्ग स्थिर हुआ,सुर्य स्थिर हुआ,तारा स्थिर हुआ ये सभी अस्थिर थे अे सभी सत के आधार से स्थिर हुए। इस सत के योग से मंदीर के उपर कलश चढा और इस सत के योग से सावंत शुरविरोमें सत्त प्रगट होता और वे सांवंत शुरविर सत्त के बल से दुश्मनोंकी सारी फौज मार देते। ।।१।।

सत्त सूं पोळज मेहेरी खोली ।। मेहेरी खोली ।।

सत्त सूं फोज जीवाई हो ।। सत्त सूं शिस मंगायो काने ।।

पांडव गळ्या सब जाई हो ।। २ ।।

और इस सत्त के ही योग से चम्पापुर(बीड)में गाँव(कसुचे)दरवाजे सुभद्रा ने सत्त के योग से खोला और सत्त के ही योग से कैकई ने मरी हुयी फौज जिवीत की।(चम्पापुर में सुभद्रा नाम की स्त्री थी। वहाँ एक परमहंस साधू वन में रहनेवाला,भिक्षा के लिए आया। उस साधू की आँखोंमें कचरा पड जाने से आँखोंसे पानी बह रहा था और आँखे खुलती

नहीं थी,उस साधू पर सुभद्रा के दया आने से सुभद्रा ने उसकी आँखों का कचरा अपनी जीभ से निकाल दिया। साधू के आँखों में,जीभ घूमाते समय सुभद्रा के माथे का तिलक,साधू के मस्तक पर लग गया। पुन: साधू दूसरी बगलवाले घर पर भिक्षा माँगने गया। वह पडोसन साधू के मस्तक पर लगा तिलक देख कर बोली की,यह तिलक सुभद्रा के माथे का दिखता है,फिर वह पडोसन,सुभद्रा के घर के दूसरी तरफ की,पडोसन से पुछी की,साधू तुम्हारे घर भिक्षा माँगने आया था,तब उसकी ललाट पर टीका था क्या? दूसरी पडोसन बोली,उसके माथे पर टीका नही था। यह सुनकर उस औरत ने, साधू और सुभद्रा ने कुकर्म किया ऐसा सिद्ध कर दिया। उस योग से सारे शहर में,सुभद्रा की निन्दा होने लगी। इस सुभद्रा सती और साधू यती,इन दोनो की निंदा से,शहर प्रवेश के सभी दरवाजे(शहाराचे वेशीचे),अपने आप बंद हो गये। शहर के मनुष्य बाहर और बाहर के मनुष्योंका शहर में,आना-जाना बंद हो गया और यदी दरवाजे के पास,कोई जाये तो दरवाजे से अग्नि जैसी ज्वाला आने लगती। शहर के राजा ने व्यास से पूछा की,यह कौनसा पाप घट गया। अब इस शहर का प्रलय हो जायेगा। तो यह अब कौनसा पाप है वह मुझे बताओ?सारा शहर दुखीत हो रहा है व्यास बोला की,शहर में साधू और सती की निंदा हो रही है इसी पाप से दरवाजे बंद हुए है,तो शहर में कौन सती स्त्री है,उसकी (खबर)करनी चाहिए और उस सती से गुनाह माफ कराओ राजा ने सारे शहर में ढिढोंरा पिटवा दिया कि,कोई दरवाजे खुलवा देनेवाली सती हो,तो वह सती दरवाजें खुलवा देवे। सुभद्रा अपनी सास से बोली की,तम्हारी आज्ञा होगी तो मैं दरवाजा खोल देती,तब सास बोली रांड,चुपचाप रह। कल तो तुने साधू के साथ कुकर्म किया और आज सती बनने जा रही है। यह बात राजा के हेरो ने सुन ली और राजा को जाकर बताया कि,एक स्त्री दरवाजें खोल देती हूँ बोली,लेकिन उसकी सास खोलने नहीं देती। तब राजा स्वयं वहाँ आया और दरवाजा खोल देने को बोला,सुभद्रा बोली,मैं सुत की कांडी से चालनी लगा कर इस कच्चें सुत से चालनी बाँधकर,कुएँ से पानी निकालती हूँ मैं चालनी से पानी निकाल ली,तो समझो की,मैं दरवाजा खोल दूँगी,फिर सुभद्रा ने चालनी में कच्चे सुत का धागा बाँधकर,कुएँ से पानी निकाला और वह पानी की चालनी लेकर घर से बाहर निकली,उसके पीछे गाँव के लोक,तमाशा देखने के लिए थे। सुभद्रा दरवाजें के पास जाकर उस पानी में चुल्ली भरकर दरवाजें पर मारी दरवाजे पर पानी लगते ही तुरंत दरवाजा खुल गया। वहाँ से दूसरे दरवाजें पर गयी उसे भी चुल्ली के पानी से मारकर खोल दी,इसप्रकार से शहर के छ: दरवाजे,सुभद्रा ने खोल दिए। राजा,सुभद्रा से बोला की,शहर में एक और दरवाजा खोलने का बाकी रह गया है सुभद्रा बोली की,वह भी दरवाजा यदी मैंने खोल दिया,तो सभी औरते कहने लगेगी की,मैं भी यह दरवाजा खोल देती, मैं भी खोल देती ऐसा सभी औरते कहेंगी, तो यह दरवाजा इसलिए छोड दी की,इस

शहर में या तुम्हारे मुल्क(देश)में और भी कोई दरवाजा खोलनेवाली स्त्री है क्या?यही देखने के लिए दरवाजा न खोलकर,जैसे का वैसेही रखूँगी क्योंकी दरवाजा खोलनेवाली, दूसरी कोई और भी स्त्री है क्या?और एक दिन,दशरथ राजा,देवासुर संग्राम में, देवताओंकी मदद करने में,राक्षसोंसे लडने के लिए गया साथ में कैकई राणी भी थी। वहाँ दशरथ राजा की,सारी फौज मर गयी,तब राजा उदास होकर बोला,की,मुझे अपयश होगा। मेरी लोक में और परलोक ये दोनो जगह,तिरस्कार की हँसी हो गई तब कैकई बोली,तुम युद्ध करो,मैं तुम्हारी फौज जिवीत करती हूँ और रथ के चक्के को मैं अपनी अंगुली की सहायता से,रोकती हूँ तब दशरथ राजा की विजय हुई,इसप्रकार से कैकई ने अपने सत्त के योग से,फौज जिवीत की और टूटा हुआ रथ चलवाया। इसीतरह से कृष्ण ने,ब्रभुवाहन के युद्ध में अर्जुन और वृषकेतू के मस्तक बकदालभ्य वन से,कृष्ण ने बुलवाया।(पांडवो का अश्वमेथ यज्ञ का घोडा ब्रभुवाहन के मनीपुर शहर का सेवक घोडे को पकडकर ले गये और सभा में ब्रभुवाहन के सामने खडा किया। तब उस घोडे के मस्तक पर,बांधा हुआ सुवर्णपत्र,खोलकर पढा,उसमें युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ का घोडा और उसका रक्षक अर्जुन है,यह पढकर ब्रभुवाहन ने अपने प्रधान सुमती को बताया,की,मेरी उत्पत्ती अर्जुन से है,मैं अर्जुन का पुत्र हूँ और ये सेवक,मेरे बाप का घोडा बिना विचार के ही पकड लाये,अब इसका क्या उपाय किया जाय,वह बोलो सुमती प्रधान बोला की,इसकी कोई चिंता मत करो,क्योंकि यह कार्य बिना सोचे समझे हुआ है,तब अब तुम अनेको रत्नो के साथ,घोडा अर्जुन के हवाले कर दो और जैसे अर्जुन घोडे की रक्षा करता है उसी तरह तुम भी रक्षा करने के लिए साथ में जाओ, तब तुम्हारा पिता अर्जुन,तुम्हारे उपर खुष होगा। यह सुमती प्रधान की बात सुनकर,ब्रभुवाहन ने अपनी सेना और यज्ञ का घोडा आगे करके अर्जुन के पास गया और हाथ जोडकर बोला,तात, मैं तुम्हारा पुत्र हूँ और चित्रंगदा मेरी माता है और मेरा नाम ब्रभुवाहन है तो तुम्हारे संबंध को न जानते हुए मेरे सैनिको ने,तुम्हारा घोडा पकडकर लाये। तो यह घोडा,तुम्हारा,तुम्हें समर्पित है। यह घोडा लो और यह मेरा राज्य स्वीकार करके प्रजा पालन करो। यह सुन कर,सभी प्रद्युम्नादी वीर अर्जुन से बोले,की,यह ब्रभुवाहन राजा,तुम्हें प्रणाम करता है,तो इस हितकारी पुत्र के गले मिलो। अर्जुन ने प्रद्युम्न की बात सुनकर,ब्रभुवाहन के मस्तक पर,जोर से लाथ मारी और बोला,तेरी माँ गंधर्व राजा की पुत्री घर-घर नाचने वाली है। अरे डरपोक,मेरा पुत्र ऐसा भयभीत कभी भी होनेवाला नहीं। तेरी माँ चित्रंगदा वेश्या से,तेरी उत्पत्ती हुई है। तो तूँ मेरे वीर्य से उत्पन्न हुआ है ऐसा दिखाकर बखाण करता है और मुझे लज्जित करता है और तूँ किसके बल से घोडा ले गया?और अब मेरे बाण के लगे बिना ही,घोडा लाकर दे रहा है। मेरा पुत्र अभिमन्यू था। उसने द्रोण के जैसे,सात महारथियों को,सात बार परास्त करके,चक्रव्यूह भेदन करके युद्धिष्ठिर की रक्षा की। तो तू मेरे बाण के बिना ही व्याकुल

कैसे हो गया। उसके साथ-साथ तूँ भी नाच। इसप्रकार से,अर्जुन का कहना सुनकर, ब्रभुवाहन को क्रोध आया,उसने उपहार के लिए लायी गई सभी सामग्री और घोडा अपने नगर में भेज दिया और युद्ध करने के इिश अपने रथ पर चढ गया और अर्जुन से बोला, की,अब मुझसे युद्ध करो। अब मैं तुम्हारा वध करे बिना नही रहूँगा। ब्रभुवाहन ने अर्जुन के पक्ष के प्रद्युम्न आदी को एक-एक बाण में मुर्छित कर के पृथ्वी पर डाल दिया। उसके बाद वृषकेतु, नीलध्वज और यौगनाश्व और उसका पुत्र हंसध्वज इनको भी मुर्छित कर दिया। इसके अलावा अनेक वीरोंको,छिन्न-भिन्न करके भगा दिया और अर्जुन के सभी हाथी और दास-दासी पकडकर,सभी अपने मणीपुर शहर में भेज दिया और पीछे बचे हुए हंसध्वज के पुत्र को भी मार दिया। सबसे पिछे सिर्फ अर्जुन और वृषकेतू रह गये परंतु इन्होंने(मरे हुए वीरो को),(उळपीने)औषधी के बल पर जिवीत रखा। वृषकेतु से अर्जुन बोला,की,तूँ मेरे साथ रह जायेगा,तो तेरे भी प्राण जायेंगे। इसलिए तू हस्तीनापूर जाकर भीम को मेरे मरने की बात बता। वृषकेतु बोला,मैं तुम्हें छोडकर,मृत्यु के भय से कभी भी जानेवाला नहीं। ब्रभुवाहन ने,वृषकेतु का मस्तक काट कर,अर्जुन के पैरो में डाल दिया। अर्जुन मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। तब ब्रभुवाहन ने,अर्जुन को,धनुष से मार कर उठाया और अर्जुन का और ब्रभुवाहन का युद्ध हुआ। उसमें ब्रभुवाहन ने अर्द्धचन्द्राकार बाण से,अर्जुन का सिर काट डाला। अर्जुन को मृत देखकर,चित्रंगदा(ब्रभुवाहन की माँ) विलाप करने लगी,यह माँ की दशा देखकर,ब्रभुवाहन आत्मघात करने लगा। तब उलुपी (उलुपी यह शेष नाग की पुत्री और ब्रभुवाहन की सौतेली माँ थी),यह उलुपी बोली,की, मेरा बाप शेषनाग पाताल का राजा है। उसके पास अमृत है,वह अमृत यहाँ लाया जाय,तो ये जीवित होंगे ब्रभुवाहन बोला,की,मैं शेषनाग से अमृत बुलवाँ लेता,यदी शेषनाग ने अमृत खुशी से नहीं दिया,तो उसेसे युद्ध करके,मैं अमृत ले आऊँगा। ब्रभुवाहन ने शेषनाग को पत्र लिखा की,नानाजी,तुम्हारा जवाई अर्जुन,मेरे हाथो से मारा गया,तो नानाजी,तुम्हारे यहाँ से अमृत जल्दी भेज दो। अमृत भेजते नहीं हो,तो लडाई के लिए,तैयार हो जाओ। वह पत्र बाण में बाँधकर,वह बाण पाताल में चलाया। पत्र लेकर आया हुआ बर्ची शेषनाग की सभा में गिरा। शेषनाग ने बाण किसका आया है,यह देखने के इिश अपने दुष्ट बुद्धि प्रधान को बोला,प्रधान ने पत्र पढकर बताया, उलुपी की सौत चित्रांगदा का पुत्र,ब्रभुवाहन का पत्र लेकर बाण आया है अर्जुन मारा गया,इसलिए अमृत भेजने के लिए लिखा है। शेषनाग बोला,अर्जुन मेरा दामाद है,उसके लिए अमृत जरुर भेजना चाहिए। दुष्ट बुद्धि प्रधान ने,इस बात का बहुत ही विरोध किया की,अमृत मृत्युलोक में भेजो मत। शेषनाग बोला,दूसरे के लिए अमृत नहीं भेजता परंतु मेरे अर्जुन के इिश भेजना ही चाहिए। यह बात सुनकर,प्रधान वहाँ से निकला और मणिपुर में आकर अर्जुन और वृषकेतु का मस्तक,बकदालभ्य वन में लाकर छुपा दिया। इधर कृष्ण,कुंती और हस्तिनापूर से आये

और अर्जुन,वृषकेतू और सभी वीरो को मरा देखकर रोने लगे। तब ब्रभुवाहन भीम को बोला की,नानी और कृष्ण मामा तुम लोग रोओ मत,मैं पाताल से अमृत मँगाया हूँ वह अमृत ही अधिक कर के,शेषनाग भेज देगा। नही भेजने पर,मैं युद्ध करके ले आऊँगा और अपने बाप और चचेरे भाई वृषकेतू को, जिवीत कर लूँगा। यह बात चल ही रही थी,कि, इतने में पाताल से अमृत लेकर,शेषनाग का भेजा हुआ नाग,अमृत लेकर आया। अमृत देखकर,सभी खुशी हो गये और रणभुमी पर जाकर देखते है,तो अर्जुन का और वृषकेतू का सिर मिलता नहीं। तब सभी चिन्तातुर हो गये और ब्रभुवाहन भी उदास हो गया और बोला,की,इतना करके अमृत मँगाया और इनके सिर के बिना अमृत अनुपयोगी है, तब कृष्ण बोला,की,मैं मेरे सत्त से,मस्तक मँगा देता हूँ ऐसा बोल कर कृष्ण बोला,की,मैं सोलह हजार स्त्रियों का भोग करके ब्रम्हचारी होऊ,तो मस्तक ले जानेवाले का,मस्तक वही टूटकर गिर जाय और अर्जुन तथा वृषकेतू का मस्तक यहाँ आ जाय ,इतना बोलते ही,शेषनाग के प्रधान का मस्तक वही कट गया और अर्जुन तथा वृषकेतू का मस्तक मणिपुर आ गया।)इस तरह से कृष्ण ने सत्त के आधार पर मस्तक बुलाए थे और सत्त नहीं रहने के कारण से चार पांडव और द्रौपदी हिमालय में जाकर गल गये और सत्त के योग से,युद्धिष्ठिर गला नहीं। ।। २ ।।

सत्त राख्याँ सूं पत्त रहे हे ।। पत्त रहे हे ।।
साहाय करे हर आई हो ।। केहे सुखराम जीव तन जाताँ ।।
सत्त राखो ऊर माही हो ।। ३ ।।

सत्त रखने से ही पत्त रहता है और सत्त रखने से ही हर(रामजी)आकर सहायता करते है इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,जीव जाता है,तो जीव जाने दो, शरीर जाता है,तो शरीर जाने दो परंतु सत्त जाने मत दो,सत्त को हृदय में धारण करके रखो। ।। ३ ।।

४०

।। पदराग आसा ।।

बांदा जुक्त मुक्त प्रचा सो माया
बांदा जुक्त मुक्त प्रचा सो माया ।।
तत्त ग्यान सोजी बिना पूरी ।। कोई नही जाण न पाया ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से कहते है कि,जिस संत में परचे चमत्कार प्रगटे याने युक्ति-मुक्ति पाई मतलब सदा काल से छूट गया ऐसा ज्ञानी,ध्यानी समजते है। परचे चमत्कार यह माया का गुण है यह तत्त का गुण नहीं है इस तत्त ज्ञान की असली पुरी समज इन ज्ञानियो को नहीं है इसकारण माया क्या और तत्तज्ञान क्या इसका फरक इन ज्ञानियों के ध्यान में नहीं आता। ।।टेर।।

कत्रस्याम प्रहलाद श्रीया ध्रु ।। सोही बीच लुटाना ।।

ओर संत की कुण चलाई ।। ज्यां निजनाव न जाण्या ।। १ ।।

कार्तिक स्वामी,प्रहलाद,श्रीयादे,ध्रुव इन संतों में परचे चमत्कार प्रगट हुए थे। इनमें माया प्रगट हुई थी,ने:अंछर निजनाम प्रगट नहीं हुआ था। इसकारण ये संत तत्त में न पहुँचते परचे चमत्कार इस माया में अटक गए और मोक्ष चाहते तो भी मोक्ष में न पहुँचते बिच में ही लुटे गए इसप्रकार से निजनाम क्या है यह न समझने के कारण अनेक संत माया में लुटे गए,तो दुसरे संत कि किसने चलाई,जिन संतो ने निजनाम को जाना नही उनका क्या गुजारा होगा। ।।१।।

जोगी तपी रिषी सन्यासी ।। अे माया का चेला ।।
पूजा पाठ ध्यान सक्ति को ।। तत्त तज फिरे अकेला ।। २ ।।

जोगी(महादेव,गोरखनाथ,मछिंद्रनाथ,पातंजली),तपी(सुकदेव,ध्रुव),ऋषी(मरीची,अत्र,अंगीर, पुलस्त),संन्यासी(दत्तात्रेय,शंकराचार्य)ये सभी माया के ही चेले रहे। तत्त का ज्ञान न होने के कारण तत्त के चेले नहीं बन पाए। इन्होंने शक्ति याने माया की पुजा की,पाठ किया, ध्यान किया और तत्त छोड्कर तत्त के साथ बिना अकेले ही तत्त पाने के लिए पचे। ।।२।।

आठ सिध नौ निध अे तत्त आड़ी ।। ग्यान ध्यान सब लोई ।।
सतगुरू सरण भेद ओ पावे ।। ओर न जाणे कोई ।। ३ ।।

अष्टसिध्दी,नौ निधी,वेद का ज्ञान,योग का ध्यान और माया में याने व्रत,एकादशी,उपवास क्रिया कर्म में रचमचे हुए नर–नारी ये तत्त समझने देने के आडे आते है। तत्त की समझ सतगुरु से तत्त का भेद पाने पर ही आती अन्य किसी विधि से तत्त की समझ नहीं आती। ।।३।।

माया बड़ी अपर बळ साधो ।। सब घट राख्या छाई ।।
तत्त भेद ओ प्रगटे न्यारो ।। भ्यास न सक्के माई ।। ४ ।।

माया लुटने में बडी तरबेज हैं,पराक्रमी है। यह माया सभी नर–नारी,ज्ञानी,ध्यानियोंके घटोपर भारी छाई है। जिनमें तत्त का भेद प्रगट हुआ है,वे ही सिर्फ इस माया से न्यारे है, सिर्फ उन्हीं संतो में परचे चमत्कार यह माया प्रगट नहीं होती। तत्तभेद छोड के अन्य सभी संतो को यह माया परचे चमत्कार प्रगटकर घेर लेती और काल के चपेट में अटकाए रखती।

टिप:–(हर एक के मन में पर्चे चत्मकारो की चाहणा है ऐसी हर एक के घटो पर यह माया छाई है। ।४।

के सुखराम ब्रम्ह अर माया ।। दोय कहे सब कोई ।।
जो साहेब प्रचा यां देवे ।। माया गुण को मोई ।। ५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा नर–नारी ब्रम्ह याने सतस्वरुप तत्त और माया ऐसे दो अलग–अलग है ऐसा कहते है और समजते वक्त

परचे चमत्कार को ही सतस्वरुप तत्त याने साहेब समझ लेते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारियों को पुछ्ते है कि,परचे चमत्कार यह साहेब है तो माया के गुण क्या है?ब्रम्ह और माया ऐसे दो अलग-अलग है ऐसे आप सभी कहते हो,तो माया का गुण और ब्रम्ह का गुण न्यारा-न्यारा होना चाहिए। ।।५।।

४३

।। पदराग आसा ।।

बांदा केवळ को घर न्यारो

बांदा केवळ को घर न्यारो ।।

करामात क्रिया सब झूटी ।। साचो नांव बिचारो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी को कहते है कि,केवल का घर माया के घर से न्यारा है याने घट में का विज्ञान ज्ञान परचा यह माया के परचे चमत्कार से न्यारा है। करामात क्रिया याने माया के परचे चमत्कार ये सभी मोक्ष में ले जाने के लिए झूठे है। इसलिए इन मायावी चरित्रोंको त्यागकर सतनाम जिससे आवागमन मिटता उसे धारण करने का विचार करो ऐसा ज्ञानी,ध्यानी तथा नर-नारियोंको समझाते है। ।।टेर।।

करामात सूं सब कोई रीजे ।। ग्यानी द्रसण सारा ।।

ओ सुण अरथ न सुझे किस कूं ।। माया चरित्र बिचारा ।। १ ।।

संसार में सभी ज्ञानी और दर्शन(जोगी,जंगम,सेवडा,संन्यासी,फकीर,ब्राम्हण)ये सभी करामात याने पर्चे चमत्कार प्रगट होनेपर खुश होते है परंतु यह अर्थ किसी को भी नहीं सुझता है याने दिखाई देता है कि,ये पर्चे चमत्कार माया के चरित्र है,ये रामजी के चरित्र नहीं है। ।।१।।

माया जहां राम सुण नाही ।। राम ज्हा नही माया ।।

ओ सुण भेद न जाणे कोई ।। प्रचा क्हां सूं आया ।। २ ।।

जहाँ माया के पर्चे चमत्कार है वहाँ राम नहीं है और जहाँ राम है वहाँ माया के पर्चे चमत्कार नहीं है परंतु यह भेद कोई भी नहीं जानता है की,यह पर्चे चमत्कार आए कहाँ से?।।२।।

देखो भूल ग्यान द्रसण मे ।। प्रचा सकळ सरावे ।।

जिण जन कू माया बिच माऱ्यो ।। तां की सोभा गावे ।। ३ ।।

देखो ज्ञानियोंमें और दर्शनोंमें(जोगी,जंगम,सेवडा,संन्यासी,फकीर,ब्राम्हण)कैसी भूल पडी है कि जहाँ माया के पर्चे चमत्कार हुए कि,ये सभी उसकी शोभा करने लगते है। अरे,जिन संतो को माया ने मारा उनकी तुम क्या शोभा करते हो? ।।३।।

ब्रम्ह लोक जातां कूं बीचे ।। माया हे बट फाड़ी ।।

सतगुरू सरण तत्त ज्या भ्यासे ।। जिण जन पटक पछाड़ी ।। ४ ।।

अरे,पारब्रम्ह लोक में जानेवालोंके रास्ते में यह माया लुटनेवाली है। यह बिच में ही लुट

लेती है,आगे जाने नहीं देती है,अनेक तरह के चमत्कार दिखाकर उन चमत्कारोंमें भूला देती है। ऐसे बडे-बडे पारब्रम्ही संतोंको चमत्कार हुआ उनमें वे भुल गए। माया ने उन्हें लुट लिया। इन लुटे गए संतोंकी तुम क्या शोभा गाते हो?ऐसा जो सतगुरु की शरण में गए है उन्हें वहाँ तत्त याने सारब्रम्ह दिखाई दिया है। उन जनों ने याने संतोंने माया के चमत्कारो को पटककर पछाड याने जरासा भी नजदिक आने नहीं दिया। ।।४।।

माया थूळ ना अटके कांही ।। आंतो उलटो तारे ।।
करामात प्रच्या जो देवे ।। वां गळ फासी डारे ।। ५ ।।

अरे,स्थुल माया है यह माया कही भी अटकाती नहीं है यह तो उलट तारती है।(स्थूल माया-स्त्री,पुत्र,पुत्री,धन,घर,दुकान)परंतु जिस संत ने यहाँ करामात करके पर्चे दिए है (रिध्दी-सिध्दी के परचे चमत्कार-आकाश मार्ग से उड जाना,सागर पर चलना,जमीन में गड के अनेक कोसो पर निकलना,मुर्दे को जिंदा करना,पल में सृष्टि मिटाना,पल में सृष्टी बनाना एकही समय पर अलग अलग जगह शरीर धारन करना,दुजे के मन की बात कहना,लाख कोस की बात यही देख के कहना।)लोगों को चमत्कार दिखाया है उस संत के गले में माया फाँसी डालती है । ।।५।।

तत्त ग्यान बिना युं व्हे जग मे ।। जिण आ सोभा गाई ।।
जुक्त मुक्त सबही ईण माही ।। जां प्रच्या हूवा भाई ।। ६ ।।

जगत में तत्तज्ञान न मिलनेवाले संतों का यह स्वभाव बनता है। उन्होंने ही इन लुटे गए संतो की शोभा गाई है। जिन संतों ने पर्चे चमत्कार किए उन्हें मुक्ति मिल गई,वे काल से छुट गए ऐसा तत्तज्ञान न समजनेवाले संत समजते है। ।।६।।

मोटा खरा सकळ जग जाणे ।। तत्त पंथ पायो नाही ।।
तत्त तो झिण झिण सूंई झीणी ।। माया बड़ी कवाही ।। ७ ।।

ये संत जगत में बडे माने जाते है परंतु इन संतों ने तत्त पंथ प्राप्त नहीं किया रहता। तत्त समजने के लिए बहुत उंडी बुध्दी चाहिए रहती। तत्त यह माया के समान नहीं रहता। पर्चे चमत्कार याने माया समजने के लिए उपर-उपर की बुध्दी चलती इतनी माया बडी रहती परंतु तत्त समझने के लिए बहुत उंडी बुध्दी चाहिए रहती। यह तत्त समजने के लिए झिने से झिना रहता माया के समान सहज समझनेवाला बडा नहीं रहता उदा.कोई भी मनुष्य आकाश मार्ग से उड नहीं सकता जादा मे जादा १०-१५ फिट की छ्लाँग लगा सकता परंतु आकाश मार्ग से उड्ने की माया प्रगट किया हुआ मनुष्य आकाश मार्ग से सहज उड्ता। साधु आकाश मार्ग से उडा और स्वयम् को आकाश मार्ग से उड्ते नहीं आता कोशिश करने पर भी जरा सा भी उड्ते नहीं आता यह समजने के लिए उंडी बुध्दी कि जरुरत नही। हर रोज के क्रिया कर्म की बुध्दी यह फरक समझा देती है। इसीप्रकार परचे माया को समजने के लिए उपर-उपर की बुध्दी भरपूर हो जाती है परंतु केवल यह झिने

से झिना है। यह केवल की सत्ता मन,५ आत्मा से जीव को मुक्त कराती,उसकी नौ तत्त लिंग काया मिटाती,संचित कर्म मिटाती,होनकाल से मुक्त करा देती और दिव्य काया प्राप्त कर अमरलोक ले जाती यह समझने के लिए विशेष ज्ञान–विज्ञान बुध्दी लगती हररोज के क्रिया कर्म को समझनेवाली मायावी बुध्दी नहीं काम आती। ऐसे ही आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने पर्चे चमत्कार के और कुछ दाखले दिए है जैसे–सागर पर चलना,जमीन में गड के अनेक कोसों पर निकलना,मुर्दे को जिंदा करना,पल में सृष्टी मिटाना,पल में सृष्टी बनाना,एकही समय पर अलग अलग जगह शरीर धारन करना,दुजे के मन की बात कहना,लाख कोस की बात यही देखके कहना। यह सब पर्चे समझने के लिए उंडी बुध्दी की जरुरत नही होती। इसप्रकार के पर्चे माया को समझने के लिए उपर–उपर की बुध्दी भरपूर हो जाती है। ।।७।।

के सुखराम तत्त ज्या पायो ।। वे प्रच्या नही माने ।।
उलटर नाव चढे गड़ ऊपर ।। तत्त समाध बखाणे ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जिन संतों ने तत्त को पाया है,वे पर्चे चमत्कार को मानते नहीं। वे संत नाम के पराक्रम से बंकनाल से उलटकर गढ के उपर याने ब्रम्हांड में चढ गए है,वे ही उस तत्त याने सतस्वरुप के समाधी सुख का वर्णन करते है ।।८।।

७८

।। पदराग मिश्रित ।।

भाई भेदी हुवे सोई जाणे
भाई भेदी हुवे सोई जाणे ।। दूजो नही जाणे रे भाई ।।
पारख हुवे सोई प्रखे ।। दूजो क्या प्रखेरे भाई ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर–नारी तथा ज्ञानी,ध्यानियों को समजाते है कि,जिसे माया क्या है,होनकाळ पारब्रम्ह क्या है तथा सतस्वरुप वैराग्य विज्ञान क्या है? इसका फरक मालूम रहेगा वही पारखी पर्चे चमत्कार इस माया को समझेगा। यह माया हंस को सतस्वरुप में न जाने देते होनकाल में अटकाती यह परखेगा। दुजा कोई भी संत यह माया जीव को मोक्ष में जाने से अटकाती यह नहीं परख पाएगा। ।।टेर।।

मुख सूं सकळ संत सो केहेग्या ।। माया जीते सो गाजी ।।
धिग धिग उण अकल मत्त कूं ।। प्रचा हुवां हुवे राजी ।। १ ।।

जगत के सभी संत मुख से कहते है कि,जो परचे चमत्कार इस माया को जितता याने इस माया के बीज को त्यागता वही गाजी मर्द है और ऐसे मतवाले ही ज्ञानी,ध्यानी जो संत परचे चमत्कार करते उसीसे राजी रहते और जगत में उसकी महीमा करते। ऐसे कहने में और समझने में अंतर करते ऐसे मत को धिक्कार है,धिक्कार है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते। ।।१।।

माया मार लिया अधबिच || ज्यां कूं ज्हान सरावे ||
अेती खबर नही अे कच्चा || कायर तंके लुटावे || २ ||

माया ने इन सभी संतों को मोक्ष में न जाने देते अपने चमत्कार में लगा दिया और संत भी परचे चमत्कार के माया में ऐसे भिने की यह माया ही मोक्ष समझने लगे और मोक्ष पाने के लिए लाया हुआ मनुष्य देह माया के परचे चमत्कार में गमा दिया और काल के मुख में से निकलने के बजाय काल के मुख में ही अटके रहे ऐसे संतो कि जगत के नर-नारी मोक्ष देनेवाले ऊँचे संत समझकर उनकी बढाई करते। जगत के नर-नारी को इतनी भी ज्ञान समझ नहीं है कि,ये संत कच्चे है,कायर है,मोक्ष प्राप्त होने से दूर रहे है इनका मिला हुआ अमुल्य मनुष्य देह लुटा गया है। ||२||

रिध सिध मिल्यां मुक्त जो होवे || मुवा जिवायां सोई ||
तो सक्ती माहे क्हा क्हो ओगण || मोख न पावे कोई || ३ ||

जगत के ज्ञानी,ध्यानी तथा नर-नारी यह समजते की,रिध्दी-सिध्दी प्रगट किए हुए संत काल से मुक्त हो जाते कारण ये संत मुर्दे को जिंदा करते इसलिए इन्हें काल नहीं खाता। यह रिध्दी-सिध्दी की महिमा करनेवाले संत यह भी कहते की,शक्ति को काल खाता इसलिए शक्ति का शरणा मोक्ष पाने के लिए व्यर्थ है। ये संत ये भी कहते कि,रिध्दी, सिध्दी शक्ति से जन्मी है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ज्ञानी,ध्यानियों ने यह भेद जानना चाहिए की जब रिध्दी-सिध्दी शक्ति से जन्मी है और शक्ति को काल खाता है तो शक्ति से जन्मे रिध्दी-सिध्दी को भी काल खायेगा ही खायेगा फिर रिध्दी-सिध्दी प्रगट किए हुए संत मोक्ष में कैसे जाएँगे? ||३||

के सुखराम बन कूं जाता || म्हेरी चेन बतावे ||
इऊं रिध सिध सुणो सब प्रचा || घेरर घट मे लावे || ४ ||

जैसे कोई पुरुष संसार त्यागकर वैरागी बनता और बन में जाने निकलता उस वक्त उसकी पत्नी उसे संसार में रखने के लिए अनेक प्रकार के मोहित चरित्र दिखलाती इसीप्रकार रिध्दी-सिध्दी यह माया जीव घट से याने होनकाल से निकले नहीं इसलिए अनेक प्रकार के परचे चमत्कार के मोहित चरित्र करती और जीव होनकाल के परे जाने से रोकती यह भेद ज्ञानी,ध्यानियो ने परखना चाहिए ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी, ध्यानी तथा नर-नारी से कहते। ||४||

३८२

|| पदराग मिश्रित ||

सुण ग्यानी बचन हमारा
सुण ग्यानी बचन हमारा ||
रिध सिध तिका संताँ धारी || से नही उतऱ्या पारा रे || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानी,ध्यानियों से कहते है कि,मेरे ज्ञान वचन ध्यान

देके सुनो,जिन जिन संतों ने रिध्दी,सिध्दी धारण किया है याने रिध्दी-सिध्दी से प्रगट हुयेवे परचे चमत्कारों को माना है वे संत आज दिनतक होनकाल से पार कोई भी नहीं उतरे,होनकाल में ही रहे है कारण रिध्दी और सिध्दी दोनो भी होनकाल से प्रगट हुई। जो वस्तू जिससे प्रगट हुई वही अंतीम में समाती है,उसके परे नहीं जा सकती। इसीप्रकार होनकाल से प्रगट हुई रिध्दी-सिध्दी होनकाल में ही समाती है वह होनकाल के परे सतस्वरुप में नहीं जाती है। इसलिए रिध्दी-सिध्दी धारण करनेवाले संत होनकाल के पार नहीं जाते,होनकाल में काल के दु:ख भोगते पडे रहते। ।।टेर।।

सतस्वरूप की सत्ता बिना रे ।। माया जाण न देवे ।।
चोसंट अंग अंत हे झीणा ।। जिऊं तिऊं कर गहे लेवे रे ।। १ ।।

होनकाल के परे जाना है तो सतस्वरुप की सत्ता याने वैराग्य विज्ञान चाहिए। वैराग्य विज्ञान के सत्ता बिना रिध्दी-सिध्दी से प्रगटनेवाले परचे चमत्कार माया के सत्ता के परे याने होनकाल के परे जाने नहीं देती। इस माया परचे चमत्कार की सत्ता पूर्ण होनकाल ब्रम्हतक है। उसके झिने-झिने चौसठ स्वभाव है। ऐसे ६४ स्वभाव का उपयोग करके साधक को जिऊँ तिऊँ करके स्वयम् के वश करके होनकाल में रख लेती है। जैसे घर में माता-पिता तथा पत्नी अलग-अलग सुखो में अटका के जीव को संन्यासी वेदी गुरु के पास जाने नहीं देते वैसे के वैसे माया जीव को होनकाल घर में रखती,वैरागी विज्ञान सतस्वरुप सतगुरु के पद में जाने नहीं देती। ।।१।।

माया सुणो ब्रम्ह की दासी ।। ब्हो बिध हाजर होई ।।
सतस्वरूप मे जाय न सक्के ।। ना वो चावे कोई रे ।। २ ।।

माया यह होनकाल ब्रम्ह की दासी है याने पत्नी है। वह जीव को होनकाल के घर में से निकलकर सतस्वरुप में न जा सके इसके लिए अनेक प्रकार के परचे चमत्कार के साथ हाजर होती और परचे चमत्कारों के सुखों मे जीव को उलझा के रखती। जीव सतस्वरुप के ज्ञान में सुलझकर होनकाल त्यागे ऐसा होनकाल ब्रम्ह और माया दोनो भी नहीं चाहते ।।२।।

निरगुण भक्त करे जन कोई ।। ज्हां माया चल आवे ।।
कहियेक पकड करे बस जन कूं ।। काहियेक बस हूय जावे ।। ३ ।।

कोई हंस त्रिगुणी माता माया की भक्ति त्याग के निरगुण होनकाल पारब्रम्ह की भक्ति करते है ऐसे संत में परचे चमत्कार यह माया स्वयम् चलकर प्रगट होती। ऐसे संतो को निरगुण में स्थिर न रहने देते खुद के बस मे करके परचे चमत्कार मे लगा देती। जो निरगुण के साधक परचे चमत्कार के बस नहीं होते उनके वश में हो जाती और जब निरगुण का संत निरगुण के ज्ञान में पक्की पकड नहीं कर पाता तब निरगुण के संत को घेरे में लेकर परचे चमत्कार में लगा देती। ।।३।।

के सुखराम सत्त कूं कोई ।। क्हो कुण फेरे भाई ।।
अेसी भक्त हमारी संतो ।। कुण डेहेकावे आई रे ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी परचे चमत्कार में अटके हुए ज्ञानी,ध्यानी तथा परचे चमत्कार से आकर्षित हुयेवे जगत के नर–नारी को कहते है कि,जो सत है मतलब जो कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा ऐसे विज्ञान वैराग्य को यह परचे चमत्कार की माया फेरकर होनकाल में नही अटका सकती। इसकारण सतस्वरुप विज्ञान वैराग्य के संत इन परचे चमत्कार के बहकावे में नहीं आते। वही भक्ति मेरे पास है ऐसे चमत्कार में लुटे जा रहे संतो को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है। ।।४।।

४७

।। पदराग शब्द ।।

बांदा मो मे ओ गुण आयो
बांदा मो मे ओ गुण आयो ।।
कलब्रछ तळे जाय जिऊं बंछे ।। सोई सोई फळ वाँ पायो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से कहते है की,हे बांदा,मैंने सतस्वरुप सतगुरु का शरणा लिया,जैसे जगत में अनेक वृक्ष है,उसीमें एक कुद्रती कल्पवृक्ष भी है। इस कल्पवृक्ष के निचे जाकर जैसी कल्पना करेगा वैसा–वैसा माया का फल उसे मिलेगा। इसीप्रकार मैं भी तेरे और जगत के लोगो के समान होनकाल पारब्रम्ह से ही माया में आया। मैंने मेरा कुल याने माया–ब्रम्ह को त्यागा और कुद्रत का सतगुरु वैराग्य विज्ञान धारण किया। इससे मुझमें कल्पवृक्ष के समान कुद्रती अमरापुर ले जाने का गुण आया। ।टेर।

निजमन मान अंतर मे लेवे ।। सोई गुण प्रगटे आई ।।
दुबध्या माँहे बिकळतां ऊठे ।। सुख नही ऊपजे माही ।। १ ।।

निजमन मानके याने हंस के उर से मानके हंस,मुझे अंतर में याने दिल में जैसा धारण करेगा वैसा उसमें गुण प्रगट होगा। जो हंस मुझमें प्रगट हुयेवे,अमरापुर ले जाने के गुण के प्रती दुविधा में रहकर,याने विकल्पता में रहकर दुर रहेगा उसमें अमरापुर का सुख नहीं उपजेगा। वह होनकाल के दु:ख में जैसे का वैसा ही रहेगा। दुविधा में रहकर दुर रह गया तो जैसे के वैसे रह गया,दुविधा में उलटा दु:ख पड्ता। ।।१।।

निजमन माँह करारी बेठे ।। जाण अजाण्या काइ ।।
सोई गुण आण प्रगटे नर मे ।। कसर न रेहे भाई ।२।

हंस के निजमन में मुझमें प्रगट हुयेवे गुण को जाणते या न जाणते मुझे पक्का धार बैठता उसमें वैसाही गुण प्रगट होता,उसमें कोई कसर नही रहती। ।।२।।

जे नर झूट जाणसी मोने ।। से झूटी नर पावे ।।
सांच जाण कर सरणो गहेरे ।। से अमरापूर जावे ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज आगे कहते,जो नर मुझे झुठा जानते मतलब अमरापुर न ले जानेवाला जानकर मेरे शरण में नही आते उनमें काल के महादु:ख से निकलने का गुण प्रगट नहीं होता तथा जो मुझे अमरापुर ले जानेवाला सच्चा जानकर मेरे शरण में आता उसमें अमरापूर जाने का गुण प्रगट होता और वह हंस अमरापुर जाता। ।।३।।

निंद्या करे तिके नर निंदक ।। से नीचा फळ पासी ।।
म्हेमा करे तके नर जुग मे ।। सुण बेकुठा जासी ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जो हंस मुझमें सतस्वरुप की सत्ता प्रगट हुई यह न समजते,निजमन से पाखंडी समजता उसे नरकादिक के निचफल प्राप्त होते तथा जो हंस मुझे सतस्वरुपी सत्ताधारी समझ के मेरे शरण न आते सिर्फ महिमा करेगा या करता तो उस हंस को बैकुंठ के उच फल मिलेगें या मिलते और वह बैकुंठ में जाता। ।।४।।

निंद्या करे कहे कोई झूटा ।। कोई म्हेमा कर देवे ।।
निजमन रे खुंचा बिन योरे ।। अेकी फळ नहि लेवे ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,बिना करारी निजमन से कोई हंस मुझे सच्चा सतस्वरुपी सत्ताधारी न समझते,झुठा पाखंडी समझेगा। या कोई हंस बिना निजमन से मुझे सच्चा सतस्वरुपी सत्ताधारी समझेगा ऐसे दोनो प्रकार के हंस को निच या ऊँच ऐसा एक भी फल नहीं मिलेगा। ।।५।।

रोळ भोळ मे कुछ ही केहे जावे ।। तां कूं दोस ना काई ।।
काठी पकड करे नर काई ।। सोई ततकाळ फळ देखे भाई ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,हँसी मजाक में या बातों–बातों में या फिर भोलेपन में मुर्खता वश कुछ भी कह दिए या मान गए,तो उन्हें कुछ भी दोष नही लगेगा परंतु जो मनुष्य निजमन से पक्का बनकर कुछ करेगा उसे तत्काल फल दिखाई पडेगा। निजमन से कोई पक्का मानकर अच्छा करेगा उसे अच्छा फल दिखाई पडेगा,तो कोई पक्का मानकर बुरा करेगा तो बुरा फल दिखाई पडेगा। ।।६।।

के सुखराम सुणो सब भाई ।। भाव जिसो फळ हे जुग माई ।। ७ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बांदा तथा जगत के सभी भाईयों को कहते है की,जिस नर का जैसा भाव रहेगा वैसा ही उस नर को फल मिलेगा। जैसे कल्पवृक्ष के निचे जाकर ऊँची कल्पना करेगा तो माया के उंचे फल मिलेंगे और निची कल्पना करेगा तो माया के निचे फल मिलेगें। इसीप्रकार नर का मेरे प्रती अमरापूर पहुँचाने का भाव रहेगा तो वह नर अमरापूर जाएगा और नर को अमरापूर न पहूँचानेवाले पाखंडी या ढोंगी का भाव रहेगा तो उसे काल के जबडे में रहने का निच फल मिलेगा। ।।७।।

५५

।। पदराग शब्द ।।

बांदा ओ नर मोहे न जाणे जी

बांदा ओ नर मोहे न जाणे जी ।।

आगे बस्त ना देखी किसने ।। काना सुणी बखाणे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हरजी भाटी से बोले,की यह जगत के नर–नारी मैं सतस्वरुप हुँ यह जानते नहीं। यह मुझे चलना–उठने पर से अपना सरीखा ही मनुष्य समझते। जगत के इन नर–नारियों ने प्रत्यक्ष सतस्वरुपी संतों को कभी देखा नहीं परंतु जिन्होंने खुद कभी प्रत्यक्ष देखा नहीं ऐसे ज्ञानी के मुख में से डिंगल पिंगल भाषा में सतस्वरुपी संत कैसे रहते इसका ज्ञान सुना इसलिए जगत के नर–नारियों को अस्सल सतस्वरुपी संत कैसे रहते यह समझता नहीं इसलिए यह जगत के नर–नारी मुझे जानते नहीं। ।। टेर ।।

जड़ी सजीवण लाताँ खूंदे ।। खोद कोई नही लावे ।।

युं बिन भेदी मोसूं कर बाताँ ।। खाली ऊट नर जावे ।। १ ।।

संजीवनी बुटी जंगल में रहती। वह मुर्दे को जिंदा करती। वह बुटी उपर से अन्य वनस्पती सरीखी दिखती। इस संजीवनी बुटी की परिक्षा करना मालुम न होने के कारण जगत के लोग पैर के निचे रौंदते,खोदके घर कोई नहीं लाता ऐसे ही सतस्वरुप की पहचान न करते आने के कारण मेरे से सतस्वरुप का ज्ञान सुनते उनको ज्ञान भाँता परंतु मैं सतस्वरुपी संत हुँ,यह उनके ख्याल में आता नहीं इसलिए मेरे से घट में सतस्वरुप प्रगट न करा लेते जैसे खाली आए थे वैसे के वैसे खाली ही रहके उठके चले जाते। ।। १ ।।

पारस लेह भीत में चुण दे ।। मिण कूं गेहे ले फोडे ।।

यूं बुध हीणा जक्त मे ग्यानी ।। मो सें नेह न जोडे रे ।। २ ।।

पारस मणी यह पहाडों में पत्थरों में रहता। उसका लोहे को स्पर्श होते ही वह लोहा सोना हो जाता। यह पारस मणी बाह्य रुप से अन्य पत्थरों की तरह पत्थर दिखता। इस पारस मणी की परिक्षा करना मालुम न होने के कारण जगत के लोग मकान बांधते वक्त दिवार में पत्थर करके इस्तेमाल करते या फोडकर सिमेंट सरीखा चुरा कर देते ऐसे ही सतस्वरुप की बुद्धि नहीं ऐसे ज्ञानी मुझे जगत सरीखा मनुष्य समझ के मेरे से सतस्वरुप प्राप्त करने के लिए स्नेह जोडते नहीं। ।। २ ।।

जिऊं मूरख चित्रावण पावे ।। ले कवुवा सिर बावे ।।

यूं मद भाग्याँ मोकूं फेंक्यो ।। नेडो कोई हन आवे रे ।। ३ ।।

मुर्ख,बुद्धिहीन मनुष्य को चिंतामणी मिलता। यह चिंतामणी मन में आयी हुई हर एक चाहणा,चिंतन पूरा करता। यह चिंतामणी बाहरी रुप से अन्य पत्थरों सरीखा ही दिखता। इस चिंतामणी की मुर्ख लोगों को परिक्षा न आने के कारण यह मुर्ख लोग इसका उपाय अन्य पत्थरों सरीखा करते। ऐसा ही यह चिंतामणी एक मुर्ख मनुष्य को मिला था। वह चिन्तामणी के गुण को जानता नही था परन्तु उसके हाथ मे चिन्तामणी होने के कारण

जैसा चिंतन करता था वैसा हो जाता था। इस मुर्ख के हाथ में चिन्तामणी था। रास्ते से चलते-चलते इसे भूख लगी। इसने मन में चिंतन किया,कुछ खाने को मिले तो अच्छा होगा ऐसा चिंतन करते ही,वहाँ मिठाई का थाल उत्पन्न हो गया। वह मिठाई खाके इसने चिंतन किया की,खाने को तो मिल गया,लेकिन पानी चाहिए ऐसा सोचते ही,स्वच्छ निर्मल ठंढा पीने सरीखा पानी उत्पन्न हुआ। इस मुर्ख ने पानी पिने पर छाया में बैठने का मन में आकर चिंतन किया। यहाँ छाव में बैठने के लिए मकान रहता तो छाया में बैठता था। यहाँ मकान चाहिए ऐसा चिंतन करते ही हवेली तैयार हो गई। उस महल में बैठके सोने की इच्छा की,कि पलंग और नौकर,चाकर,दास-दासी रहते तो,सभी उपभोग लेते रहता तो यह होना चाहिए ऐसा कहते ही,पलंग आदि स्त्रियाँ,दास-दासी,नौकर-चाकर सभी हो गये और यह चिन्तामणी अपने हाथो से फेक-फेक कर,हाथो में पकड रहा था,ऐसा चिन्तामणी को पत्थर समझकर खेल रहा था। इधर इंद्र को चिन्ता पडी की,इस मुर्ख के हाथ में चिन्तामणी है। वह इस चिन्तामणी के गुणों को समझ के मेरा(इंद्र का)राज मिलने की इच्छा की,तो यह इन्द्र हो जाएगा और मुझे इंद्र पद से उतरना पडेगा,ऐसा विचार करके,इंद्र डोम कौआ बनके इसके महल में आया और इधर-उधर,कुद-कुद के घुमने लगा और कर्कश शब्द से बोलने लगा तब इस मुरख को गुस्सा आया और उस कौए को उडाने के लिए हाथ में के चिन्तामणी को कौए की ओर फेंक दिया। वह चिन्तामणी कौआ बनके आया हुआ इंद्र ले गया। इसीतरीके से भाग्यहिन जीवों ने मुझे त्याग दिया,मेरे नजदिक कोई आता नहीं। || ३ ||

के सुखराम सुणो नर नारी || यो मेरो अंग होई ||
ज्युँ चिंत्रावण मे गुण प्रगटे || निजमन माने सोई || ४ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर-नारी को मैं कौन हुँ?कैसा हुँ?यह समझने को कहते जैसे चिंतामणी चिंतन करनेवाले प्राणियों की सभी चिंता मुक्त करता उसी तरह मैं,मुझे निजमन से माना तो सभी की जालिम काल के दु:ख से मुक्त होके अखंड्ति अनंत सुखों में जाने की चिंता मुक्त करता। || ४ ||

५७

|| पदराग शब्द ||

बांदा ओर सकळ पिस्तासी
बांदा ओर सकळ पिस्तासी ||
मेरी सरण हंस जे आवे || से आणंद पद पासी || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के सभी ज्ञानी,ध्यानी,नर-नारियो को बांदा याने हरजी भाटी को सामने रखकर चेता रहे की,अरे बांदा,मेरे शरण में जो हंस आएगा वही महासुख का आनंदपद पाएगा। अन्य सभी हंस काल के मुख में जैसे अभी है वैसेही आगे रहेंगे और ४३,२०,००० सालतक ८४,००,००० योनि में महासुख के आनंदपद में नही

पहुँचने के कारण पल पल में पस्तावा करते महादु:ख भोगेगे। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने मेरी शरण यह शब्द पद में कहा है इसलिए प्रथम मेरी शरण याने क्या?यह समझेंगे।

सृष्टी में आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के अन्य लोगों समान हंस रुप में तथा

देहरुप में है याने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तथा सभी जगत के मनुष्य हंस और देहरुप में सरीखे है। इसका अर्थ आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने हंसरुप या देहरुप से मेरी शरण यह शब्द नहीं कहा। जैसे जगत के अन्य लोग और आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज में हंसरुप तथा देहरुप यह सरीखापण है वैसा सरीखापण आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज में सतस्वरुप है जो काल के परे है वह सभी जगत के लोगो में सरीखापण नहीं है अन्य सभी जगत के लोगों में कर्म के रुप में त्रिगुणीमाया है जो काल के मुख में है यह फरक है।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तथा सभी जगत के ने:अंछरी हंस सतस्वरुपी कैसे है और ने: अंछरी छोड के अन्य सभी हंस काल के मुख की माया कैसे है?यह समजेंगे।

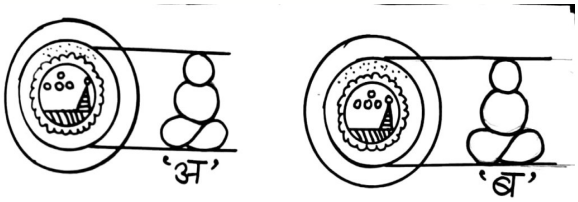

अ और ब ऐसे दो हंस है । उनका दोनो का पिंड खंड ब्रम्हंड का बना है।

'अ ' के हंस के साथ ५ आत्मा और मन है तथा संचित कर्म,प्रारब्ध कर्म है। 'अ' में ने: अंछर प्रगट होने से 'अ' का शरीर खंड– ब्रम्हंड बना । 'अ 'का हंस कंठ में है । यह ने: अंछर 'अ 'का हंस कंठ कमल से हृदय कमल ,हृदय कमल से नाभी कमल ले जाता।

नाभी कमल में 'अ' के हंस के साथवाली ५ आत्मा यह माया निकालता।

आगे ऐसे नौ स्थान तक हसं को ले चलता और नौवे स्थान में याने त्रिगुटी में मन माया को हंस से अलग करता।

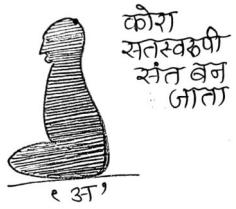

आगे १० वे,११ वे,१२ वे स्थान पर ने: अंछर हंस को ले जाता और वहाँ हंस को ड्किी हुई संचित कर्म की माया भस्म करता और पुरे घट

में स्वयम् ने: अंछर छा जाता याने ही मनुष्य का सतस्वरुपी संत याने कोरा होनकाल मायाविरहित सतस्वरुप बन जाता।

मनुष्य ब – सतगुरु का शरणा नहीं लिया। उसका मन,५ आत्मा तथा संचित कर्म यह माया जैसे के वैसे बनी रही। ।।टेर।।

अब तो सकळ करत हे हांसी ।। नवी बात आ काँई ।।
माया बेद भ्रम में भूला ।। सत्त पिछाणी नाही ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि जब मैं काल के परे का आनंदपद का ज्ञान सुनाता हुँ,तो जगत के सभी नर–नारी,ज्ञानी,ध्यानी,मेरी हँसी उडाते है,निंदा करते है, थट्टा मस्करी के टिंगल मजाक करते है और जगत में हँसीरुप में चर्चा करते है कि, आजदिन तक पिढीयोंन पिढीयों से चल रहा ज्ञान छोड के निराली बात में जगत को क्या भरमा रहे ऐसी बातें करते। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,त्रिगुणी माया तथा उससे उपजे हुए वेद,शास्त्र,पुराण जो कल भी असत थे,आज भी असत है और कल भी असत रहेंगे और ना ऐसा कोई समय था कि वह सत था ऐसे असत उलझन के कारण जगत के हंसो ने असत माया को सत पकड लिया और जो कल भी सत था,आज भी सत है तथा कल भी सत रहेगा उसे पहचानना भूल गए। ।।१।।

सत्त सत्त कहो तिको सत्त ओ हे ।। ने: अंछर सो ओई ।।
कुद्रत कळा कहे सो आ हे ।। सुणो सरब नर लोई ।। २ ।।

जगत सत्त–सत्त कहते याने कल भी सत था,आज भी सत है और कल भी सत रहेगा ऐसा सत है। उसके शरण में गया तो आनंद पद याने काल के दु:ख से मुक्त होता ऐसा सभी ज्ञानी,ध्यानी कहते है और नाशवान त्रिगुणी माया(जो होनकाल के)आधार से जीवीत दिखती है।(जैसे शरीर मृतक है परंतु हंस के आधार से चलता,फिरता,उठता,बैठता ऐसे जिवीत दिखता)वैसेही उसे जीवीत देखकर उसे ही सत्त सत्त समजकर भ्रम में पड्ते है और काल के मुख में रहते है।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जो जगत सत्त–सत्त कहता वह रजोगुण, सतोगुण,तमोगुण यह त्रिगुणी माया नहीं है वह मैं जो बताता वह ने:अंछर है जिसे जगत हँसी करके नई बात है करके संबोधते। मैं जो बता रहा वह ने:अंछर याने मुखपर न आनेवाला,कानो से न सुनाई देनेवाली महासुख का अखंड्ित ध्वनी है। यह अखंडीत ध्वनि कुद्रती है। त्रिगुणी माया के समान कृत्रिम रुप से होनकाल के चेतन आधार से चेती नहीं है। उस कुद्रती ध्वनी के कला से यह सारी सृष्टी चल रही है और यही ध्वनि हंस को काल से मुक्त कराती है और महासुख के देश में पहुँचाती है यह सभी जगत के नर–नारियों,ज्ञानी,ध्यानियों निरख परख कर समज लो ।।२।।

के सुखराम ताण में केहूं ।। प्रमारथ के ताँई ।।
सतस्वरूप की अग्या मोने ।। हंस तारूं जुग माँई ।। ३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारी,ज्ञानी,ध्यानियों को कह रहे की मुझे सतस्वरुप ने काल के मुख में से सभी हंसो को आनंदपद में पहुँचाने की आज्ञा देकर मृत्युलोक में(काल का संवाद)भेजा है। काल के मुख से निकलने का परमारथ हर जीव ने अपने जीव पर करना इसलिये मैं सतस्वरुप के आज्ञा से जोर दे देकर याने बजा बजाकर जगत के सभी हंसो को ने:अंछर की विधि बता रहा हुँ और सतस्वरुप के आज्ञानुसार सतस्वरुप की विधि हंसो को देकर हंसो को जगत में से याने होनकाल में से तारता हुँ । ।।३।।

२६३

।। पदराग सोरठ ।।

पांडे मै च्यार बरण सुं न्यारा
पांडे मै च्यार बरण सुं न्यारा ।।
मो कूं लखे को बिरळो जुग मे ।। बोत बसे सेंसारा ।। टेर ।।

जगत में ब्राम्हण,क्षत्रिय,महाजन(वैश्य),शुद्र ऐसे चार वर्ण है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज पंडित को कहते है कि,मैं इन चारो वर्णो से न्यारा हूँ। मुझे इस संसार में कोई बिरला ही याने एखादा हि मनुष्य पहचानेगा। संसार में मनुष्य तो बहुत है परंतु मुझे पहचानने वाला,कोई एखादा हि है। ।। टेर ।।

बामण वैश नही मै छत्री ।। ना मै सुद्र कहाया ।।
तीन लोक तेरे कुळ बारे ।। सो अवस मे भाया ।। १ ।।

मैं ब्राम्हणत्व के कर्म करता नहीं इसलिए मैं ब्राम्हण भी नहीं हुँ और शस्त्र बाँधकर लडाई करने जाता नहीं,इसलिए मैं क्षत्रिय भी नहीं हुँ। मैं बेपार नहीं करता इसलिए मैं महाजन भी नहीं हुँ और किसीकी सेवा,नौकरी करने,खेती का धंधा भी नहीं करता या दूसरे नीच कर्म भी नहीं करता इसलिए मैं शुद्र भी नहीं। मैं अब तिन लोकोंके बाहर हो गया हूँ और तेरह कुलोंके बाहर हो गया हूँ ऐसा मैं चारो वर्णो से अलग अवश्य हूँ। ।। १ ।।

छ: दरसण छतीसुं पाखंड ।। अे सब हद के मांही ।।
भेष बणाय फिरे बेरागी ।। मै इनही मे नाही ।। २ ।।

छ: दर्शन और छत्तीस पाखंड ये सभी हद याने तीन लोक चवदा भवन में ही है और मैं तो हद याने तीन लोक चवदा भवन के बाहर निकल गया हुँ, ऐसे ही जो बैरागी वेश धारण करके घूमते है ,मैं इनमें भी नहीं हूँ ,इनके परे सतस्वरुप गगन में हुँ। ।। २ ।।

हिंदु तुरक पखा मिल दोई ।। या सम बास न मेरा ।।
जन सुखराम मोख मे जाणुं ।। गिगन मंडळ सिर डेरा ।। ३ ।।

हिन्दू और मुसलमान दो पक्ष है। इन हिन्दू और मुसलमान पक्षों में भी मेरा रहना नहीं

है। मुझे हिन्दू धर्म भी मान्य नहीं है और मुसलमानी धर्म भी मुझे कबूल नहीं है इसलिए मैं इन दोनो से ही अलग हूँ। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मुझे हिन्दूओंके बैकुंठ और मुसलमान के भेस्त के परे मोक्ष में जाना है इसलिए मैंने हिन्दूओंके बैकुंठ के परे के और मुसलमान के भेस्त के परे के सतस्वरुप गगन मंडल मे याने बैकुंठ और भेस्त के उपर अपना डेरा डाला है। ।।३।।

१३३

।। पद राग धुन ।।

।। गुरू महिमा यूं किजे हो ।।

गुरू मेहमा युं कीज्यो हो ।। तन धन मन यो दीज्यो हो ।। टेर ।।

(सतगुरु को,वंदन स्वागत करके,उनके पैरोंके निचे नये कपड़े का थान,चलने के लिए बिछाकर उनके सामने जाकर बधाई करके अपने घर लाने की रीती।)सतगुरु कि महिमा इसतरह से किजिए। सतगुरु को तन,मन और धन सभी दिजिए। ।। टे र ।।

प्रथम जाय अराधे हो ।। वां पूजा बिध साधे हो ।। १ ।।

सर्व प्रथम(सतगुरु के)यहाँ जाकर उनकी(अपने घर आने के लिए) आराधना करो। वहीं उनके(सतगुरु के)घर पर ही पूजा की विधी साधो। ।।१ ।।

वां सुं गजी बिछाई हो ।। पेंड पांच दस तांई हो ।। २ ।।

(वहीं से(सतगुरु के घर से)),पाँच दस कदम तक कपड़े का नया थान,सतगुरु को(गाड़ी में आकर बैठने तक)(पगल्या डालना),(सतगुरु के आने के लिए नये कपड़े का थान बिछाते है उसे पगल्या डालना कहते है।) ।। २ ।।

सत्तगुर फिळसे आवे हो ।। सामा जाय बधावे हो ।। ३ ।।

फिर सतगुरु गाँव के बाहर(गाँव के प्रवेशद्वार के बाहर गाँव का प्रवेशद्वार नहीं होने पर,गाँव के बाहर के मंदिर या मंदिर भी नहीं होने पर,किसी पेड़ के नीचे) आने पर,(वहाँ से अपने घर के लिए,उनकी)अगवानी मे आकर,(गाँव के बाहर)उत्सव करो। ।। ३ ।।

ढोल निसाण नगारा हो ।। नर नारी सब लारा हो ।। ४ ।।

साथ में ढोल,निशाण,नगाड़े ले लो और स्त्री-पुरुष सभी साथ में लेकर,(सतगुरु की अगवानी करने जाओ।) ।।४ ।।

गुर सामा पग दीजे हो ।। किनक डंडोताँ कीजे हो ।। ५ ।।

गुरु के सामने पैर देते समय,कनक दंडवत(गुरु की तरफ आगे अगवानी मे जाते समय),(गुरु के सामने घुटने के बल,डंडे की तरह,लम्बा पड़कर दंडवत करो।) ।। ५ ।।

वहाँ प्रेम ब्रेह उठ आवे हो ।। अेसो प्रेम बधावे हो ।। ६ ।।

(और वहाँ जाने पर,सतगुरु के मिलने पर),प्रेमाश्रु लाकर विरह लाओ। ऐसे प्रेम से,उनका बधावा करो,(उनकी अगवानी करके लाओ।) ।। ६।।

जायर चरण छिवीजे हो ।। प्रदिखणा भल दीजे हो ।। ७ ।।

गुरु के सामने जाकर,गुरु के चरण स्पर्श किजिए और वहाँ भली(अच्छी)प्रदक्षिणा दो। ।७।

तिलक सीस पर कीजे हो ।। यूं जन पूज बिचारा हो ।। ८ ।।

गुरु के मस्तक पर तिलक लगाओ और उनसे आज्ञा लो।(हो सके तो),सोने की थाली होनी चाहिए,(सोने की नहीं रहने पर,चाँदी की होनी चाहिए,चाँदी का नहीं मिलने पर,जो मिले उसी थाली में),रत्न वगैरे द्रव्य(जो मिले वो)लाओ और वहाँ उस जन की(गुरु की)पूजा करो। ।।८।।

महा प्रसाद बटीजे हो ।। च्रणा मृत चित्त लीजे हो ।। ९ ।।

वहाँ महाप्रसाद बाँटो और वहाँ उनका चरणामृत,वहाँ(प्रत्यक्ष न लेकर),चित्त से ही चरणामृत लो। ।। ९ ।।

हरिजस हरि गुण गावे हो ।। यूँ गुर कुँ घर लावे हो ।। १० ।।

वहाँ से घर आते समय,रास्ते में हरीयश(हरीगुण के)पद बोलो इस तरह से गुरु को घर लाओ। ।। १० ।।

गजी बासती ल्यावे हो ।। ऊभी गळी बिछावे हो ।। ११ ।।

नया कपड़ा लाओ और वह कपड़ा,सीधे रास्ते से बिछाते हुए,(उस पर गुरु को चलाते हुए,घर लाओ ।) ।।१ ।।

द्वार घरा लग आवे हो ।। जाजम फेर बिछाई ये हो ।। १२ ।।

(फिर जब गुरु) घर के दरवाजें तक आ गये,तो वहाँ जाजिम बिछाओ । ।। १२ ।।

तां पर पिलंग ढळीजे हो ।। वाँ पूजा फिर कीजे हो ।। १३ ।।

उस जाजिम के उपर,पलंग बिछाओ और वहाँ पुनः और भी पूजा करो । ।। १३ ।।

पेफ फूल ले आवे हो ।। गुराँ की सोड़ बिछावे हो ।। १४ ।।

पुष्प(फूल)लाओ और उस पलंग पर सोड बिछाओ। ।। १४ ।।

गुराँ कुं सोभा सोवे हो ।। तीन लोक मे होवे हो ।। १५ ।।

गुरु की(जितनी शोभा की जाय,उतनी)सभी शोभा सुशोभित होती है। गुरु की शोभा, त्रिलोकी में होते रहती है। ।। १५ ।।

अगर आरती कीजे हो ।। चरण खोळ वाँ पीजे हो ।। १६ ।।

वहाँ अगरबत्ती लगाओ और वहाँ उनके चरण धोकर,उनका चरणोदक प्राशन करो। ।१६।

वेद भागवत गावे हो ।। सत्तगुर सम नहि क्रावे हो ।। १७ ।।

वेद और भागवत सभी कहते है कि,सतगुरु की बराबरी का,(किसी को भी सतस्वरुप रामजी को भी),कहते नहीं आता है । ।। १७ ।।

गुर मेहमा ज्याँ कीनी हो ।। ज्यां सेज मुक्त कुं लीनी हो ।। १८ ।।

जिन्होंने(इसतरह से),गुरु की महिमा कि है,उन्होंने मुक्ती तो,सहज में प्राप्त की है। ।।१८।।

सुखदेव कहे धक सोई हो ।। गुर भक्ता धिन्न होई हो ।। १९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,बाकी जो गुरुभक्त नहीं है उन सभी को धिक्कार है,जो गुरु भक्त है,वे धन्य है। ।।१९।।

२४१

।। पदराग बधावा ।।

म्हारे पावणा परम गुरू आज

म्हारे पावणा परम गुरू आज ।। संयाँ आवो अे ।।

म्हारे आया अे हरि का जन आज ।। संयाँ आवो अे ।। टेर ।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,मेरे यहाँ मेहमान करके मेरे परम गुरु आए है मेरे परमगुरु ये हरी के जन है इसलिए मेरी सभी सहेलियाँ आप मेरे घर पधारो हम सभी उनका स्वागत करेंगे। ।।टेर।।

आवो अे गावो संय्याँ ।। अणंद बधावा ।।

म्हारे आंगणिये अे साधाँरो समाज ।। संयाँ आवो अे ।। १ ।।

परमगुरु के प्रित्यर्थ आनंद बधाइयाँ गाएँगे। मेरे आँगन में साधुओंका समाज आया है इसलिए सभी मेरी सहेलियाँ मेरे आँगन में आवो। ।।१।।

कथा अे प्रसंग हिल मिल ।। हरि गुण गास्याँ ।।

म्हारे मेहेर करी हे महाराज ।। संयाँ आवो अे ।। २ ।।

मेरे परमगुरु कथा प्रसंग सुणाएँगे और तब हम सभी सहेलियाँ हिलमिल के परम गुरु के साथ हरी गुण गाएँगे। इस प्रकारसे मेरे उपर गुरु महाराज ने मेहेर की है,तो सैया आओ। ।।२।।

किणी अेक सुक्रत संयाँ ।। सतगुरजी मीलिया ।।

कोई किणी अे मानव तन साज ।। संयाँ आवो अे ।। ३ ।।

ये मेरे कोई भारी सुकृत के कारण मुझे सतगुरुजी मिले और साथ मे मानव तन का साथ मिला। ।।३।।

ओ मानव तन सैया ।। ब्रम्हा दिक बंछे ।।

कोई राम सिंवर किज्यो काज ।। संयाँ आवो अे ।। ४ ।।

ये मानव तन का साज ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये देव बंछते है फिर भी उन्हें यह मानव तन नहीं मिलता और यह मानव तन हमें मिला है इसलिए इस तन से हम सभी ने रामजी का स्मरन कर भवसागर पार करने का कारज कर लेना चाहिए। ।।४।।

सोना रो सूरज म्हारे ।। इण पुल ऊगो ।।

म्हारे घर बेठाँ गंगा आई आज ।। संयाँ आवो अे ।। ५ ।।

मेरे सतगुरु घर पर पधारे है यह पल मेरे लिए सोने का सुरज उगे सरीखा है तथा गंगा घर बैठे बैठे आई ऐसा है। ।।५।।

लख चोरासी संयाँ ।। दु:खडारी फासी ।।
कोई हूवे अे बोत अकाज ।। संयाँ आवो अे ।। ६ ।।

मेरी सभी सहेलियाँ सुनो,चौरासी लाख योनि में पडना यह भारी दु:खोंकी फाँसी है उन योनियों में जीव का बहुत अकाज होता है। ।।६।।

इण भवसागर म्हारा ।। सतगुरूजी तारे ।।
कोई आपरा बिड़द की लाज ।। संयाँ आवो अे ।। ७ ।।

इन भवसागर से मेरे सतगुरु मुझे तारेंगे। उनका बिड्द ही शिष्योंको तारने का है इसलिए हम सभी को मेरे सतगुरुजी तारेंगे। ।।७।।

सुखदेव सुख मे म्हारो ।। मन वो जी झूले ।।
म्हारे साध सदाई सिरताज ।। संयाँ आवो अे ।। ८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतगुरु के सतज्ञान सुख में मेरा मनवा झुल रहा है। ये मेरे सभी संत सदाही मेरे सिर के मुकुट रहे है। ।।८।।

१०८

।। पदराग चरचरी ।।

धिन्न गुरू ग्यान जो साध ईण जुग मे
धिन्न गुरू ग्यान जो साध ईण जुग मे ।। अनंत ही जीव कूं आण तारे ।।
मेरे ही ऊर मन अेसी ही आवे ।। जुगन जुगन रूँला रे ।। टेर ।।

धन्य है वे गुरु,धन्य है वे साधु और धन्य है उनका ज्ञान। इन गुरु और संतों ने युगान युग से अनंत ही जीव भवसागर से तारे। मेरे हृदय में ऐसा लगता की मैं सदा उनके संग रहुँ उनसे बिछ्डू नहीं। ।।टेर।।

भ्रम तो बोहोत जंजाळ ब्हो घट मे ।। जगत के संगमाँ जाऊँ बूवो ।।
किरपाल दयाल मुज आण कर काडीयो ।। भव ही सिंध ते कियो जूवो ।। १ ।।

मेरे घट में भ्रम का बहोत जंजाल था। मैं होनकाल के विषय विकारों के संग बहे जा रहा था। कृपालु गुरुदेव ने,दयालु गुरुदेव ने मुझ पर दया कर मुझे भवसिंधु से अलग कर दिया ।।१।।

ग्यान तत्त काल मुज आण अेसो दियो ।। अडद ही नांव को भेव आणी ।।
जीव उत्पत्त अे आद गुण उपना ।। तीन तिर्लोक सिर गत्त जाणी ।। २ ।।

मुझे तत्काल विलंब न लगाते भवसागर से तारनेवाले आधे शब्द रक्कार का भेद दिया। इस अर्धनाम से जीव की उत्पती,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव इन गुणों कि उत्पती और मृत्यु,स्वर्ग,पाताल ये तीन लोकों के उत्पती का मर्म मैं जान गया। ।।२।।

काळ का मुख सूं आण मुज काड़ीयो ।। ग्रभही जुण की भ्रांत खोई ।।
केत सुखदेव भु: सुरग पाताळ मे ।। नाव गुरू देव सम नाँय कोई ।। ३ ।।

काल के मुख से मुझे निकालकर गर्भ में आकर और चौरासी लाख प्रकार की योनियाँ

धारण करके चौरासी लाख योनि के दु:ख भोगने की शंका मिटा दी। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,भुलोक,स्वर्गलोक और पाताल में गुरुदेव के समान ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,अवतार आदि कोई भी नहीं है। ।।३।।

११४

।। पदराग धनाश्री ।।

दोय बिधि संत पिछाणे रे

दोय बिधि संत पिछाणे रे ।। मिथ्या कुछ नेक न जाणो रे ।।

इसी उर अंतर ल्यावो रे ।। पाँचा मांहि साहिब पावोरे ।। टेर ।।

सभी देह हर के अंदर है और सभी देह के अंदर हर है इन दो विधि से संत पहचानो। अन्य विधियाँ पहचानने के लिए झुठी है उसे लेशमात्र भी मत जानो। वैसे ही सुख पाने के लिए पारब्रम्ह प्रगट करना झुठा है उसे नेकभर भी मत खोजो। संत पहचान ने की दोनो पाँच तत्व की विधियाँ अंतर में लावो तब जैसे संत को देह में हर प्राप्त हुआ वैसे आपके भी पाँच तत्व के घट में हर प्राप्त होगा। ।।टेर।। .

गेबी प्रगट पाँच हे रे ।। अेबी अेभी जाण ।।

गेबी अेभी बीच मेरे ।। निज तत्त पकड़ो आण ।। १ ।।

जैसे गेबी याने परमात्मा पाँच तत्व के देह में प्रगट है वैसे काल के मुख में डालनेवाली माया भी हंस के पाँच तत्व के देह में प्रगट है। गेबी और अेबी याने विषय विकारोंका सतज्ञान से बिचार कर महासुख देनेवाला निजतत्त पाँच तत्व के देह में पकडो। ।।१।।

ब्रम्ह का ब्रम्ह सूं सुख लहोरे ।। तत्त तत्त सूं जोय ।।

पाचुँ हर के माँय हेरे ।। पाचाँ मे हर होय ।। २ ।।

सतस्वरुप ब्रम्ह को जीवब्रम्ह से घट में पहचानो और सतस्वरुप ब्रम्ह का सुख जीवब्रम्ह से घट में लो और वे सभी पाँचों तत्व के देह हर के अंदर है,वह हर पाँचो तत्व के देह में है ।।२।।

पाँचा सूं सुख ऊपजे रे ।। पांचाँ सुंई दु:ख होय ।।

छटाँ ज्याँ सुखराम केहे रे ।। सुख दुख अेक न कोय ।। ३ ।।

ये पाँचो तत्वोंके देह से ही हर पाया तो सुख उपजता और इन पाँचो तत्व का देह पाँच विषय वासना में लगाया तो काल का दु:ख उपजता। सतस्वरुप ब्रम्ह का जीवब्रम्ह से घट में सुख लो। छटा जो पारब्रम्ह होनकाल है जिसको जानने से सुख भी नहीं उपजता और दु:ख भी नहीं पडता ऐसा पारब्रम्ह पाने के लिए झुठा है उसे मत खोजो। ।।३।।

१२४

।। पदराग सोरठ ।।

गळतान मता कब आवेगा

गळतान मता कब आवेगा ।।

जब प्राणी बोहो सुख पावेगा ।। सब संत मता कब आवेगा ।। टेर ।।

परापरी से दो पद है। एक सतस्वरुप का वैराग्य पद और दुजा माया का होनकाळ पारब्रम्ह पद। युगान युग से हंस पारब्रम्ह के माया पद में है। जब तक हंस में त्रिगुणी माया का बल रहता तब तक उस हंस में माया का मगरुर मत रहता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज गलतान मता कब आएगा याने साहेब न पा सकनेवाला माया का मगरुर मत कब जाएगा इसका सोच करते। जब तक प्राणी में माया का मत है तबतक प्राणी आवागमन के दु:ख पाता। जब प्राणी में माया मत निकलकर सतस्वरुप संतमत आता तब प्राणी आवागमन के महादु:ख से मुक्त होता और सतस्वरुप वैराग्य का बहुत सुख पाता। ।।टेर।।

तोटा लावा सुख दु:ख मेहेमा ।। निंद्या सुण मुरझावेगा ।। १ ।।

जब तक प्राणी का माया मत है याने प्राणी के मन और पाँच आत्माओंको त्रिगुणी माया के सुख की चाहणा है तबतक प्राणी को तोटा,दु:ख,निंद्या होती है तो उसका जीव मुरझा जाता और नफा सुख,महिमा होती ता उसका जीव फुलता। जब प्राणी का संतमता आता याने ही माया के मत का गलतानपणा आता तब प्राणी को तोटा,दु:ख निंद्या से उसका जीव मुरझाता नहीं और नफा,सुख,महिमा से उसका प्राण फुलता नहीं ऐसा उसका मत सुख-दु:ख से न्यारा सतस्वरुपी रहता। ।।१।।

बस्ती ऊजड़ ऊजड़ बस्ती ।। गोतस जगत देखावेगा ।। २ ।।

जैसे जगत के सभी नर-नारी संसार में गोत परिवार की मायावी बस्ती पकड्ते। ऐसी बस्ती प्राण को गलतान मत याने संतमत आने पर उजड जाती और उस उजडे हुए बस्ती में जगत के सभी नर-नारी जीवब्रम्ह है,परमात्मा के हंस है ऐसे दिखने लगता। उसे जगत के सभी जीव,जीवब्रम्ह है और में भी जीवब्रम्ह हुँ इसलिए ये सारे जगत के लोग मेरा गोत है और उसमें जो रामस्नेही है वह मेरा परिवार है ऐसा दिखने लगता। ।।२।।

जीवत मूँवा मूँवा जीवे ।। भरमा की भस्म चढावेगा ।। ३ ।।

युगान युग से प्राणी माया गुणो से जीवीत है। उसे गलतान याने संतमता आने पर उसका माया मत मर जाता इसप्रकार प्राण जीवीत होकर भी माया मत से मरा रहता,उस प्राण में जो संतमत मरा था वह संतमत,संतमत पाने से जिवीत हो जाता और वह संत,संतमत के बल से माया के भ्रम को भस्म कर देता। ।।३।।

च्यारू खाण बाण सब मांही ।। अेकी ब्रम्ह दिखावेगा ।। ४ ।।

जब प्राणी को गलतान मत आता याने संतमत आता तब उसे सभी जरायुज,अंड्ज,अंकुर उदबीज ऐसे चारो खाणियोंके प्राणियोंमें और परा,पश्यंती,मध्यमा,वैखरी ऐसे चारो बाणियोंके प्राणियों में एक ही सतस्वरुप ब्रम्ह दिखता। ।।४।।

तीनुं चूर चढया गढ ऊपर ।। सुंन मे सहर बसावेगा ।। ५ ।।

संतमत आने पर संतमतवाला प्राण मृत्युलोक ,पाताललोक,स्वर्गलोक सभी को चुरकर

दसवेद्वार के सुन्न में शहर बसाता याने सुन्न में घर बसाता ।।५।।

जन सुखराम संत मतवाळा ।। जोत सुं जोत मिलावेगा ।। ६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,ऐसे संतमतवाले यहाँ पर अभी जैसे माया के कारण जीवब्रम्ह और होणकाळ पारब्रम्ह अलग-अलग रहते वैसे सतस्वरुप ब्रम्ह में जीवब्रम्ह यहाँ के माया के सरीखे अलग-अलग नहीं रहते जैसे ज्योत में ज्योत मिल जाने पर मिलाई हुई ज्योत मिले हुए ज्योत से अलग नहीं रहती,एक हो जाती ऐसा संत मतवाला और सतस्वरुप एक हो जाता। ऐसा ही वहाँ पर सतस्वरुप और जीवब्रम्ह का वैराग्य स्वभाव एक सरीखा रहता। वह माया के समान भिन्न नहीं रहता। ।।६।।

१६६

।। पदराग हिन्डोल ।।

जनसा ठग न कोई हो

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतस्वरुप आनंदपद के संत सरीखे ठग होनकाल सृष्टी में दुजे कोई नही। ये संत बडे फासीगर याने फँसानेवाले है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,आदि से मुल दो पद है।

१)सतस्वरुप आनदंपद २)होनकाल पारब्रम्ह पद

होनकाल पद में अधिक है इच्छापद+ जीवब्रम्ह पद ऐसे दो पद है ।

जीवपद में जीव के साथ आदि से मन तथा शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध ऐसी ५ आत्मा है। जीव यह ब्रम्हस्वरुप है तथा उस जीवब्रम्ह के साथ मन और ५ आत्मा ये माया है। इसप्रकार आदि से दो पद में सतस्वरुप ब्रम्ह,होनकाल पारब्रम्ह,जीवब्रम्ह ये ब्रम्ह हे तथा इच्छा और जीव के साथवाली ५ आत्मा और मन ऐसे मरनेवाली सात माया है। सतस्वरुप ब्रम्ह,होनकाल पारब्रम्ह तथा जीवब्रम्ह ये तीन ब्रम्ह कभी न मरनेवाले याने अमर है। इच्छा माया यह पारब्रम्ह के साथ रहती और मन,शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध ये जीवब्रम्ह के साथ रहती। ये सातो माया,ब्रम्ह के आसरे रहती इसलिए जिंदा दिखती। आसरा दिए हुए ब्रम्ह ने इन माया का साथ निकाल लिया तो उन माया को उनकी मूल मृतक स्थिती प्राप्त हो जाती। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,आदि से सतस्वरुप आनंदपद,होनकाल पारब्रम्ह,इच्छा माया,जीवब्रम्ह,मन और ५ आत्मा इन सभी को सुख चाहिए रहता। सतस्वरुप आनंदपद को जीव सदा सुख में रहे तथा कभी काल के दुख में नही पडे यह चाहना है। इसमें सतस्वरुप को सुख मिलता। होनकाल पारब्रम्ह को जीव कर्मी बने और उन जीवोंको उनके कर्मोद्वारा कष्ट पडते रहे तथा आवागमन के चक्कर में फँसकर होनकाल सृष्टि में ही अटके रहे यह चाहना है। इसमें होनकाल पारब्रम्ह को सुख मिलता। इच्छा याने त्रिगुणी माया को निराकारी जीवब्रम्ह साकारी देह धारण करके उपजे और माया में पुरे रचेमचे और खपे ऐसी चाहना रहती। उसमें इच्छा को सुख मिलता। जीवब्रम्ह को सदा,अनंत,बिना दुख के तृप्त अमर सुख चाहिए।

जीव साथवाले मन और ५ आत्मा से बिछ्ड गए तो ये मृतक हो जाते। इसलिए जीव,मन और ५ आत्मा से कभी बिछ्डे नही तथा जीव साकारी माया में सदा पडे रहे जिससे मन तथा ५ आत्मा को रजोगुण,सतोगुण और तमोगुण के मायावी वासना के सुख मिलते रहेगे। ये चाहना रहती। ऐसे सभी को अलग अलग सुख चाहिए इन सुखों की चाहणा के लिए जीव को सभी होनकाल माया में ठगाके अटका के रखते।

जनसा ठग न कोई हो ।। साधो जनसा ठग न कोई हो ।।
बड़ा पासीगर हो साधो ।। जनसा ठग न कोई हो ।। टेर ।।

अपने सुखो के लिए होनकाल पारब्रम्ह,इच्छा,मन और ५ आत्मा,जीव कर्मी बने और साकारी सृष्टी में आवागमन के चक्कर में उलझे रहे इसलिए ठगाते रहते और सभी जीव उसमे ठगे जाते रहते। सतस्वरुपी परमात्मा को जीव होनकाल पारब्रम्ह,इच्छा,मन और ५ आत्माओंके विकारी स्वभाव से ठगे जा रहा और दुख पा रहा इसका दुख होते रहता इसलिए सतस्वरुप रामजी शरण आये हुए जीवों को इन होनकाल पारब्रम्ह,इच्छा,मन और ५ आत्मा ऐसे आठो ठगो के चंगुल से निकलने का भेद देते। उस भेद के आधार से इन आठो ने जो जो ठगाने की विधियाँ बनाई उसी विधियों का उपयोग लेकर हंस उनके सामने,उनको फँसाकर उनके चंगुल से बाहर निकल जाते और महासुख के अमरपद में जाते। इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,सतस्वरुपी जन के समान होनकाल में दूजा कोई बडा ठग नही हैं। यह संत सहज में होनकाल पारब्रम्ह,इच्छा,मन और ५ आत्मा को फँसाकर होनकाल पार कर देते ऐसे संत बडे फाँसीगर है,जो इन ठगो के फाँस काट देते और इन ठगो को ही ठग लेते। ।।टेर।।

तीन लोक बेराटज ठगीयो ।। ममता मंछया सोई हो ।। १ ।।

जन कैसे बडे फाँसीगर है इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कुछ दाखले दिए है, होनकाल पारब्रम्ह ने और इच्छा ने भोग करके जिसमें जीव जनमेंगे और मरेंगे ऐसी मायावी साकारी सृष्टी बनाई। उस साकारी सृष्टी में मन की ममता याने त्रिगुणी माया से उपजी हुई वस्तू से मेरेपन का लगाव तथा मन की मनछा याने त्रिगुणी माया से पैदा हुई वस्तु प्राप्त होवे इसकी चाहना लगी रहे ऐसे विकारी सुख कि तीन लोक कि सृष्टी बनाई। इसी साकारी सृष्टी का फायदा जन ने अपने साथ जो मन और ५ आत्मा आदि से जुडे थे उनको सदा के लिए निकालने के लिए उपयोग में लाई। इस खंड में धरती पर जन का शरीर है। जन को, शरीर को होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा के चंगुल से नही निकालना है, उसे उसके हंस को निकालना है। इस समज का आधार लेकर सतस्वरुप के भेद से शरीर को खंड याने साकारी सृष्टी बना लेते और नाभी में हंस अपने ब्रम्हतत्व से ५ आत्मा को उखाड्कर अलगकर देते और आगे जन का हंस स्वर्ग के रास्ते से चलकर त्रिगुटी में मन को निकाल देते। इसप्रकार होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा ने बनाए हुए साकारी खंड के

समान ही देह में खंड बनाकर जिस मन और ५ आत्मा के आधार से होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा जीव को युगानयुग फँसाते आए और फँसाते रहेंगे उस मन और ५ आत्मा को ही उखाड देते ऐसे जन सभी फाँसीगरो से बडे फाँसीगर है। जीव के साथ मन आदि से है। मन को त्रिगुणी माया से तथा त्रिगुणी माया से उपजी हुई वस्तूओं से मेरेपन का लगाव रहता। जैसे–मेरा घर,मेरा धन,मेरी पत्नी,मेरा पुत्र,मेरा कुल,मेरा राज आदि। ये घर,धन,पुत्र,पुत्री,राज,कुल सभी माया है। ये सभी त्रिगुणी माया से बने है ऐसे त्रिगुणी माया के वस्तुेओंके लगाव को ममता कहते है। यह ममता त्रिगुणी माया के लगाव से हंस को होनकाल में फसाके रखती रहती। इसीप्रकार जीव के मन को त्रिगुणी माया से और त्रिगुणी माया से उपजी हुई वस्तुये मेरी बने यह चाहना रहती। उसके इस चाहना को मंछा कहते। जैसे–किसी के पास घर नहीं तो मेरा घर बने,एक घर है तो दो घर बने, धन नही तो मेरे पास धन आवे,राज नहीं तो मेरे पास राज आवे,मुझे पत्नी मिले,मुझे पुत्र होवे ऐसे अनेक प्रकार की मंछा रहती। इस मंछा को पूर्ण करने में जीव होनकाल में फँसा रहता। ऐसी यह ममता और मंछा मन,जो जीवो का राजा बनके बैठा है उसके बल से जबरी बनके रहती। मन का बल नहीं मिला तो यह ममता और मंछा बलहीन बन जाती याने ममता और मंछा यह मन के आधार से है। ।।१।।

मन सरीसा भूपत ठगीयो ।। चडग्या गढ पर दोई हो ।।२।।

मन ने सभी जीवोंको ५ आत्मा के ५ विषय इन सरदारोद्वारा तथा अपने काम,क्रोध,लोभ, मोह,मत्सर,अहंम स्वभाव से जेर कर रखा है। इस मन को ५ विषयो में तथा काम,क्रोध, लोभ,मद,मोह,मत्सर,अहंम आदि चिजों में भारी सुख मिलता। इसलिए यह मन सभी जीवो को गुलाम बनाता और होनकाल में रखता और उन सभी जीवो का राजा बनकर खुद के माया के सुख के लिए जीव को अपने हुकूम में रखकर ठगते रहता। जब की यह मन जीव के आधार से ही जिंदा है और जिंदा रहता ऐसा जुलूम करता।संत सतशब्द के भेद के आधार से अपने देह को खंड ब्रम्हंड बनाकर मन के ५ विषयी सरदारो को नाभी में तथा मन को त्रिगुटी में अपने जीवब्रम्ह तत्व से सदा के लिए अलगकर खतम् कर देते और जहाँ मन,५आत्मा,ममता,मनछा पहुँचती नही ऐसे अमर गढपर दोनो भी याने सतशब्द और स्वयम् संत चढ जाते। यह मन जीवब्रम्ह के आधार से जिंदा था और जीवो को ठगता था। वह जीव मन को स्वयम् से अलगकर गढपर निकल जाने से मर जाता। वह मर जाता इसलिए उसके बल पर जो ममता और मनछा सेठी बनी थी वह दोनो भी मर जाती। ऐसे जन जिस मन,ममता,मनछा ने सब जगत के जीवों को ठगकर रखा है उन्हें सतस्वरुप के आधार से ठगकर महासुख का पद प्राप्त करते। ।।२।।

पांचाँ कूं ठग राह लगाया।। पचीसुं सब लोई हो ।।३।।

पाँच याने शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध ये आत्माएँ हंस के साथ आदि से है तथा हंस के ही

कारण जिवीत है। ये आत्माएँ हंस को अपने वश रखकर अपने विकारी सुखोंके लिए त्रिगुणी माया के कर्म कराती और हंस को कर्मो के बस कराती जिससे हंस युगानयुग से आवागमन के चक्कर में पडता। इसप्रकार ये ५ आत्मा सुखों के लिए हंस को कर्मो में डालकर आवागमन के चक्कर में फँसाते रहती। संत सतशब्द के आधार से देह को ३ लोक का बेराट बनाकर नाभी में ५ आत्माओं से अलग होकर ५ आत्माओं कि जो मूल मृतक स्थिती है उस स्थिती के रास्ते से लगाकर हंस अमर गढ पर चढ जाते। २५ प्रकृतियाँ ५ आत्मा से जनमती। ये २५ प्रकृतियाँ भी अपने सुख के लिए जीव से कर्म करवाती और जीव को होनकाल में फँसाती। संत सतस्वरुप के आधार से ये २५ प्रकृतियाँ जिस ५ आत्मा से जन्मती उनको ही खतम् कर देते ऐसी ५ आत्माएँ खतम् हो जाने से उनसे जन्मी हुई २५ प्रकृतियाँ अपने आपसे खतम् हो जाती ऐसे संत जो २५ प्रकृतियाँ हंस को होनकाल में फँसाने निकली थी,उन्हें ही मूल से खतम् कर देते ऐसे संत भारी ठग है। ।।३।।

अळा पिंगळा सुखमण ठग के ।। दिया आद घर पोई हो ।।४।।

होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा ने ३ लोक के सृष्टी में गंगा,यमुना,सुषमना बनाई। यह गंगा, यमुना,सुषमना जीव को,जीव आदि में जिस घर से जगत में आया उस भृगुटी के घर में पहुँचाती। उस आदिघर भृगुटी से आदि से माया में जन्मने की विधि है ऐसे गंगा,यमुना, सुषमना जीवो को फँसाती। संतोंने सतशब्द के आधार से जो होनकाल ब्रम्ह और इच्छा ने गंगा,यमुना,सुषमना हंस को आदि घर में पहुँचाने के लिए बनाई। उसी गंगा,यमुना,सुषमना का उपयोग लेकर गंगा,यमुना,सुषमना को आदि घर याने त्रिगुटी में त्यागकर भृगुटी न जाते हुए सिधे त्रिगुटी से निकलकर सदा के लिए विकारी सृष्टी में आने का आदिघर छोड देते। ऐसे संत महाठग है जो गंगा,यमुना,सुषमना हंस को आदिघर पहुँचाके होनकाल में रखने का ठग कार्य करती थी,उसी गंगा,यमुना,सरस्वती का उपयोग संतोने होनकाल पार करने के लिए किया ऐसे संत बडे फासीगर है। ।।४।।

ओऊँ सोऊँ शक्ति ठग के ।। लीया परमपद जोई हो ।।५।।

होनकाल पारब्रम्ह और इच्छा ने ओअम्,सोहम् और साकारी शक्ति बनाई। जीव ओअम्, सोहम् याने साँस से जीवीत रहेंगे और जीव मन और ५ आत्मा के चाहना से शक्ति याने साकारी माया से वासनीक कर्म करेंगे और होणकाल पारब्रम्ह में गुते रहेंगे इस चाहना से बनाए। संत इसी ओअम् सोहम् याने साँस का आधार लेकर सतशब्द की भक्ति करते और कर्म करनेवाले मन और ५ आत्मा निकाल देते तथा घट में सतस्वरुप वैराग्य प्रगट करके,वासनिक शक्ति को मूल से मारते और परमपद पहुँच जाते। ऐसे संत बडे फाँसीगर है ।।५।।

तीन लोक दस च्यार भवन ले ।। जेसे रेग्या छोई हो ।। ६ ।।

अनेक प्रकार की होणकाल पारब्रम्ह और इच्छा ने बनाए हुए ३ लोक १४ भवन कि हंसो को/जीवो को होनकाल मे फँसा के रखनेवाली सभी बलवान विकारी विधियाँ संतोंने बलहीन कर दी। जैसे जिंदा मनुष्य से प्राण निकल जाता और देह मृतक हो जाता याने बिना चेतन का होता वैसे होणकाल ने जीवो को फँसाने के लिए बनाया हुआ ३ लोक १४ भवन होनकाल को संत होनकाल से निकलने के लिए लगाता। ।।६।।

ब्रम्ह बिष्णु महेसर ठगता ।। हर मिल्या हम दोई हो ।।७।।

होणकाल पारब्रम्ह ने जीवों को होणकाल में लगाके रखने के लिए ब्रम्हा,विष्णु,महादेव बनाए। ब्रम्हा ने जीव का मन और ५ आत्मा जो सुख चाहते वैसे मायावी सृष्टी बनाई और माया के विकारी सुख लेने के लिए चार वेद में अनेक करणियाँ बनाई और जीवों को होणकाल में अटकाया। संत सतस्वरुप के आधार से ब्रम्हा के बनाए हुए सुख चाहनेवाले मन और ५ आत्मा को जीव से अलग करके मार डालते। जिससे ब्रम्हा की होणकाल में अटकाने की विधि निष्काम हो जाती। ब्रम्हा ने चार वेद जीवों को अटकाने के लिए बनाए तो संतो ने अनभै ज्ञान होणकाल से निकलने के लिए जगत में प्रगट किया। ब्रम्हा ने रचना विधि से जगत में जीवों को जन्माया तो संतोंने उसी जन्मे हुए जीवो को सतस्वरुप विज्ञान समझाकर पारब्रम्ह होणकाल परे का हंस बनाया। ब्रम्हाने जीवों को होणकाल में अटकाने के लिए सांख्ययोग लाया तो संतोंने सांख्ययोग में अटके हुए तथा जगत के जीवोंको होणकाल से निकालने के लिए राजयोग प्रगट किया। विष्णू नवविद्या भक्ती में जीवोंको लगाकर होणकाल के विष्णूलोक में पहुँचाकर होणकाल में अटकाता । तो संत सतस्वरुप की दसविद्या भक्ती प्राप्त कर,विष्णू को ठगकर विष्णूलोक के आगे परम पद में निकल जाते ।विष्णू जीवोंको होणकाल में अटकाने के लिए अवतार भेजता तो संत उन अवतारों को ही कैवल्य ज्ञान देकर मोक्ष में पहुँचा देते जैसे रामचंद्र को वशिष्ट मुनी ने होणकाल पारब्रम्ह से निकालकर पारब्रम्ह के परे पहुँचाया। शंकर जीव के स्थुल मायावी शरीर को मारने की विधियाँ पैदा करता जैसे रोग आदि और होणकाल के चक्कर में फँसाता। तो संत सतशब्द के आधार से अपने जीव के घट में मन,५आत्मा को मारने की वैराग्य विधि प्रगट कराते और अपनी मोह,ममता मारते। मोह,ममता मरी की इच्छा मरती,इच्छा मरी की होणकाल मरता इसप्रकार होणकाल को ही मारते। इसतरह शंकर को ठगकर घट में के शंकर के काल गुण का उपयोग संत होणकाल को मारने के लिए करते। शंकर ने जीवो को अटकाने के लिए हटयोग बनाया तो संत जीवोंको होणकाल से निकालने के लिए प्रेम योग प्रगट करते। इसप्रकार हम सतस्वरुपी संतोंने ब्रम्हा,विष्णु, महादेव को ठगा और ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ने बनाये हुए तीन लोक चौदा भवन का उल्लंघन करके आगे गए तब हम सभी संतो को हर याने रामजी मिले। ।।७।।

के सुखराम इसा जन ठग हे ।। सुण लीज्यो सब लोई हो ।।८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ये जन ऐसे ठग है,वह सभी ज्ञानी ध्यानी जगत के नर-नारी सुन लो। ।।८।।

३२५

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

समज समज हंसा सनमुख रेणा

समज समज हंसा सनमुख रेणा ।। ग्यान सुणो सत तोलो बे ।।

जे कुछ ओर बणे नहि तुम सूं ।। तो बचन तो सूल्या बोलो बे ।।टेर।।

अरे हंस,सतपुरुषों को समज और समझकर सतपुरुषों के सन्मुख रह। सतपुरुषों का ज्ञान सुन,वे क्या बोल रहे है वह सतज्ञान से तोल। तुझे उनका ज्ञान नहीं धारण करना है तो मत धारण कर परंतु सतगुरु से कम से कम मीठा तो बोल। ।।टेर।।

जुग की भीड़ बचन थे बोलो ।। सतगुरू पछ नही लावो बे ।।

ज्यांरी तो भक्त पडेली पाछी ।। धक्का गेबका खावो बे ।।१।।

जगत का विचार करके सतगुरु के साथ काल के कड्वे बोल,बोल रहा है,जो तुम्हारे दु:ख मिटा सकता है उससे मीठा नही बोलते,उसका पक्ष नहीं लेते हो। ऐसे हंसोने ब्रम्हा, विष्णु,महादेव,शक्ति इनमें से किसी की भी भक्ति कितनी भी जबरी की हो तो भी वह भक्ति नष्ट हो जाती है और निश्चितही जम के भारी भारी धक्के लगते है। ।।१।।

न्याव कु न्याव देखो मत कोई ।। ना कोई दिष्टंग लावो बे ।।

सत पुरसांरी तो म्हेमाई कीजे ।। क्रणी रो तोल न पावो बे ।।२।।

सतपुरुष न्याय से बोल रहे या बिना न्याय से बोल रहे यह मत देखो ना जगत का न्याय अन्याय का दृष्टांत बताओ। सतपुरुषों की तो महिमा ही करो। उनमें साहेब प्रगटा है इसलिए उनकी करणियाँ अच्छी है या बुरी है यह तोलो मत। ।।२।।

सत्त पुरषारी तो मेहेर गेब की ।। केर गेब होय जावे बे ।।

क्रम हुणारत दोनू धूजे ।। काळ निकट नही आवे बे ।।३।।

सतपुरुषों की मेहेर और कुमेहेर उनके बिना सोचे ही अपने आप हो जाती है। उनकी कुमेहेर कब होगी यह किसी को भी समजता नही। उनसे काल कर्म और होनारथ कर्म दोनो भी धुजते है। इसकारण होनकाल भी ऐसे सतस्वरुप से बैर नही रखता फिर तुम उनकी करणी क्यों तोल के उनकी कु मेहेर लेते हो? ।।३।।

सत्त पुर्सारी तो आस अनादू ।। ब्रम्हा बिस्न सिव चावे बे ।।

जो अवतार देही धर आया ।। वे ही सीस निवावे बे ।।४।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये सभी अनादी काल से सतपुरुषों के दर्शन की आशा करते और उन्हें प्रणाम,दंड्वत करते। आज दिन तक जो-जो विष्णु के अवतार देह धारण करके धरती पर आए उन सभी अवतारों ने सतपुरुषों को सीस नमाया है। ।।४।।

तीन लोक की कळ सब जाणे ।। ब्रम्हा बिस्न लग सोई बे ।।

के सुखराम प्रमपद प्रगट ।। सब सूं न्यारो होई बे ।।५।।

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये देवता तीन लोक चौदा भवन की कलाएँ जानते परंतु सतपुरुष में प्रगट हुआवा परमपद लेशमात्र भी नहीं जानते। ऐसी सतपुरुषों मे प्रगट हुईवी कला होणकाल के कला से न्यारी है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।५।।

३९४

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

सुर जाणे लो सुर जाणे लो

सुर जाणे लो सुर जाणे लो ।। जन कूं ब्होत बखाणे रे ।।

ज्हाँ ज्हाँ हरजन पाँव धरत हे ।। तहाँ तहाँ रिछ्या ठाणे रे लो ।। टेर ।।

जनो को(संतो को),सुर(सभी देव भी)जानते है और सभी देव,सन्तों की महिमा का,बहुत ही वर्णन करते है। जहाँ–जहाँ हरजन(संत)पैर रखते है,वहाँ–वहाँ संतों की सभी देव रक्षा करते है। ।। टेर ।।

ज्यूं सुण कंवर फिरे मन जोखां ।। स्हेर नग्र मे आवे रे ।।

हाकम राव पटायत सारा ।। सबे जाप तो गावे रे लो ।। १ ।।

जिस प्रकार से,राजा का राजकुमार,अपने मन से जोखा(बे जोखम)घूमता है और जिस गाँव और जिस नगर में राजकुमार जाता है,उस–उस गाँव के हाकिम,राव,पटाईत (जहाँगीरदार)ये सभी उस राजकुमार की जापता(रक्षण)करते है। उसी प्रकार,संतों की, सभी देव हिफाजत करते है। ।। १ ।।

अणभे सीस बंध्यो प्रवानो ।। सो जन अेधी होई रे ।।

वां कूँ भुपत निवे जुग जुग मे ।। जन सूं देव दैत सोई रे लो ।। २ ।।

(जिस ऐधी के सिर पर बादशाह का परवाना है),(पूर्व समय में लोगो के पत्र लेकर जानेवाले पत्रवाहक,अपने पगडी में या दुपट्टे में बाँधकर पत्र पहुँचाने के लिए ले जाया करते थे और अभी भी मारवाड देश में पत्र लेकर किसी को जाने को कहा,तो वह पत्र,अपनी सिर की पगडी या दुपट्टे में बांध कर ले जाता है,इसीप्रकार से अनुभव परवाना (जीव तारने का हुद्दा,ओहदा जिसे मिला है।)वे संत,बादशाह के दूत की तरह,रामजी के दूत है। जैसे,बादशाह के दूत के सामने,युगों–युगों से,राजा लोग झुकते आये। उसी प्रकार से,संतो को देव–दैत्य सभी नमन करते है।(इसलिए की संत जन ये,रामजी के दूत है।) ।। २ ।।

ज्यांहाँ ऊर घर मे हर की भक्ति ।। ज्यां सुर पुजन मांगे रे ।।

जे जन कूं राकस नही सतावे ।। तां की आण न भांगे रे लो ।। ३ ।।

जिस हृदय में या जिस घर में,रामजी की भक्ती है,वहाँ कोई भी पाताली देव,अपनी पूजा माँगते नहीं है एवंम राक्षस सताते नहीं और उस संत की(आण),शपथ तोडते नहीं है।(वे देव और राक्षस,संतों की शपथ लगाने पर संतों की शपथ तोडते नहीं है।)।।३।।

ज्ञान बिना नर नार कहावे ।। वां ने खबर न कोई रे ।।
के सुखराम संताँ की म्हेमा ।। देव लोक मे होई रे लो ।। ४ ।।

इस बात की,जो अज्ञानी स्त्री–पुरुष है,उनको खबर नहीं है की,संतो की कितनी महिमा है,ये अज्ञानी नही जानते है परन्तु देव जानते है। वे देव संतों की महिमा करते है और अज्ञानी मनुष्य,संतो की निन्दा करते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि, संतों की महिमा तो,देव लोक में होती रहती है,(देवताओं के लोक में,संत जिस लोक में जाते है,वहाँ के देवता,संतो की महिमा,आगत–स्वागत करते है ।)।।४।।

४०९

।। पदराग केहरा ।।

उन सुरत की बलिहारी हो
उन सुरत की बलिहारी हो ।। लगी नाव उर धारा हो ।। टेर ।।

जिसके हृदय में,राम नाम की ध्वनि लग गयी है,उन पर मैं अपना प्राण,न्यौछावर करता हूँ। ।। टेर ।।

जिण मुख रसना राम केहत हे ।। धिन जन यो सेंसारा हो ।।
चरण बंधा सूं पाप झडत हे ।। भागे भरम अंधारा हो ।। १ ।।

जिसके मुँह में जीभ,रामनाम कहती है,वे संत संसार में धन्य है। ऐसे संतों के चरणों की वंदना करने पर,पाप झड जाते है और भ्रम का अंधेरा भाग जाता है। ।। १ ।।

सेस महेस बिसन को धन हे ।। सो जन हिरदे धार्‌या हो ।।
वो जन कूं सब देवत बंदे ।। धिन धिन भाग हमारा हो ।। २ ।।

जो शेष,महादेव और विष्णु इन सब का जो धन है,(ये शेष,महादेव और विष्णु जिस रामनाम की भक्ति करते,ऐसे शेष,महेश एवं विष्णु के धन को),जनों ने(संतों ने)रामनाम को हृदय में धारण किया,उन संतो को,सभी तैंतीस करोड देव वन्दना करते है,वह धन मुझे मिला है इसलिए मेरा भी भाग्य,धन्य–धन्य है । ।। २ ।।

धरम पुंन जिन जोगज किरिया ।। वाँ जन के सब लारा हो ।।
केवळ राम भजन इधकारी ।। पाँच गिगन चढ मार्‌या हो ।। ३ ।।

धर्म,पुण्य,योग,यज्ञ और सभी क्रिया,उन संतो के पीछे(बाद में)है ।(ये धर्म,पुण्य,यज्ञ,योग और सारी क्रिया,इनकी अपेक्षा संत अधिक है,संतों से ये अधिक नही।)वे संत जन कैवल्य रामनाम का,भजन करने के अधिकारी है। वे संत ब्रम्हांड में चढकर,पाँचो इंद्रियों के विषयों को मार डालते। ।। ३ ।।

के सुखराम आप जन तिरिया ।। ओर अनंता तार्‌या हो ।।
ब्रम्हा बेद भागवत केहे ।। सत्त कर मानो बिचारा हो ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,वे संत स्वयं तो तर ही गये है और भी अनेक अनंत जीवों को तारे है और तारेंगे,यह बात ब्रम्हा ने बेद में और वेद व्यास

ने,भागवत में कही है। इसे सत्य समझकर मानो और इसका विचार करो। ।। ४ ।।

४१८

।। पदराग केदारा ।।

वारी वारी आया हे हंसाँ काज

वारी वारी आया हे हंसाँ काज ।। संत बड़ा महाराज ।। टेर ।।

आदि सतगुरु संत बडे महाराज है। ये सतगुरु हंसो को तारने के लिए समय-समय पर जगत में पधारते है ऐसे जिवो को तारनेवाले संत धन्य है,धन्य है ।।टेर।।

जे जे नर जुग राम पुकारे ।। से मेरा सिरताज ।।

बड़ा बड़ा जन संत समाधी ।। तां कूं मेरी लाज ।। १ ।।

जो-जो नर रामनाम पुकारते है वे मेरे सिर के मुकुट है और जो जो बडे बडे संत रामनाम पुकार कर समाधी देश में आदघर में पहुँचकर रहते है तथा मैं काल के दुख दरिद्री में न पडु इसकी लाज रखते है इसलिए वे धन्य है,धन्य है ।।१।।

तन मन धन सब अर्पण दीजे ।। भजन कीजे बाज ।।

सतगुरू बेचे मे बिक जाऊँ ।। परत न आऊं भाज ।। २ ।।

ऐसे संत सतगुरु को तन,मन,धन अर्पन करो और उन्होंने बताए विधि नुसार बिना विलंब भजन करो। ऐसे भवसागर से तारनेवाले सतगुरु मुझे बेच भी देते होंगे तो मैं बिक जाऊँगा ,वापिस लौटकर कभी नहीं आऊँगा। ।।२।।

संत हमारा मात पिता हे ।। कहे ग्यान सब गाज ।।

के सुखराम च्रणा को चेरो ।। प्रभुजी तारे म्हाणे आज ।। ३ ।।

ये संत सभी के माता-पिता है ऐसा ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ति अवतारोंने ज्ञान में जोर देकर बताया है। ऐसे माता-पिता रुपी संतों के चरणों का मैं चाकर हुँ। इन संतों के कृपा से मेरे प्रभुजी मुझे तारेंगे ही तारेंगे यह मुझे विश्वास हो गया है। ।।३।।

१५०

।। पदराग काफी ।।

हरिजन क्हो किम जाणिये हो

हरिजन क्हो किम जाणिये हो ।। तुम सुणज्यो हो ग्यानी पिंडत आण ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,कैसे जाना जाय,की हरीजन है?वह सभी ज्ञानी एवंम पंडीत सुनो,हरीजन को कैसे पहचाना जाय?।। टेर ।।

करामात सूं पीर कुहावे ।। बचन फळ्यां सिध होय ।।

सांग बणायां भेष भ्रमना ।। जगत रहयां जुग लोय ।। १ ।।

कोई करामाती हो गया,तो भी वह हरीजन नहीं है,उसे पीर समझो और जो मुँख से कहे और उसकी बचन सत्य होने लगे तो,वह भी हरीजन नहीं है उसे सिद्ध समझो और साधू का सोंग(भेष)धारण करके,संसार का भ्रमण करते रहा,तो भी वह हरीजन नहीं है। उस

भेषधारी को,लोगों को भ्रम में डालनेवाले ऐसा कहते है। संसार में रहनेवाले,ये भी हरीजन नहीं है,ये संसार के संसारी लोग है। || १ ||

टेल कियां सूं दास कहावे || तपसूं तपसी जाण ||
इंद्रि दवण जत्ति जुग भाषे || मुन मुने सर ठाण || २ ||

साधू संतों की या माँ–बाप की या आने–जानेवालों की,जो टहल(सेवा)करते है,तो वे भी हरीजन नहीं है उसे दास कहो और तपस्या करते है,वो भी हरीजन नहीं है उसे तपस्वी जानो और इंद्रियों का दमन करते है,तो वे भी हरीजन नहीं ,उसे यती कहते है । कोई मौन धारण करके,किसीसे बोलते नहीं,तो वे भी हरीजन नहीं है उसे मौनेश्वर(मौनी) कहते है। ||२ ||

चरचा ग्यान अरथ ब्हो लखले || सो पिंडत जुग होय ||
होण हार होसी सो भाषे || जबलग रिष पद जोय || ३ ||

और जो चर्चा करते है और अनेक प्रकार के ज्ञान का अर्थ समझते है,तो वे भी हरीजन नहीं,वे पंडीत है और जैसी होनी है,वैसा ही होगा,ऐसा जो कहते है,तो वे भी हरीजन नहीं ,वे ऋषी है,ऐसा देखो। || ३ ||

भांजे मांड घडे. फिर पाछो || सो सुण देव कुवाय ||
धारे देहे अनंता अेकी || राकस सिध गत थाय || ४ ||

और इस पृथ्वी को तोड़कर,पुन: पृथ्वी का निर्माण करते है,वे भी हरीजन नहीं है, उसे देव ब्रम्हा और शिव कहते है और अकेले,एक जैसा या अनेक तरह के अनंत शरीर धारण करता है,तो वह भी हरीजन नहीं,अनेक प्रकार के,अनंत शरीर धारण करना,यह सिद्ध की या राक्षस की गती जानो। || ४ ||

उडे. गड़े डूबे जळ माही || मन की कहे सब जोय ||
के सुखराम सिध वे कहिये || देव कळा क्हे लोय || ५ ||

आकाश मार्ग से उड़ जाते है और जमीन में गड़कर,सैंकड़ो कोस आगे जाकर निकलते है और पानी में डूबकर,पानी में रहते है और दूसरों के मन की बात देखकर,सब बता देते है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ये भी हरीजन नहीं परंतु लोग इन्हें सिद्ध कहते है और उनमें कोई देव की कला है,ऐसा लोग कहते है। || ५ ||

१४६

|| पदराग काफी ||

हरिजन सो इम जाणिये हो
हरिजन सो इम जाणिये हो ||
तुम सुणज्यो हो ग्यानी पिडंत आण || हरिजन सो इम जाणिये हो || टेर ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हरीजन तो ऐसे होते है,उसीको हरीजन ऐसे समझो,वह सभी ज्ञानी और पंडित आकर सुनो । || टेर ||

काया खोज सबद तत चीनि || उलट आद घर जाय ||
आठ पोहोर साहेब सूं ताळी || गरक हुवा पद माय || १ ||

वे अपने सारे शरीर की खोज करके और तत्त शब्द पहचान कर,बंकनाल के रास्ते से उलटकर,जो आदी घर गये हुए है,वही हरीजन है और अष्टोप्रहर साहेब से(मालिक से) ताली लगाकर,उस पद में गर्क हो गये है,वही हरीजन है। ||१||

नाव न: केवळ बिन नहि माने || कोट कळा की बात ||
आसा बिना भजे अबनासी || भ्रम कहूं नही जात || २ ||

और इस न केवल नाम के अलावा,दूसरे कोई भी नाम को मानते नहीं और कोई करोड़ों कला बताये,तो भी न केवल नाम के अलावा दूसरी बात को नहीं मानते है ,वे ही हरीजन है और कोई भी आशा(कामना)न रखते हुए,निष्काम होकर(कामना छोड़कर),अविनाशी की भक्ती करते है और इधर-उधर भ्रम में पड़कर,वे कहीं भी नहीं जाते। उसी को हरीजन समझो। ||२||

दवा बेदवा दे कब नाही || मान महोला नाय ||
लागे हे ध्यान ब्रम्ह सूं ताळी || दसवे द्वार घर माहे || ३ ||

और वे किसीको आशिर्वाद या शाप कभी भी देते नहीं और मन में मान और(महोला) (राज सभा में सम्मान की चाहत)भी नहीं रखते,मन में सम्मान की,बिल्कुल भी चाहत नहीं रखते, की,मेरा सम्मान होना ही चाहिए और उनका ध्यान लगकर,ब्रम्ह से ताली लग जाती है और दसवेंद्वार के घर में शब्द और साँस जाकर रहते है। || ३ ||

लागे हे धुन्न नाद सो गाजे || अखंड खंडे नही कोय ||
के सुखराम संत सो कहिये || रता हे ब्रम्ह सूं जोय || ४ ||

और शब्द की ध्वनि लग जाती है और शब्द का नाद गरजने लगता है,वह अखंड गरजता है,वह कभी भी खंडित नहीं होता है,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि,उसे ही संत कहो,जो ब्रम्ह से लगे हुए है,वे ही हरीजन है। || ४||

३२८

|| पदराग भवन ||

समरथ साहेब नित भजो अे हेली
समरथ साहेब नित भजो अे हेली || हर भजियाँ डर सब जाय || टेर ||

ये हेली,हंस को काल से मुक्त करनेवाले समर्थ साहेब को नित्य भजो। हर भजने पर काल का पुरा डर चले जाता। ||टेर||

आठ पोहोर चोसट घड़ी अे हेली || नाँव रहे दिल माय ||
सो साधु जन धिन्न हे हेली || वाँरा चरण छिंवीजे जाय || १ ||

आठो प्रहर चौसट घडी याने चोबीसों घंटा जिस साधु के दिल में नाम रहता ऐसे साधू धन्य है इसलिए ऐसे साधू के चरण जाकर छुओ। ||१||

ध्यान लग्यो ब्रम्हंड मे अे हेली ।। त्रिकुटी सेर मंझार ।।
सो साधु जन राम हे हे हेली ।। वाँ रे नित डोली जे लार ।। २ ।।

जिस साधू का त्रिगुटी शहर के परे ब्रम्हंड में ध्यान लगा है उन संत के साथ नित्य डोलो याने रहो। वे साधू,वे संत,रामजी ही है। ।।२।।

नव दर्वाजा लांग के अे हेली ।। दसवाँ उघाड़े जाय ।।
वे साधु जन केवळी अे हेली ।। वाँरा च्रणा रहो लपटाय ।। ३ ।।

नौ दरवाजे लाँघकर दसवाद्वार खोला है,वे साधु केवली ही है उनके चरण में पडो। ।।३।।

तीन ताप जन जीतिया अे हेली ।। नव तत्त लिंग सरीर ।।
सो जन अवगत आप हे अे हेली ।। वाँ सूँ मिलत न किजे धीर ।। ४ ।।

आधी,व्याधी,उपाधी ये तीन ताप जित गए है और नौ तत्त लिंग शरीर मिटा दिया है ,वे संत स्वयम् अविगत है उनसे मिलने मे देर मत करो। ।।४।।

जन सुखदेवजी क्हे सांभळो अे हेली ।। कर सतगुरा की सेव ।।
पुंछावे निजधाम कूं अे हेली ।। ज्याँ हे निरंजन देव ।। ५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,हे हेली,(सुरत भवरी)सुनो,ऐसे सतगुरु की सेवा करो वे तुझे जहाँ निरंजन देव है उस निजधाम को पहुँचा देंगे । ।।५।।

११९

।। पदराग बिलावल ।।

अेक घड़ी आधी घड़ी
अेक घड़ी आधी घड़ी ।। हर को ध्यान धर हे ।।
वां सरभर जिग जोग जप ।। कोऊ नही कर हे ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो कोई मनुष्य सुख प्राप्त करने के लिए सृष्टी में के अश्वमेघ यज्ञ पकडके एक भी यज्ञ न छोडते सभी, यज्ञ के नियम में एक भी भुल(गलती)न करते साधेंगा। उसीतरह सृष्टी में के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इन्होंने बताए हुए सभी जप जपेगा और सुख प्राप्त करेगा तो,आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जो संत एक घंटा या उससे भी कम ऐसा आधा घंटा भी हर का याने सतस्वरुप रामजी का ध्यान धरेगा ऐसे संत को प्रगट होनेवाले सुख यह सभी यज्ञ,सभी जोग,सभी जप साधनेवाले मनुष्य के सुखो से बहुत अधिक रहेंगे।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,यह सभी यज्ञ,जोग,जप साधने में अनंत कष्ट पडते परंतु सतगुरु ने बताए हुए सतस्वरुप हर का ध्यान साधने में थोडे से भी कष्ट पडते नहीं, सहज में साधते आता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,आधा घंटा या एक घंटा ध्यान करनेवाला हंस यह जल्दी से जल्दी अमरलोक के देश में जाएगा और वहाँ सदा के लिए महासुख भोगेगा परंतु सभी यज्ञ साधनेवाला,सभी जोग साधनेवाला,सभी जप साधनेवाला कभी भी अमरलोक में जाएगा नहीं,यही स्वर्गादिक के सुख भोगेंगा और

सुकृत खतम होनेपर बारबार गर्भ में(आके)चौरासी लाख योनि का महादु:ख भोगेगा और सदा के लिए काल के जबडे में पडा रहेगा।

यज्ञ,जोग,जप करने से जो सुकृत/पुण्य जमा हुए उससे जो सुख मिलेंगे वो सुख कम रहते और जिसने आधा घंटा या एक घंटा हर का याने रामनाम का स्मरण किया,ध्यान किया उससे जो सुकृत होते उस सुकृत से जो सुख मिलते वो इनके सुखो से जादा, बहुत अधिक रहते। यह ने:अंछर माया में भी सुख देता और अमर लोक में भी सुख देता। ।।टेर।।

अडसट तीरथ न्हाईये ।। नित्त न्यात जिमावे ।।
तोई छिन भर ध्यान के ।। कोई जोड़े न आवे ।। १ ।।

जो कोई स्त्री–पुरुष सुख प्राप्त करने के लिए अडसट तीर्थ में स्नान करेगा और जातीवालो को नियमित प्रेमप्रीत से और आदर से भोजन प्रसाद देके सुख प्राप्त करेगा ऐसे सुखों से जो कोई संत सतस्वरुप रामजी का ध्यान सिर्फ क्षणभर के लिए करेगा और उससे उसे जो सुख मिलेगा यह सुख अडसट तिर्थो में किए हुए स्नान से प्राप्त हुए सुख से अधिक रहेगा।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह अडसट तीर्थ स्नान करने में और जातीवालो को प्रती दिन प्रेमप्रीती से और आदर से भोजन प्रसाद देने में अनंत कष्ट पडते परंतु सतगुरु ने बताए हुए सतस्वरुप हर का ध्यान साधने में थोडे से भी कष्ट पडते नहीं वह सहज में साधते आता। उसी तरह सुखरामजी महाराज कहते कि,सिर्फ क्षणभर के लिए सतस्वरुप रामजी का ध्यान करनेवाला हंस यह जल्दी से जल्दी अमरलोक में जाएगा और वहाँ सदा के लिए कुद्रती महासुख भोगेगा परंतु सभी अडसट तीर्थ साधनेवाला और जातीवालो को प्रतिदिन प्रेमप्रीत से और आदर से भोजन प्रसाद देनेवाला कभी भी अनंत महासुखों के अमर देश में जाएगा नहीं। यह तीन लोक में ही सुख भोगेगा और ८४ लाख योनी का दु:ख भोगेगा। ।।१।।

लाख बरस लग तपसूं ।। पच इंद्रि मारे ।।
तांसू इधको नाव हे ।। जे जन हिरदे धारे ।। २ ।।

जो संत अपने हंस के हिरदय में सतगुरु ने बताया हुवा ध्यान सिर्फ धारण करुँगा परंतु ध्यान जरासा भी करेगा नही इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते, ऐसे संत को जो सुख प्राप्त होगा वह सुख लाखों वर्षतक पचपच के पाँचो इंद्रियें मारने की कठिण तपश्चर्या करनेवाले तपस्वी को प्राप्त हुएवे सुखो से अधिक रहेगी।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,लाखो वर्ष तक पचपचके पाँचो इंद्रिये मारने की कठिण तपश्चर्या साधने में अनंत कष्ट पडते परंतु सतगुरु ने बताए हुए सतस्वरुप हर का ध्यान साधने में जरासेभी कष्ट पडते नही वह सहज में साधते आता।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,जो संत हंस के हिरदय में सतगुरु ने बताया हुआ ध्यान सिर्फ धारण करेगा वह जल्दी से जल्दी अनंत महासुखों के अमर देश में जाएगा और वहाँ सदा के लिए अनंत कुद्रती महासुख भोगेगा परंतु लाखों वर्षतक पच पच के पाँचो इंद्रिये मारने की कठिण तपश्चर्या करनेवाला अमरलोक में कभी भी जाएगा नहीं। यहाँ ही तीन लोक में माया के सुख भोगेगा और गर्भ के कठिण दु:ख भोगेगा।।२।।

क्रोड जतन करणी करे ।। बिंद राखे मांही ।।
के सुखदेव तोई नाव की ।। चितवन सम नाही ।। ३ ।।

जो कोई जती कठिण करणी और करोडो जतन करके अपना विर्य शरीर में से बाहर निकलने देगा नही,घट में ही रोख के रखेगा ऐसे करणी से उस जती को जो सुख प्राप्त होगा उसके अलावा जो कोई संत सहज में सतगुरु ने बताएनुसार हर का ध्यान न करते ध्यान करना ऐसे मन में चितवन करेगा और सुख प्राप्त करेगा उस सुख के बराबरी का भी जती का सुख रहेगा नही, कम रहेगा।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते की, कठिण करणी और करोडो जतन करके अपना विर्य शरीर में से बाहर गिरने देगा नहीं, घट में ही रोखके रखेगा ऐसे जती को जत साधने में अनंत कष्ट गिरते परंतु सतगुरू ने बताया हुआ सतस्वरूप परमात्मा का ध्यान मन में चितवन करने में थोडे से भी कष्ट पडते नहीं ।वह सहज में चितवन करते आता।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते जो कोई संत सहज मे सतगुरू ने बताये नुसार हर का ध्यान न करते ध्यान करना ऐसे मन में चितता वह जल्दी से जल्दी अमरलोक में जाएगा और वहाँ सदा के लिए अनंत कुद्रती महासुख भोगेगा परंतु जो करोड़ो वर्षो तक जत पालता वह कभी भी अमर देश को जाएगा नहीं। यही स्वर्गादिक के सुख भोगेगा। सुख भोगने पर और सुकृत खतम होने पर बारबार गर्भ में पडके ८४ लाख योनि के महादु:ख भोगेगा और सदा के लिए काल के जबड़े में पड़ा रहेगा। ।।३।।

१९०

।। पदराग बसन्त ।।

कहे गीता हो सुण बेद च्यार
कहे गीता हो सुण बेद च्यार ।। हर नाँव तत्त सुई तत्त सार ।। टेर ।।

गीता भी कहती है और चारो वेद भी कहते है कि,रामनाम होनकाल पारब्रम्ह तत्तसार का भी तत्त सार है। ।।टेर।।

पुराण अठारे भरत साख ।। शिव सेंस संत सो केहे भाख ।।
ग्रंथ ओर सब जोय जोय ।। सब माँहि बीज कण नाँव होय ।। १ ।।

वेद व्यास,अपने अठराह पुराण में रामनाम तत्तसार है यह साक्ष भरता है। शंकर,शेषनाग और सभी संत रामनाम तत्तसार का सार है इसलिए जपते है करके बोलते है। सभी बडे से बडे ग्रंथ देख लो उन सभी में तत्तसार का तत्तसार रामनाम यह बीज शब्द है यह

बताया है। ।।१।।

आन धरम सब मिटे हे सोय ।। सुण राम नाम जुग अटळ जोय ।।
परा परी लग संत क्राय ।। सत्त राम नाम जन केत जाय ।। २ ।।

रामनाम छोड्कर सभी अन्य धर्म सम-समय पर मिट जाते है परंतु यह रामनाम का धर्म अटल रहता कभी मिटता नहीं ऐसा यह सभी धर्मो का तत्तसार है। परापरी से याने आदि से अभी तक जो भी संत बने,वे सभी संत रामनाम ही सभी धर्मो में सत्तधर्म है ऐसा कह गए है। ।।२।।

चवदे पुरब कथा जोय ।। हर रामायण सा ग्रंथ होय ।।
सब बाँच बाँच सो केहे धाम ।। सतस्वरूप सम नहिं किसन राम ।। ३ ।।

चौदह पुरब की बात देखो या रामायण ग्रंथ की बात देखो ऐसे सब बडे बडे ग्रंथ बाच-बाच कर देखो सभी ग्रंथ सत्तधाम की ही बात कहते और सतस्वरुप राम समान रामचंद्र और कृष्ण अवतार भी नहीं है ऐसा कहते है। ।।३।।

म्रत लोक सुर सेंस माँय ।। जिग ज्याग जप तप क्राय ।।
केत देव सुखदेव पेख ।। निजनाँव सम नही अवर देख ।। ४ ।।

इस मृत्युलोक,स्वर्गलोक,शेषलोक याने पाताल में इस निजनाम के समान यज्ञ,जोग,जप, तप कोई नहीं है ऐसा ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आदि सभी देव कहते है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।।४।।

२१८

।। पदराग बसन्त ।।

मन भजिये हो नित राम नाम
मन भजिये हो नित राम नाम ।। जाँसे सकळ मनोरथ सजे काम ।। टेर ।।

अरे मन,नित्य रामनाम भज,रामनाम नित्य भजने से तेरे मोक्ष पाने के और संसार के सुखों के सभी मनोरथ पुरे होंगे सभी काम पुरे होगे। ।।टेर।।

ब्यास किसन रूघनाथ जाण ।। ध्रु नारद सिनकादक आण ।।
ब्रम्हा बिसन महेश देव ।। नित्त पारब्रम्ह की लगे सेव ।। १ ।।

व्यास,कृष्ण,रघुनाथ, ध्रुव, नारद, सनकादिक, ब्रम्हा,विष्णु,महेश नित्य पारब्रम्ह कि भक्ति करते। ।।१।।

रूषमांगद अर्जुन जन जाण ।। भिष्म द्रोण सुख संजय बखाण ।।
प्रहलाद पंडव अमरिष होय ।। अेभी भजे नित्त राम जोय ।। २ ।।

रुखमानंद, अर्जुन, भिष्म, द्रोणाचार्य, शुक्राचार्य और संजय, प्रल्हाद,पांड्व,अमरीष ये सभी नित्य रामनाम का भजन करते ।।२।।

पारासर रिष रूम जाण ।। प्रथु साळ जन भ्रथ मान ।।
हंस ध्वज जुग रूप सूर ।। हर गाय परसीया ब्रम्ह नूर ।। ३ ।।

पाराशर,लोमेशऋषी,पृथू,शालीभद्र,भरत,ऋषभदेव का पुत्र जडभरत,रहु राजा का गुरु, रामचंद्र का सौतेला भाई,भरतखंड बसानेवाला हंसध्वज, जगरुप ये सभी ब्रम्हा,विष्णु, महादेव आदि देवता,हर नाम का स्मरण कर सतस्वरुप ब्रम्ह का तेज समझ। ।।३।।

पिपळाद हरी किबलाद होय ।। रिष रिषभ देव अवतार जोय ।।
जन केत देव सुखदेव जान ।। सब समजवान भये लीन आन ।। ४ ।।

पीपलाद,हरी,किंवलाद और ऋषभदेव,चोबीस अवतार ऐसे जो भी समझवान हुए जिसे काल के दु:ख समझे,वे सभी रामजी के भजन में लिन हो गए ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।४।।

३९९

।। पदराग बसन्त ।।

तो भी नही हो इण नांव सम

तो भी नही हो इण नांव सम ।। बिना गुरू भेद न पावे गम ।। टेर ।।

त्रिगुणी माया की कोई भी करणी,क्रिया,जप हरीनाम के समान नहीं है। यह हरीनाम की समझ सतगुरु से भेद पाने से मिलती। ।।टेर।।

बन मध जाय कर ध्रत ध्यान ।। छोडे जक्त गोत कुळ सरब आण ।।
आसण साजे अनेका खूंद ।। नव द्वार रखे श्रब बूंद ।। १ ।।

सारा संसार,गोत्र और कुल त्यागकर बन में जाता,वहाँ अनेक प्रकार के आसन,साधना एवंम आँखें,कान,नाक,मुख,गुदा,लिंग यह नौ द्वार बंद कर भृगुटी का ध्यान करता और भृगुटी में लाखों वर्ष तक बैठता फिर भी यह सभी करणियाँ हरी के नाम समान नहीं है। ।।१।।

करोत झाँप देहे कंवळा चाड़ ।। प्रबत बिचे गुफा तन बाड़ ।।
कठण तप देहे अंग गाळ ।। फोडे भ्रम भ्रांत सो अग्यान पाळ ।। २ ।।

गहरे पानी में झाप लेता,काशी में जाकर करवत लेता,अपना शिर उतार कर देवताओं को चढा देता,निरमनुष्य पर्वत के गुफाँ में जाकर रहता,कठीन तपस्या करता,अपना शरीर अग्नी का तपन कर गलाता,सभी भ्रम,सभी भ्रातियाँ और अज्ञान को त्यागता फिर भी यह सभी करणियाँ हरी के नाम समान नहीं है ।।।२।।

पढे चहूँ बेद सो पिंडत होय ।। सरोधा साझ अगम केहे कोय ।।
करले मांड बिनासे आय ।। जो सुणई सकळ ऊर माय ।। ३ ।।

चारो वेद की कली-कली सिख जाता और सिखकर प्रविण पडित बन जाता।स्वरोदय की साधना करता और किसी को सुझेगा नहीं ऐसे अगम की बात बताता । पल में सृष्टी को मिटाकर पुन: सृष्टी जैसे के वैसे बना देता।(जो सुणई सकळ उर माय)फिर भी यह सभी करणियाँ हरी के नाम समान नहीं है ।।३।।

जब तप करे अनेका कोय ।। पुन धर दया अलेखे होय ।।

के सुखराम कहां कहुं झोड़ ।। बिना हरि नांव नही कहूं ठोड ।। ४ ।।

जप,तप अनेक प्रकार के करता,पुण्य करता,दया बेहिसाब रखता। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,मैं तुम्हें कहाँ तक समझाऊ इतनी सभी करणियाँ साधने पर भी बिन हरी नाम हरी के देश में जगह नहीं मिलती। ।।४।।

१५२

।। पदराग जेतश्री ।।

हांती हे झुटो हे झुटो

हांती हे झुटो हे झुटो ।। कोइ फेरे संत अफूटो ।।

हाती हे झुटो हे झुटो ।।टेर।।

आदि से जीवब्रम्ह पद है उस जीवब्रम्ह पद के हर जीव के साथ आदि से ही मदोन्मत हाथी के समान कामी मन है। यह कामी मन जीव को काम विकार में ढकेलता है। जीव काम विकारो में फँसने से काल के महादुख भोगता है ऐसा महादुख हमारे उपर हमारा ही हाथी के समान मदोन्मस्त मन जो आदि से हमारे साथ है वह बिताता है इसलिए यह हमारा मन झूठा है या हमारे लिए धोका है। यह मनरुपी हाथी काम मस्ती में भारी चूर रहता है। उसे काम मस्ती से निकालकर वैराग्य में रखना बहुत कठीन है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत के लोगो को तथा ज्ञानियों को कह रहे की,ऐसे कामी हाथी को जगत के सभी साधु,संत,देवता में से जो बंकनाल से चढता ऐसा अनंत साधु संतों में जो बिरला संत है वही उस हाथी पर स्वार होकर उसे वैराग्य में रखता अन्य होनकाल के किसी साधक से वह मनरुपी हाथी वैराग्य में नहीं रहता। ।।टेर।।

मोरो बदेन आंकस माने ।। साँकळ गिणे न खूंटो ।।

ब्रम्हा बिस्न महेसर खसीया ।। नेकन फिन्यो अफूटो ।।१।।

जगत का हाथी प्राणी कितना भी मदमस्ती में रहा तो भी मोर याने महावत से बंधे जाता । मोर ने बताये हुए अंकुश से डरता। लोह के सांकल से बाँधकर खुटेसे बांधे जाता परंतु यह कामी मनरुपी हाथी यह कैसे भी माया का ज्ञानी जीव रहो उसके ज्ञान से किसी प्रकार के अंकुश को नहीं धारता इसकारण मनरुपी हाथी को ज्ञानी जीव ज्ञान खुटी को बाँध नहीं सकता। ब्रम्हा,विष्णु,महादेव यह कामी मनरुपी हाथी को बैरागी बनाने में मेहनत कर-करके हार गए परंतु इनसे यह कामी मनरुपी हाथी जरासा भी काम से वैराग्य में नही बदला। ।।१।।

षट सो जती दत्त की मईया ।। ऊण सूंई कियो चपेटो ।।

मुन्याँ रिषा घेर घेर राख्यो ।। तोई रेगयो छुटो ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इस मनरुपी हाथी ने पुरुषों में लक्ष्मण,गोरखनाथ, हनुमान,सुखदेव बाद्रायणी,कार्तिक स्वामी,गरुड इन छः ही यतियोंको तथा स्त्री में दत्त की माता सती अनुसया को काम के चपेट में लिया था। इस मनरुपी कामी हाथी को मुनी,

ऋषियों ने घेर-घेरकर काम से दूर रखा था फिर भी इनका कामरुपी मन कामक्रिडा में छुटा ही रहा याने खुल्लाही रहा। ।।२।।

त्यागी तपी सुर्वा ऊपर ।। कोप करे कर तूटो ।।
जुग तो सकळ देखतां भागो ।। अडबड़ बासण फूटो ।।३।।

शुरवीर त्यागी,तथा शुरवीर तपियों ने युगानयुग उनके मनरुपी कामी हाथी को काम से दूर रखा परंतु वह मनरुपी हाथी उलटा शुरवीर त्यागी,तपियों पर कोप कर करके टूटा। देवता,सती स्त्री,ऋषी,मुनी,तपी,त्यागी छोड़कर अन्य जगत के सभी लोग इस कामी मनरुपी हाथी को जैसे मिट्टी का बर्तन टेढा गिरकर फूट जाता वैसे फूटकर उसको काम में से वैराग्य में लाने के पहले ही दूरसे भागते। ।।३।।

ऊलटा होय गिगन में चडीया ।। ज्याँ काटो कर पिटयो ।।
जन सुखराम समाधी पूंता ।। ज्यांहां आपल मर खूटो ।।४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,जो संत उलटकर ब्रम्हंड में चढ गए उन्होंने ही इस मनरुपी हाथीपर कठोरतासे हावी होकर विज्ञान वैराग्य से पीटा ऐसे संत दसवेद्वार ब्रम्हंड में समाधी में पहुँचते तब उनका मनरुपी कामी हाथी अपने आप मर कर समाप्त हो जाता। ।।४।।

१८२

।। पदराग मंगल ।।

जुग बडाई छाड

जुग बडाई छाड ।। नाव निज गावसी ।।
जांके आ सिध्ध पेल ।। सुणो सब आवसी ।। १ ।।

संसार में मिली हुई शोभा,बडाई त्यागकर निजनाम को कोई संत गाएगा उसको अटकाने के लिए सिध्दों से लेकर ब्रम्हा,विष्णु,महादेव तक आएँगे। सभी के प्रथम सिध्दाई अटकाने के लिए आएँगी यह सभी सुन लो। ।।१।।

अणभे होय उच्चार ।। अग्या बोहो लेत हे ।।
यां राखे अे घेर ।। चलण नही देत हे ।। २ ।।

ऐसे निजनाम का स्मरन करनेवाले संत में अणभे याने पद,साखी बोलना शुरु होगा। ऐसा अणभै जागते ही अटकाने के लिए शिष्य,चेले बहुत बनेंगे। वे शब्दों में और प्रश्नों में यही घेर के रखेंगे आगे बढने नहीं देंगे। ।।२।।

सिष चेला सब छाड ।। नांव सूं लागसी ।।
ज्यां देवत चल आय ।। सिध्ध ब्हो जागसी ।। ३ ।।

शिष्य,चेले त्यागकर नाम से लगा तो उस दिन संत से नाम छुडाने के लिए सभी देव चलकर आएँगे और अनेक सिध्दाईयाँ जागृत हो जाएगी। देवता काम करने लगेगे और जो मुख से कहेगें वह होने लग जाएगा। ।।३।।

सिध सूं रीजे नाय ।। देवां कूं फेरसी ।।
तां दिन ब्रम्हा महेस ।। बिस्न सो घेरसी ।। ४ ।।

सिध्दाईयाँ तथा देवोंके चमत्कारोंमें रिझकर अटका नहीं इन्हें वापिस फेर दिया तो उस दिन ब्रम्हा,विष्णु,महादेव आकर नाम छुडाने के लिए घेरेंगे। ।।४।।

यां इतना की रीज ।। मान छिटकाईये ।।
तां दिन केहे सूखदेव ।। ब्रम्ह लग जाईये ।। ५ ।।

इन सभी ब्रम्हा,विष्णु,महादेव की मेहेरबाणी मानना ज्यो छिटका देगा उस दिन आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते,वह संत सतस्वरुप ब्रम्ह में पहुँचेगा। ।।५।।

२०३

।। पदराग जोगारंभी ।।

किस बिध मिलीये हो राम सूं
किस बिध मिलीये हो राम सूं ।। आडा बेरी अपार ।।
जब चालूं हर मिलण कूं ।। ल्हे बिचे मुज मार ।।टेर।।

मैं रामजी से कैसे जाकर मिलू?मैं रामजी को मिलने जाता हुँ तो रास्ते में अपार बैरी आडे आते है और वे मुझे रास्ते में ही मार देते है,कुचल देते हैं। ।।टेर।।

लोभ नदी भारी बहे ।। पींदे सांसा सूळ ।।
पांच पोरायत तीरपे ।। ऊभा कर कर झूल ।।१।।

रामजी के रास्ते में तुफान बहनेवाली लोभ नदी लगती है। उस नदी के तल में चिंतारुपी बडे बडे काँटे है। नदी लाँघू नहीं इसके लिए नदी के किनारे पे पाँच इंद्रीयोंके पाँच विषय पहरा देते याने विषयों मे उकसाने के लिए खडे है। वे रामजी की भक्ति करने में भारी रुकावट डालते है । ।।१।।

मोहो का बंधण साबळा ।। सबळी कर्मा की फोज ।।
काम कटक भारी घणो ।। करड़ी नारी दी मोज ।।२।।

मुझे कुटुंब परिवार के मोह के बंधनो ने मजबूत बाँध के रखा है। मैंने किए हुए पाप कर्मो की फौज मेरे मन में कुबुध्दियाँ प्रगट करती है। मेरे घट में काम देव की बहोत भारी फौज है और स्त्री मौज बहोत करडी है। ये सारे मुझे रामजी के देश जाने नहीं देते। ।।२।।

भ्रम अंधारा बन मे ।। गेलो सूझे नई कोय ।।
सिंघ अग्यान धड़ कियो ।। मे ते न्हारी दोय ।।३।।

मुझमें भ्रमरुपी अंधेरा घनघोर बना है। उसमें मुझे रामजी के देश का रास्ता सुझता नहीं। मेरे घट में अज्ञान रुपीसिंह उछल्या मारता है। उस अज्ञानरुपी सिंह के साथ मेरा,तेरा यह दो बाघिनियाँ रहती है ऐसे–ऐसे बेरी रामजी को मिलने जाता तब रास्तें में लगते है। ।३।

दुर्मत दासी बोहो रे वे ।। नित पित मुज कुं आय ।।
डीग पच दाणू दायली ।। बेठो गेले माय ।।४।।

मुझमें विषय विकारो की अनेक प्रकार की दुर्मती वेश्याएँ रहती है। ये दुर्मती वेश्याएँ मेरी रामजी के ओर जाने की मती पी लेते है। हरी मिलने के रास्ते में झिपिच यह राक्षस बैठा है। वह झिपिच मत हरी के रास्ते में पहुँचानेवाले मत को मार डालता है। ।।४।।

सेंस अठयांसी घाट हे ।। बेरी अंनत अपार ।।
बिषम गेला साहिब दीस ।। ब्हो अंतर उर मार ।।५।।

हरी मिलने के मत के रास्तें मे अठ्यासी हजार ऋषीमुनीयोंके अलग अलग मत बडे –बडे घाट के समान है और भी बेरी अनंत है,अपार है। यह साहेब के तरफ जाने का रस्ता बहुत ही विषम याने बिकट है,वे अंतर में बहुत मार देते है। ।।५।।

जन सुख देवकी बीणती ।। सुणज्यो सतगुरू स्याम ।।
तुम ऊपर नित राखज्यो ।। ज्यूँ पूंतु निजधाम ।।६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बिनती करते है कि,हे सतगुरु स्वामी,आप मेरे उपर मेहेर रखना। आपकी मेरे पर मेहेर रहने से मैं निजधाम पहुँच जाऊँगा। ।।६।।

२११

|| पदराग गोडी ||

माधोजी भक्त कोण बिध धारूं
ओ जुग सेंग फिरे मन आडो ।। किण किण कूं के मारूं ।। टेर ।।

यहाँ माधोजी याने कृष्ण या विष्णु नहीं है। कृष्ण या विष्णु ये जिस मालिक को भजते है ऐसे सर्व सृष्टी और आत्मा के मालिक,केवली भगवंत को संबोधा है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने इस पद में माधोजी याने परमात्मा की भक्ति करने में कैसी–कैसी बाधाएँ आती यह माधोजी याने केवली भगवंत को दु:खी होकर बताया है। हे माधोजी,हे केवल भगवंत,मैं तेरी भक्ति किस विधि से धारण करु?ये सभी संसार,यह मेरा मन तेरी भक्ति धारण करने के आडे आते है। मैं किसे–किसे मारु? ।।टेर।।

काम क्रोध लोभ मन लालच ।। पल पल आण सतावे ।।
जे म्हे भजन भगवत को थांपू ।। तो दुणा होय होय आवे ।। १ ।।

यह मेरा काम,क्रोध,लोभ,लालच,मोह,ममता,मत्सर,अहंकार मुझे पल–पल आकर सताते। हे भगवंत,जब मैं तेरा भजन ध्यान करता हुँ तो ये मेरा काम,क्रोध,लोभ,लालच,मोह,ममता मत्सर,अहंकार हर दम से दुगने हो–हो कर मुझे घेरते और सताते,हे माधोजी मैं किसे–किसे मारु?।।१।।

घर घर गांव हताया माही ।। निंद्या करे सब लोई ।।
आ सुण ताप करारी कहीये ।। धारी धरे न कोई ।। २ ।।

चौक–चौक पर,घर–घर में,गाँव–गाँव में मेरी छोटे से बडे तक सभी स्त्रि–पुरुष निंदा करते है। यह निंदा का ताप याने कष्ट बहुत ही कठोर है ऐसे कडे ताप के सामने तेरी भक्ति धारने में मेरा मन टिक नहीं सक रहा । ।।२।।

ब्रम्हा विस्न महेसर देवा || अे सब पाले आई ||
केवळ भक्त ब्होत हे दोरी || सो कुण निभे मन भाई || ३ ||

ब्रम्हा,विष्णु,महोदव,शक्ति इनके ज्ञानी,ध्यानी,साधु,सिध्द ये सभी मुझे माया के सुखों के परचे चमत्कार बार-बार दिखलाकर तेरी भक्ति करने से अटकाते। ऐसी यह तेरी केवल भक्ति बहुत दोरी है,यह भक्ति निभाना बहुत मुश्किल है। यह किससे निभे जाएगी ऐसा जीव मन से प्रश्न करता है?।।३।।

बेरी घणा सेण नहि कोई || बरजत हे कुळ सारो ||
के सुखराम गुरां बिन जुग मे || सब सूं दुस्मण चारो || ४ ||

ये मेरे कुटुंब परिवार के लोग तेरी भक्ति धारण करने से मना करते है। ऐसे ये सभी संसार,मेरा मन,मेरा काम, क्रोध, लोभ, लालच, मोह, ममता, अहंकार,निंदक,ब्रम्हा,विष्णु ,महादेव के साधु सिध्द,कुटुंब परिवार ऐसे-ऐसे आदि सभी तेरी भक्ति धारण न करने देनेवाले बैरी बहुत है। इनमें तेरी भक्ति को धारन करने में सहायता करनेवाला एक भी सज्जन नहीं है। तेरी भक्ति धारण करने में लगानेवाले सज्जन तो सिर्फ सतस्वरुपी सतगुरु है इसलिए आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,इस संसार में एक सतगुरु छोड्कर सभी काल के मुख में ढकलनेवाले दुश्मन चारा है। ।।४।।

२५०

।। पदराग मंगल ।।

नाव न केवळ कोय

नाव न केवळ कोय || संभावे आय के ||
तां पर अे समसेर || गहे हे जाय के || १ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,यह न केवल नाम,कोई आकर धारण करेगा,तो उसके उपर ये नीचे लिखे गये तलवार उठाकर धरते है। ।।१।।

ब्रम्हा बिसन महेस के || सगत बोलावसी ||
ध्रमराय की फोज || उमंग सिर आवसी || २ ||

ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति(माया को)लेकर आते है और धर्मराय की फौज हुल्लास से शिर के उपर आयेंगे। || २ ||

अठ सिध नव निध जोय || आण अे घेरसी ||
अे सब गूंथे डाव || आप दिस फेरसी || ३ ||

अष्ट सिद्धी और नव निधी इनको साथ मे लाकर,न केवल नाम धारण करनेवाले को घेरा देते है। ये सभी अपने-अपने दाव लगाकर न केवल नाम धारण करनेवाले को,अपने पेंच में लेकर अपनी तरफ घुमायेंगे। || ३ ||

याँ पाँचा की म्हेर || केर सम जाणिये ||
सतगुरू के बिन ग्यान || धाड़ा सब ठाणि ये || ४ ||

इन पाँचो ने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती और धर्मराय इन्होंने अपने उरप मेहेर किया मतलब अपने अंदर बहुत कसर पड गयी। हमारी बहुत हानी हो गयी ऐसा समझो। सतगुरु के ज्ञान के अलावा,इन सबको धाडायती डाकू समझो। ।। ४ ।।

सुख दुख दोनू जीतं ।। रटे निज नांव कूं ।।
से पूंचे सुखराम ।। ब्रम्ह के गांव कूं ।। ५ ।।

यदी कोई सुख और दु:ख,इन दोनो को जीतकर,सुख में खुश मत होओ और दु:ख में नाराज मत होओ। रामनाम यह निजनाम है,इस निजनाम की रटन करेगा,तो वह आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,वे सतस्वरुप ब्रम्ह के गाँव को पहुँचेंगे। ।५।

३१४

।। पदराग कल्याण ।।

साधो भाई मै तो शीश ऊकरडी कीया
साधो भाई मै तो शीश ऊकरडी कीया ।।
भावे नंदो बंदो कोइ जुग मे ।। सब तज निजपद लीया ।। टेर ।।

साधो भाई,मैंने तो मेरा सिर,उकिरडा(घूरा)जैसा बना लिया है। उकिरडा याने जहाँ हर तरह का कुड़ा-कचरा फेंका जाता है,उसे घूरा भी कहते है। जैसे घूरे पर कैसा भी कूड़ा करकट या बुरे पदार्थ कोई डालो,तो भी वह घूरा कुछ कहता नही है, तो उसी की तरह मैंने भी मेरा सिर उकिरडा(घूरा)के जैसा बना लिया है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी साधु भाईयों को कह रहे है की,जगत के लोग मेरी निंदा करे या महिमा करे मैंने ये निंदा या महिमा सुनना सब तज दिया है तथा मैंने काल के परे का महासुख का निजपद लिया है। ।।टेर।।

भूंडो भलो केहे सो केलो ।। मै दोनुं बिध छाडी ।।
सुभ सो असुभ सकळ तजि रीता ।। सुरत साहेब दिस गाडी ।। १ ।।

मुझे भुंडा कहे या भला कहे मैंने दोनो विधियाँ त्यागी है। मैंने त्रिगुणी माया की शुभ देवता की विधियाँ तथा नरक की अशुभ राक्षसी देवता की विधियाँ त्याग दी है और मेरी निज सुरत सिर्फ साहेब के दिशा में गाडी है। ।।१।।

लाज सरम जुग मरजादा ।। अे मो मन नहि भावे ।।
साहेब साध ग्यान की लज्या ।। उलट बोहोत घट आवे ।। २ ।।

साहेब तथा साधुओं के ज्ञान में लगने से जगत के नर-नारी कोई निंदा करे,बुरा बोले यह काल के मुख में डालनेवाली जगत की लाज,शरम तथा मर्यादा मेरे निजमन को भाँती नही। उलटी काल के मुख से निकालनेवाली साहेब तथा साहेब के साधुओं के ज्ञान में कोई कसर नही पडे यह लज्जा मेरे हंस के घट में सदा बहुत आती ।।२।।

तीन लोक का नंदत बंदत ।। अेक न मानु काई ।।
के सुखराम गुरू सत्त म्हाने ।। अेसी चीज बताई ।। ३ ।।

३ लोक १४ भवन के सभी जीव मुझे निंदो या बंदो ये एक भी चीज मैं मानता नहीं। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,मुझे मेरे गुरु ने ऐसी सत्त चीज बताई है जिस कारण मेरी निंदा होने से दु:ख या महिमा होने से आनंद,ये मुझे जरासा भी नहीं होता। ।।३।।

२०

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

अेसे क्हे जुग दाय न आवे

अेसे क्हे जुग दाय न आवे ।। केई साव चोक बतावे रे लो ।। टेर ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इस पद में कहते है की,जिसने मन जिता उसे यह जगत अच्छा नहीं लगता ऐसे मुरख लोग कहते है तथा मन जीता इसपर अनेक होशियारी की बातें बनाते ।।टेर।।

मन जीते तो अेसा व्हे हे ।। हाले न ड़ोले न चाले रे ।।

भोग बिलास करे नही कबहूँ ।। साच न झुट न पाले रे लो ।। १ ।।

जैसे जिसने मन जीता है वह शरीर से हिलता नहीं,डोलता नहीं,चलता नहीं। वह पाँचो इन्द्रियों के भोग विलास कभी करता नहीं। वह सत्य,असत्य,दया,क्रुर ऐसे सभी विषयोंके परे रहता। ।।१।।

माया की क्हे चाय न उनके ।। न सिष साखाँ जोड़े रे ।।

अणभे क्है नही ग्यान बतावे ।। काहूँ सूं हेत न तोड़े रे लो ।। २ ।।

जिसने मन जीता उसे स्थुल माया जैसे धन,राज,कुल,पत्नी,पुत्र आदि की चाहना नहीं रहती तथा वह शिष्य शाखा भी नहीं जोड़ता। वह साहेब के अनुभव बताता नहीं और किसी को साई का ज्ञान भी बताता नहीं वह किसीसे प्रिती भी नहीं करता तथा किसी से बेर भी नहीं करता,ऐसे सभी मुर्ख लोग कहते है। ।।२।।

स्हेर नगर ना बस्ती रेहे ।। नाँ कोई झूँपा बांधे रे ।।

सुणे नही सीखे केहे नही काई ।। सुरत नाँव दिस सांधे रे लो ।। ३ ।।

जिसने मन जीता वह बडे शहर में भी नहीं रहता,छोटे वस्ती में कभी नहीं रहता तथा वह रहने के लिए घर तो क्या झोपडी भी नहीं बांधता। जिसने मन जिता वह किसी से ज्ञान सुनता नहीं,किसी से ज्ञान सिखता नहीं तथा किसी को ज्ञान सिखाता नहीं। वह ऐसे माया के कोई चरित्र में नहीं पड़ता सिर्फ अपनी सुरत सतनाम से साधता। ।।३।।

के सुखराम कोई नही जीता ।। प्रालबध दु:ख देवे रे ।।

बिना भजन सब पळें जासी ।। जीतर युं क्या लेवे रे लो ।। ४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,ऐसा जो करता उसने कोई मन जिता नहीं। वे मनुष्य देह के १०० साल के लिए भोगने को लाए हुए प्रारब्ध कर्म है जैसे वो भोगता,शरीर से हिलता नहीं,डोलता नहीं,चलता नहीं,वस्ती में रहता नहीं,नगर में रहता

नहीं,झोपडा बनाता नहीं,संसार बनाता नहीं,आदि लाए हुए प्रारब्ध कर्मो के कारण दु:ख पाता,समझो इसप्रकार दु:ख भोगकर मन जीत भी लिया तो परमात्मा के भजन बिना ऐसे सभी दु:ख कर्म भोगने से उसका होनकाळ कैसे छुटेगा?जब तक उसका मुल मन मरता नहीं और सभी संचित कर्म नष्ट होते नहीं तब तक(करनेवाले)सभी होनकाळ के मुख में पड्कर प्रलय में ही जाएँगे ।।४।।

४१३

वे जन जीता तां कूं मारी

वे जन जीता तां कूं मारी ।। ओर हट दिन च्यारी रे लो ।। टेर ।।

जिस जन ने,(संत ने)मन को मारा है और मन को जीता है। दूसरे तो ये मन को जीतने का हट करते है,वो चार दिन का इनका हट है,जादा इनका हट चलता नहीं।।टेर।

काया जीत चडया जन ऊँचा ।। त्रगुटी आसण किया रे ।।

ध्यान समाध लगी ज्याँ जिनके ।। वाँ मन जीतर लिया रे लो ।। १ ।।

उन्हीं संतो ने मन को जीता है,जो काया(शरीर को)जीत कर,ब्रम्हाण्ड में चढ गये है और उन्होंने,त्रिगुटी में जाकर आसन किया है। उनका ध्यान लगकर,समाधी लग गयी है। उन्होंने ही,अपने मन को जीत लिया है। ।। १ ।।

जंत्र मंत्र अेक न सीखे ।। साजे नाय सरो धारे ।।

केवळ राम रटे अे राती ।। सो जीता मन जोधारे लो ।। २ ।।

जिन्होंने मन को जीत लिया है,वे यंत्र और मंत्र एक भी सीखते नहीं। स्वरोदय की,साधना भी करते नहीं और वे रात-दिन,सिर्फ एक कैवल्य राम नाम का,रटन करते है। उन्होंने, इस मन जैसे योद्धा को जीता है। ।। २ ।।

सुख दु:ख दोनो झूट्य जाणे ।। आनदेव नही माने रे ।।

साचा सांम ब्रम्ह हे केवळ ।। दूजा हट बखाणे रे लो ।। ३ ।।

जिन्होंने मन को जीत लिया है,वे सुख और दु:ख,इन दोनो को ही झूठा समझते है और किसी भी दूसरे,अन्यदेव को मानते नही है। सत्य स्वामी,तो कैवल्य ब्रम्ह है और उसके बिना,दूसरे सभी हठ है,ऐसा लोग भी कहते है । ।। ३ ।।

सुरत निरत मन ऊँचा चाड़या ।। आद जाग घर आया रे ।।

वां मन जाय बंधाणो सेजाँ ।। ड़ोल न सक्के भाया रे लो ।। ४ ।।

उन्होंने अपनी सुरत और निरत तथा मन को उपर, गगन में चढा दिया है। वे आदी घर ले गये,वहाँ जाकर,यह मन सहज ही बांधा है। वहाँ उपर जाक र बांधा गया मन,इधर-उधर हिल सकता नहीं। त्रिगुटी के आगे गया मन,त्रिगुटी में बांधे जाने से,अपने आप मारा जाता है।)।।४।।

देहे बोहार सो देख ना भूलो ।। हरजी आप बणाया रे ।।

के सुखराम मन बिध जीतण ।। सुणो इसी बिध भाया रे लो ।। ५ ।।

संतों के शरीर व्यवहार से,कोई भूलो मत,कि,यह बुरी चाल का है,ऐसा जानकर,भूलो मत। ये संतों के स्वभाव अच्छे या बुरे,स्वयं रामजी ने ही किया है,तो मन को जितने की,यह विधि है,वह सुन लो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।। ५ ।।

४२४

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

या पारख बिन भ्रम न तुटे

या पारख बिन भ्रम न तुटे ।। दुजी करे सो झुटी रेलो ।। टेर ।।

इस सतस्वरुप आनंदपद के ज्ञान परिक्षा के आधार के पारख बिना मन जीता तथा मारा यह भ्रम छुटता नहीं। दुसरी परिक्षा याने त्रिगुणी माया के आधार से मन जीता तथा मारा यह परिक्षा करते,वह परीक्षा झुठी है। ।।टेर।।

मन जीते का अंग बताऊँ ।। सुणो जक्त संत सारा रे ।।

आठ पोहोर मुख राम रटत हे ।। वाँ जन मन कूं मार्‍या रेलो ।। १ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,जो मन आदि से हंस के साथ है जिसके कारण हंस अनादि काल से होनकाल में पुनरुपी जन्मं तथा पुनरुपी मरणं में खप रहा है तथा काल के अगणित महादु:ख भोग रहा है ऐसे मन को जीतनेवाले का अंग याने लक्षण बताता हुँ ।ये अंग जगत के सभी नर–नारी,ज्ञानी,ध्यानी,संत,सिध्द आदि सभी सुनो,

आदि से दो पद है

१ सतस्वरुप का पद

२ होणकाल पारब्रम्ह में एक इच्छा त्रिगुणी माया का पद और दुजा जीवब्रम्ह पद है। जीवब्रम्ह के साथ मन है और मन के हुकुम से त्रिगुणी माया में रचमच रहनेवाले ५ विकारी आत्मा है ।

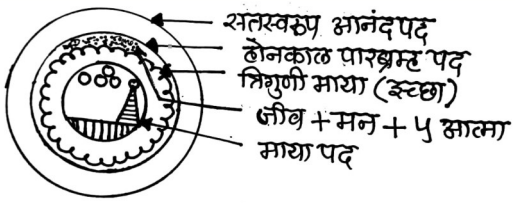

*हंस मन के वश है ◎मन
मतलब हंस का मन जिंदा है।

*(त्रिगुणी माया का संत)
आठो प्रहर याने चोबीस घंटा मुख से त्रिगुणी माया याने रजोगुण ब्रम्हा,सतोगुण विष्णु, तमोगुण महादेव इनको जपते रहता है याने वासना में लिपते रहता है ।

*हंस ने मन को जीता है
मतलब हंसने मन को मारा है ।

*वह संत आठो प्रहर याने चोबीस घंटा मुख से राम रटता याने विज्ञान वैराग्य को रटता है ।

खाँवत पीवत बोलत चालत ।। धंदे माँय पुकारे रे लो ।।
फोगट बात मंढी कूं त्यागे ।। सो जन मन कूं मारे रे लो ।। २ ।।

*खाते,पिते,बोलते,चलते तथा धंदे में त्रिगुणी माया को याने विकारी माया तथा अवतारों को पुकारता तथा मढी में जाकर त्रिगुणी माया के विकारी बातों में रस लेता।

*खाते,पिते,बोलते,चलते तथा धंदे में सतशब्द को पुकारता । झुठी माया के, बातों में तथा साँई छोड्के अन्य बातें जहाँ चलती ऐसे मढ्यिों को त्यागता मतलब इस संत ने मन को मारा हैं।

देहे बोहार गिरे मे बेठा ।। प्रेम करक लिव भारी रे ।।
दोनु होट चले बहु रसना ।। वां जन ममता मारी रे लो ।। ३ ।।

*देह का प्रारब्ध से लाया हुआ संसारी व्यवहार त्यागकर बन में जाता और त्रिगुणी माया के जप,तप में तन का और मन का हट करके त्रिगुणी माया से भारी लीव लगाता। दोनो होठ और रसना ममता में भारी चलाता याने दोनो होठ और रसना मेरा घर,मेरा राज,मेरा धंदा,मेरी पत्नी,मेरे पुत्र आदि मायावी वस्तु के मेरे पण के लगाव में बहुत चलाता।

*ग्रहस्थी बनके के देह का संसारी व्यवहार पूर्ण करता याने कर्मो के लेने- देने के बदले पूर्ण करता सतस्वरुप साँई से अकबक प्रेम करता और भारी लीव लगाता। दोनो होठ और रसना साँई के नाम जप में भारी चलाता तथा मेरासाँई,मेरा सतस्वरुप,मेरा परमात्मा ,मेरा सतगुरु इसप्रकार होठ और रसना सतस्वरुप के मेरेपण के लगाव में चलाता । इसतरह माया की ममता मारता।

जोत्यो बेल जुँवाड़े लागो ।। सुध गेल संभावे रे ।।
मूरख कहे चरे क्युँ चारो ।। जे ये नगरां जावे रेलो ।। ४ ।।

जिस संत ने मन मारा,ममता मारी,ऐसे संत के बारे मे मुरख लोग कहते है की इसने मन और ममता मारा है,तो रोटी क्यों खाता?धंदा क्यो करता?संसार क्यों करता?इस पर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,गाडी को बैल जुता है,नगर के सही रास्ते से गाडी को जुता हुआ बैल चल रहा है और उस बैल ने जरासा भी रास्ता न छोड्ते चलते चलते रास्ते में आनेवाले चारे को खाया तो मुरख लोग कहते है की बैल चारा क्यों चर रहा है?अरे मुरख,बैल ने चलते-चलते चारा चरा तो क्या उसने चलना छोड दिया? या कही बगल में दुसरी तरफ चला गया?या कंधे का बोझ निचे डाल दिया?जिस रास्ते में चारा था वही खाया तो क्या गलत किया। इसप्रकार संत जिसने मन मारा,ममता मारी ऐसे संत घर में रहकर साँई का भजन करते और भजन करते करते ग्रहस्थी क्रिया भी

करते,शरीर का खाना,पिना करते तो क्या संत ने साँई के नगर जाने का रस्ता छोड दिया? परंतु मुरख लोग जैसे बैल ने नगर जाते रास्ते में चारा क्यों खाया? ऐसा कहते इसप्रकार संत ने संसार क्यों किया? धंदा क्यों किया ?ऐसा कहते। ।। ४ ।।

जीतां बिना भजे नही कोई ।। पल पल बीसर जावे रे ।।
क्हे सुखराम इण मन की पारख ।। रटणा से गम पावे रे लो ।। ५ ।।

इस प्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है,कि मन को जीते बगैर सतस्वरुप राम का भजन कोई नहीं करता और ना किसी से होता है अगर एखाद कोई स्मरण भी करेगा तो पल पल में स्मरण करना भुल जाएगा। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ,इस मन जीतने की तथा मरणे की परीक्षा इस रामनाम के रटना से समझ में आती । जो रामनाम रटते नहीं त्रिगुणी माया रटते उनको मन कैसे त्रिगुटी में मरता यह समझता नही। जो रामनाम रटता उसे रामनाम रटने के पहले यह मन जीव पर कैसे हावी था और जीव को वश में रखकर त्रिगुणी माया के तथा ५ वासना के विकारो में रखता था तब जीव को त्रिगुणी माया कैसे सच्ची और पूर्ण लगती थी तथा ५ सुख यही पुर्ण और सच्चे लगते परंतु जब मन मरा और सतस्वरुप प्रगट हुआ तब सच्ची लगनेवाली त्रिगुणी माया झुठी लगती तथा ५ आत्मा के ५ सुख झुठे विकारी तथा भ्रम दिखते ।

१०२

।। पदराग बसन्त ।।

धिन धिन हो धिन राम नाम

धिन धिन हो धिन राम नाम ।। तासे अखंड अर्ध पर सेज धाम ।। टेर ।।

धन्य है,धन्य है इस रामनाम को धन्य है। इस रामनाम के रटने से पुरे घट में अखंड्ति अर्धनाम प्रगट हुवा है,उस अर्धनाम के धाम में मैं वास करता हुँ। रामजी प्रगट होने से पहले मेरे घट में विषय वासना का धाम था,मैं ऐसे जहरीले धाम में निरंतर रहा परंतु रामजी ने विषय वासना को भस्म कर रामनाम का धाम बना दिया इसलिए रामनाम को बार बार धन्य है,धन्य है। ।।टेर।।

प्रथम धिन सत्त संग होय ।। ज्याँ गुरूदेव मिलिया मोय ।।
भाँज भाग सो भरम जाण ।। निरभे ग्यान दिया उर आण ।। १ ।।

प्रथम धन्य सतसंगत को है, उस सत संगत के कृपा से मुझे गुरुदेव मिले है। गुरुदेव के कृपासे मेरे सभी भ्रम टुटकर भाग गए है। मेरे सतगुरु ने मेरे में काल के परे के निर्भय देश का ज्ञान प्रगट कर दिया। ।।१।।

पूरब जनम हमारो धिन ।। सुखरत सुभ किया इण मन ।।
ताँ की बिध अब मिली आय ।। राम धुन लागी उर माँय ।। २ ।।

मेरे पुर्व जन्म में मेरे मन ने रामजी के देश के कुछ अच्छे कर्म किए है इसकारण घट में अर्धनाम याने ररंकार प्रगट करने की विधि मुझे मिली है और इस विधि से मेरे हृदय में

आधे नाम की धुन लग गई है। ।।२।।

धिन धिन भाग हमारो जान ।। ताँके मित रामसा हुवा आन ।।
दु:ख सुख भरम मिटाया दोय ।। सुरग नरक साँसो नहिं कोय ।। ३ ।।

मेरा भाग्य धन्य है,इस कारण मेरे रामजी मेरे मित्र बन गए। मेरे मित्र रामजी ने मेरे सभी होनकाल के दोनो दु:ख-सुख और त्रिगुणी माया को सत्य समझकर उसमें तृप्त सुख खोजने का भारी भ्रम मिटा दिया है। अब मुझे स्वर्ग के सुख और नरक के दु:ख इन दोनो की फिकीर नहीं रही रामजी ने मुझे स्वर्ग के सुख नरक के दु:ख के परे के दु:ख रहीत अखंड्ति महासुखों के देश में भेज दिया है । ।।३।।

धिन धिन मन हमारो होय ।। जिन हर भगत संभाई जोय ।।
आठ पोहोर रटयो निज नाँव ।। के सुखराम सरे सब काम ।। ४ ।।

मेरा मन धन्य है,धन्य है, इसने विषय वासना के सुख त्यागकर रामजी की भक्ति धारण की है। इस मेरे मन ने आठ प्रहर चोबीसो घंटा निजनाम धारोधार रटा है जिससे मेरे काल से छुटने के सभी कार्य पुर्ण हो गए है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है। ।।४।।

१०५

।। पदराग भेरू (प्रभाती) ।।

धिन धिन सो नर नारी जुग मे

धिन धिन सो नर नारी जुग मे ।। धिन धिन सो नर नारी ।।
साहेब काज झुरे निस वासर ।। कुबुध्द प्रित सो टारी ।। टेर ।।

जो स्त्री-पुरुष साहेब प्राप्त करने के लिए रात-दिन झुरते और जिस त्रिगुणी माया के याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के भक्ति से साहेब प्राप्त करना हो सकता ऐसे कुबुध्दी से प्रिती करना टालते वे धन्य है,धन्य है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।टेर।।

भक्त करण को लग्यो ऊमावो ।। ओ मन चडीयो आड़े ।।
राम राम क्हैतां दिन बिते ।। मुख मे जीभ न बाड़े ।। १ ।।

जिस नर-नारी को साहेब की भक्ति करने में उल्हास आता और जो नर-नारी हट पर चढकर अपने मन को ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति इस त्रिगुणी माया के भक्ति से प्रिती नहीं होने देते वे धन्य है,धन्य है। जिस नर-नारी की जीभ निमीषमात्र भी मुख में राम-राम बोलने में बंद नहीं रहती और जिस नर-नारी के दिन राम-राम कहते बितते वे धन्य है,धन्य है। ।।१।।

गुरू द्रसण कूं जां दिन चाले ।। पाँव गुंघरीयाँ बांदा ।।
द्रसण किया अणंद ब्हो ऊपजे ।। जाणे द्रब कोई लादा ।। २ ।।

मेरे सतगुरु मुझे साहेब प्रगट करा देंगे इस समझ से जब वे सतगुरु के दर्शन को निकलने का विचार करते उस दिन उनके पैरो में घुंघर बांधे जैसा होता मतलब पैर जगह पर

नहीं टिकते ऐसे उत्सुक हो जाते और जाकर गुरु के दर्शन लेते ही जैसे किसी दरिद्री मनुष्य को भारी धन प्राप्त होने पर आनन्द होता इससे भी भारी वे आनंदित होते। ।।२।।

मिलियाँ साध हँसे रग रग रे ।। खिण फुले खिण रोवे ।।
आसा सकळ तजी कुटलाई ।। बाट साहेब की जोवे ।। ३ ।।

सतगुरु एवं साधु मिलने से जिस नर–नारी की रग रग याने नाडी–नाडी आनंदित होती वे धन्य है,धन्य है। जो नर–नारी साहेब प्राप्त करा देनेवाले सतगुरु मिलने के आनंद में क्षण में ही हँसते तो किसी क्षण में ही रोते वे नरनारी धन्य है,धन्य है। जो नर–नारी त्रिगुणी माया के याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के सुखोंकी आशा त्यागते वे धन्य है,धन्य है। जो नर–नारी त्रिगुणी माया के याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति के सुख प्राप्त करने की कुटलाया याने काल कपट कर्म त्यागते वे धन्य है,धन्य है। जो नर–नारी रात–दिन सतगुरु साहेब की अपने घर आने की राह देखते वे धन्य है,धन्य है । ।।३।।

तन क्षिणा मन रहे ऊन मुना ।। बोले सबदसुं प्यारा ।।
के सुखराम तके जन जुग मे ।। ऊतर गया भवपारा ।। ४ ।।

जिस नर–नारी का शरीर त्रिगुणी माया के कर्म कांड करने में थका–थका रहता है एवम् मन उदास रहता है वे धन्य है,धन्य है। जिस नर–नारी को सतगुरु,केवली साधु संत और जगत के नर–नारी प्रिय लगते है वे धन्य है,धन्य है। जो नर–नारी सतगुरु,केवली साधु संत,तथा जगत के नर–नारी से मिठे बोलते है वे धन्य है,धन्य है ऐसे नर–नारी भवसागर से पार उतर गए है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

१०६

।। पदराग जोग धनाश्री ।।

धिन सोई हे धिन सोई
धिन सोई हे धिन सोई हे ।। ज्याँ सत्त संगत पाई रे ।।
नर नारी को कारण नाही ।। ज्याँहा उर अेसी आई रे लो ।। टेर ।।

जिसे सत–संगती मिली है वे धन्य है,वे धन्य है। जिसके हृदय में हरी प्राप्त करने की चाहना लगी है,वे सभी नर–नारी धन्य है। इसमें नर–नारी का कोई कारण नहीं है। ।।टेर।।

ग्रेह में रहे साच नर बोले ।। भजन रात दिन होई रे ।।
आतम चीन संता कूं माने ।। तां सम ओर न कोई रे लो ।।१।।

ग्रहस्थ जीवन में रहकर सदा सत्य बोलते है और रात–दिन हरी का भजन करते है,आत्मा में परमात्मा जाना ऐसे संतोंको मानते है उनके समान संसार में ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति अवतार आदि कोई नहीं है। ।।१।।

तन सो जगत मन बैरागी ।। करे सकळ रेहे न्यारो रे ।।
अंतर मांही अखंड लिव लागी ।। सोई हरि को प्यारो रे लो ।।२।।

तन से जगत में रहते है परंतु मन जगत से उदास रहता है,संसार सभी करते है परंतु

संसार से न्यारे रहते और उनकी हरी से अखंड लीव लगी है ऐसे संत हरी को प्यारे है। ।।२।।

नारी पुरूष से जोडे. दोनुं ।। हर की भगत संभावे रे ।।
तो सुण तिरता बार न कोई ।। जे अेसी उर आवे रे लो ।।३।।

पती–पत्नी जोडे से हरी भक्ति करते है ऐसा जिस पती–पत्नी के हृदय में रहता उनको भवसागर तिरने में देर नहीं लगती। ।।३।।

ग्रह का त्याग कहा घर बन हे ।। फेर फार नहीं कोई रे ।।
के सुखराम साची लिव लागी ।। ताहि मुगत नर होई रे लो ।।४।।

ग्रहस्थी हो या त्यागी हो,घर में रहो या बन में रहो इसमे कोई अंतर नहीं है। जिस मनुष्य की अस्सल लीव हरी से लगी है उसकी वही सतस्वरुप मुक्ति हो जाती है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले। ।।४।।

१०७

।। पदराग काफी ।।

धिंन धिंन सो नर जाणी ये हो
धिंन धिंन सो नर जाणी ये हो ।।
ज्यांरे हो ज्यांरे आठ पोहोर लिव ध्यान ।। धिंन धिंन सो नर जाणी ये हो ।।टेर।।

जिनकी आठो प्रहर चोबीसों घंटा रामनाम से लीव लगी रहती,ध्यान लगा रहता है वे मनुष्य धन्य है,धन्य है। ।।टेर।।

नांव रटे नर बोत सपीड़ा ।। राम मिलण बोहो प्यास ।।
तन धन बिसऱ्या कामना हो ।। मोख मिलण की आस ।।१।।

रामजी मिलने की प्यास लगी है और उस प्यास से पिडीत होकर रामजी का रटन करता है और रामनाम रटने में शरीर की सुध नहीं रहती,धन की सुध नहीं रहती,संसार की जरुरत सभी भूल जाता और सिर्फ मोक्ष मिलने की आशा रहती वह धन्य है। ।।१।।

खिण रोवे खिण हँसत हे हो ।। युं मन लेऱ्याँ खाय ।।
साध संगत गुरूदेव बिना हो ।। पलक रहयो नही जाय ।।२।।

वह पल में रोता है और पल में हँसता है इसतरह उसके मन में हँसन की और रोने की लहरे आती है। वह साधु के संगत सिवा,गुरुदेव के संगत सिवा,एक पल भी नहीं रह पाता,वह धन्य है,धन्य है। ।।२।।

जिण जन जलम भलाई धाऱ्यो ।। लगी हे ब्रम्ह सूं डोर ।।
अेक न: केवळ ध्यान हे हो ।। चित्त रहयो निज ठोड ।।३।।

जिस संतोंकी सतस्वरुप ब्रम्ह से डोर लगी ऐसे संतोंका मनुष्य जन्म लेना सफल है। ये संत सिर्फ एक निकेवल ब्रम्ह याने जिस में मन,पाँच आत्मा और रजोगुण,तमोगुण,सतोगुण ऐसी कोई भी माया नहीं है उसका ध्यान करते है और उनका चित सदैव निजधाम में है

ऐसे संत का जन्म धन्य है,धन्य है । ।।३।।

जक्त चाव सब छाड़ दिया हो ।। राम कोड नित होय ।।
के सुखराम मुक्त का ग्रामी ।। ता मे फेर न कोय ।।४।।

उन्होंने संसार के सभी चाव छोड दिए और उन्हें नित्य रामनाम रटने का कोड आता है। आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ऐसे संत सतस्वरुप मुक्ति ग्राम के वासी है इसमें कोई फरक नहीं है। ।।४।।

३१२

।। पदराग बिहगडो ।।

साधो भाई धिन जिण चोळा किया
ताग ताग सब ही हम सोध्या ।। मर्म ईसी का लिया ।।टेर।।

साधो भाई, जिसने मेरा शरीर रुपी चोला बनाया,उसे मेरा धन्यवाद है। इस शरीर रुपी चोले का तारतार सभी खोजकर इस का मर्म जाना। ।।टेर।।

बस्तर सात अेकठा किया ।। नव जागा सु कापी ।।
तागो अेक भऱ्यो सब मांही ।। अेसी गुदड़ी आपी ।।१।।

यह शरीर बनाने में सात वस्त्र इकठ्ठा लगे। उसे दो कान,दो आँखें,दो नाक,एक मुख, लिंग,गुदा ऐसे नऊ जगह काटना पडा। इस शरीर रुपी गोदडी में साँसरुपी एक धागा जडा। ।।१।।

अेक साठ तीन से टूकड़ा ।। जोड़ जोड़ के कीवी ।।
नवसे तार बोहोतर फूलड़ी ।। भाँत भाँत कर दीवी ।।२।।

यह शरीर रुपी गोदडी तीन सौ साठ तुकडे जोड-जोड्कर बनाई। इसमें तरह-तरह की नौ सो नाड्याँ रुपी तार और बहत्तर फुलडीया जोडी। ।।२।।

इण कंथा को भेद न पायो ।। सो नर मुढ़ गिवारा ।।
के सुखराम घणी मै क्या कहूँ ।। बेग्यो काळी धारा ।।३।।

इस शरीर रुपी कथा का हरी पाने का भेद जो जानता नहीं वे नर मुर्ख है,गवार है। मैं ऐसे मुर्खो के बारे में बहुत क्या बताऊ?ये काली धार में बह गए याने अगणित दु:ख में पड गए ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ।।।३।।